ॐ

श्री सतनाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश

अप्रैल मई 2002 वर्ष 22 अंक 6-7

चैत्र मेला अंक




मुंबई
ACHARYA SATGURU SWAMI TEOONRAM JI MAHARAJ
Under The Guidance Of
SWAMI BHAGAT PRAKASH JI MAHARAJ
(The Present Gadisar Of Prem Prakash Mandal)
Annual Function
गोंदिया
कोरबा
धमतरी
आगरा
कामठी
ग्वालियर
प्रेम प्रकाश आश्रम

ॐ
श्री सत्नाम साक्षी

श्री अमरापुर स्थान
एम.आई.रोड, जयपुर
17–मार्च–2002

"चैत्र मेला" संदेश

आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा स्थापित चैत्र मेला 81 वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा है। गुरुवर का अवतार–सत्य का प्रकाश संसार में फैलाने के लिए ही हुआ था। मानव मन सहज ही सांसारिक आकर्षण की तरफ खिंच जाता है– मन की दिशा को संसार से मोड़कर उस प्रभु परमात्मा की तरफ लगाने का पावन कार्य उन महापुरुषों के द्वारा किया जाता है। अपनी जीवन लीलाओं के द्वारा महापुरुष हमें सत्य की ओर चलने को प्रेरित करते हैं। मानव जीवन का लक्ष्य है परमशान्ति को प्राप्त करना। गुरु महाराज जी ने अपनी अमृतवाणी में लिखा है।

जल्दी जा मन आतम घर में–परम शान्ति को पाइये रे।
सुन्न महल में सीधा चलहो–इधर उधर मत धाइये रे।।

परम शान्ति की प्राप्ति तभी सम्भव है। जब सांसारिक विषयों से मन हट जाए, और मन को हटाने का उपाय है निरन्तर विचार शक्ति को जगाए रखना। विचार के दीपक द्वारा मिथ्या माया के अन्धकार को दूर किया जा सकता है, ओर शुभ विचारों का उदय होता है सन्त महापुरुषों के संग से–जो अपनी वाणी के द्वारा निरन्तर अज्ञान भ्रम का निवारण करते हैं। इसी पावन उद्देश्य को लेकर सन्त समागम और मेलों का आयोजन किया जाता है। आचार्य सत्गुरु टेऊंराम जी महाराज द्वारा स्थापित चैत्र मेला भी हमारे लिये यही संदेश लाया है कि पूर्ण श्रद्धा विश्वास के साथ सत्गुरु की वाणी का श्रवण करके–एवं उसे आचरण में लाकर अपना जीवन सफल करें।

भगत प्रकाश
(श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष)
प्रेम प्रकाश मंडल ट्रस्ट
अमरापुर स्थान, जयपुर

श्री अमरापुर धाम दर्शन

पावन श्री अमरापुर स्थान का दिग्दर्शन

श्री अमरापुर स्थान, जिसका मात्र नाम सुनकर ही **"प्रेम प्रकाश पन्थ"** के भक्तजन अपने आप को कृतार्थ मानते हैं। इस पुण्य स्थली का ऐसा माहात्मय है कि एक बार दर्शन पाकर प्रेमीजन धन्य–धन्य बन जाते हैं । प्रेम प्रकाशियों का यह परम धाम (विशाल आश्रम) अपनी अनोखी, अलौकिक, रमणीय, मनोहारी, अविस्मरणीय और नैसर्गिक वातावरण से प्रेमियों को अपनी ओर खींच लेता है, यह पवित्र श्री दरबार गंगा मैया'' के समान ही है। जिसके दर्शन मात्र से ही अनेक जन्मों के पाप मिट जाते हैं। इस महान पवित्रतम स्थल पर न जाने कितने महान व योगी सन्तों महापुरुषों ने पग धरे हैं जिस प्रकार हमारे ''प्रेम प्रकाश ग्रन्थ'' में लिखा गया है। **''से सब स्थल तीर्थ जानो सन्त जहां पग धरते हैं''** देखा जाय तो श्री दरबार तीर्थों का समागम है। जिसमें डुबकी लगाकर श्रद्धालु अपने आप को कृतार्थ्य करते हैं।

इस पवित्रतम स्थली की बनावट इतनी आकर्षक है कि प्रेमियों के अतिरिक्त राहगीर भी विस्मय में पड़ जाते हैं और इसको देखने के लिये लालायित हो उठते हैं। मुख्य प्रवेशद्वार की बनावट बड़ी ही कलात्मक है। मुख्यद्वार पर **"श्री अमरापुर स्थान"** हस्तकला से बड़े–बड़े अक्षरों में आकर्षक ढंग से लिखा गया है। मुख्य प्रवेशद्वार से भीतर प्रवेश करते ही चारों और के नजारे देखकर नेत्रों को आनन्दानुभूति की प्राप्ति होती है। दोनों ओर दो मंजिला निर्मित भवन जिसमें दाहिनी और ''बुक स्टाल'' **श्री अमरापुर सत्साहित्य भण्डार** जिसमें प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के समस्त सन्तों–महात्माओं की तस्वीरें व उनकी प्रवचनों की कैसेट्स तथा यात्रियों की सुविधार्थ भूमिगत विशेष कमरे बने हुए हैं। वहीं बांयी ओर भूमिगत जूताघर है। जिसमें आगन्तुकों को जूते चप्पल रखने की सुविधा प्रदान की जाती है।

अन्दर प्रवेश करते ही दोनों ओर रंग–बिरंगे पुष्पों और वृक्षों से सुसज्जित आकर्षक मन भावन बगीचे बने हुए हैं नन्हें–नन्हें पौधे, उन पर खिले पुष्प देखकर मन मयूर खिल उठता है। मुख्य प्रवेशद्वार के बाद आता है, **''गुरुमुख द्वार''** जो कि प्रेम प्रकाश मण्डल के एक महान ''अवधूत सन्त स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज़'' की स्मृति में बना हुआ है। श्वेत संगमरमर की सीढ़ियां चढ़कर ज्यों ही हम सत्संग परिसर में पहुंचते हैं तो सत्संग परिसर का दृश्य मन को बरबस अपनी और आकर्षित करता है। श्री दरबार के तीनों और बनी छोटी छोटी मुंडेर , जिसके सहारे ऊंचे–ऊंचे हरे–हरे **अशोक वृक्ष** बड़े ही मनमोहक लगते हैं। सत्संग परिसर के दक्षिण पूर्व में बना **"ध्वजा स्तम्भ"** एवं उत्तर पूर्व में **"यज्ञ कुण्ड"** तथा उसके ऊपर **वृहद् अशोक का वृक्ष**। इसी परिसर के प्रमुख भाग हैं। इस यज्ञशाला में सन्तों द्वारा विशेष त्यौहारों व उत्सव पर हवन का आयोजन किया जाता है।

सत्संग परिसर का ढका हुआ भाग, जिसमें प्रतिदिन सत्संग की ज्ञानगंगा बहती है। **इस हाल की विशाल बाहरी दीवार पर ''श्री अमरापुर स्थान'' का नाम व श्री दरबार की महिमा के दोहे जो अभी हाल ही में नवीनतम ढंग में लिखे गये हैं। दोहे पढ़कर मन आनन्दमय हो जाता है।**

आइये अब **सत्संग हाल** में प्रवेश करें, जिसको कि दो माह से चल रहे पेन्टिंग कार्य से नवीन ढंग से सजाया गया है। सत्संग हाल के ठीक मध्य में 40 फुट लम्बा व 10 फुट चौड़ा सत्संग मंच बना हुआ है जिसके केन्द्र में ''सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज'' की विराजित आशीर्वाद देती हुई तस्वीर उनकी सजीव उपस्थिति का आभास कराती है। जिसके दर्शन करने से हृदय गद्–गद् हो उठता है। सत्संग परिसर के चारों और नवीनतम व कलात्मक ढंग से पेन्ट व दोनों तरफ ''आचार्य श्री जी की'' जीवन लीला चित्र प्रदर्शनी बनाई गयी है जिनके नीचे उनके जीवन से संबंधित दोहों का उल्लेख किया गया है इस चित्रमय प्रदर्शनी को देखकर हमें आचार्य सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज की सम्पूर्ण जीवन लीला का दर्शन होता है तथा दूसरी और दीवार पर हमारे प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्त महात्माओं की चित्रित मूर्तियाँ

बनाई गयी हैं। सत्संग मंच के दोनों कोनों में श्री मंदिर में प्रवेश के लिए बनी सीढ़ियों के ठीक ऊपर दाहिनी और आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज व बाई ओर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के विशाल तैलीय चित्र लगाए गये हैं जिसको देखकर नयन तो भर जाते हैं पर मन दर्शन करने के लिए बार–बार खिंचा चला आता है।

आइये। अब हम सीढ़ियों को चढ़कर परम आनन्द की प्राप्ति करने के लिये **"श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर"** में चलते हैं जहां प्रेम प्रकाश पन्थ के इष्टदेव भगवान लक्ष्मीनारायण की आकर्षक मूर्तियां बड़ी ही सुन्दर परिवेश व नाना प्रकार के आभूषणों से अलंकृत देख मन इस प्रकार खिंचा चला जाता है कि पलक झपकाने का भी भान नहीं रहता है। लक्ष्मीनारायण के ही मन्दिर में रखे **मंगलमय नन्हें लड्डू गोपाल** के दर्शनों से मन को परमानन्द की प्राप्ति होती है।

अब श्री लक्ष्मीनारायण के दर्शन करने के पश्चात् **"श्री मन्दिर"** में चलते हैं। इसके परिसर में चारों तरफ नवीन ढंग से सजावट व पेन्ट का कार्य किया गया है। श्री मंदिर को नवीन रूप प्रदान किया गया है। अहा ! कितना सुन्दर आनन्दमय व सुखमय दृश्य है कि इसका वर्णन इस लेखनी के बाहर की बात है। अति सुन्दर, उच्च शीशम का द्वार, चांदी की हल्की कारीगरी व कांच के रंग बिरंगे टुकड़ों की आकर्षक शोभा देखकर दर्शक व प्रेमियों की प्रसन्नता का कोई पैमाना ही नहीं है। श्री मंदिर के केन्द्र में सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के श्री विग्रह एवं समीप ही सद्गुरु श्री स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के चित्र शोभायमान किये गये हैं, जो कि सद्गुरु महाराज के सजीव रूप में सदैव हमारे साथ होने का आभास कराते हैं। श्री विग्रहों के समीप आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की पोशाक को कांच के कक्षनुमा शोकेस में सजाया गया है। श्री मंदिर के चारों ओर की परिक्रमा मनुष्य के चौरासी चक्कर की परिक्रमा को मिटा देती है। इस परिक्रमा की दीवारों पर लिखे गये, प्रेम, भक्ति और गुरु महिमा की भावना से उल्लेखित दोहे जिनका कि इस अंक में उल्लेख किया गया है बड़े ही ज्ञानवर्धक हैं। इनके साथ–साथ लिखे "ॐ" व "सत्नाम साक्षी" का महान मंत्र प्रेमियों को अखण्ड शांति देता है।

इस तृप्ति कारक दृश्य को देखकर मन को पूर्ण आनन्द की प्राप्ति हो जाती है इस तृप्ति कारक दर्शन की प्राप्ति करके कदम बढ़ाते ही प्रवेश करते हैं। एक लघु कक्ष में, जहां हमारे आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित **"श्री प्रेमप्रकाश ग्रन्थ"** रखा गया है। इस ग्रन्थ की अमृत वाणी श्री दरबार के कण–कण में व्याप्त है। जिसको चात्रक के समान प्रेमी पढ़कर आनंदित होते हैं। श्री दरबार के इस महत्वपूर्ण कक्ष से निकलकर अब हम **"समाधि स्थल"** की ओर चलते हैं।

यह वह स्थान है, जहां प्रेमी गुरु महाराज जी का नाम सुमरण करते हैं इस शांत स्थल पर एकाग्रचित बैठते ही मन गुरु महाराज जी की और ध्यानस्थ हो जाता है। गर्भगृह के भीतर बनी समाधि की सीढ़ियों से नीचे उतरते ही सामने दीवार पर अभी हाल ही में आचार्य ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की तस्वीर बनाई गयी है, जो कि तपोनिष्ठ मुद्रा में दर्शाई गई है। जिनके मुख मण्डल पर तेज पुंज चमक रहा है ऐसा विराट स्वरूप देखकर जिज्ञासुओं का मस्तक आचार्य श्री के श्री चरणों में श्रद्धा से झुक जाता है।

"श्री समाधि स्थल" के केन्द्र में श्वेत संगमरमर के दो आसन बने हुए हैं जिसमें एक और आचार्य टेऊँराम जी व दूसरी तरफ स्वामी सर्वानन्द जी की समाधि व उनके ऊपर महाराज श्री की सजीवनुमा तस्वीर के साक्षात् पावन दर्शन होते हैं। उनके श्री मुख देखते नेत्र थकते ही नहीं हैं। दांयी ओर काष्ठ के सिंहासन पर गुरु महाराज जी की मूर्ति विराजित की गयी है। चारों तरफ नवीन रंगों का समावेश व परिक्रमा स्थल पर लिखे गये पद–दोहे छन्दों को पढ़कर मन ज्ञानोदय हो उठता है।

समाधि स्थल के सामने बनी गैलरी में प्रेमीगण ध्यानस्थ होकर नाम जपते दिखाई देते हैं। सीढ़ियों के द्वारा ऊपर की ओर आने पर सत्संग परिसर के चारों ओर की परिक्रमा करते हैं। गुरुमुख द्वार के दक्षिण पूर्व में स्थित अमरापुरेश्वर महादेव मन्दिर में चलते हैं इस छोटे से मन्दिर में श्वेत मार्बल का बना हुआ शिवजी का सम्पूर्ण परिवार सुन्दर परिवेश धारण

किये हुए है। इस मन्दिर के ऊपर छोटा सा गुम्बद है। जहां प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ध्वजा चढ़ाकर पूजा अर्चना की जाती है। इसी के पास बनी अवधूत स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज का समाधि स्थल जिसको कि विभिन्न रंगों से सजाकर नवीन रूप दिया गया है। आचार्य श्री के शिष्य स्वामी गुरुमुखदास जी के जीवन चरित्र की जानकारी भी इसी अंक में प्रकाशित की गयी है।

तत्पश्चात अब हम पहुंचते हैं भण्डार कक्ष में। इस भण्डार कक्ष में सन्तों व प्रेमियों के लिए भोजन बनाया जाता है। इसी के अन्दर बने वृहद् हाल मे विशाल भण्डारे के अवसर पर प्रेमियों को भोजन प्रसादी खिलाया जाता है।

यहां से निकलते ही दिखाई देते हैं सामने सन्तों के कक्ष, जहां पर श्री दरबार के सन्तगण विश्राम करते हैं। यहीं पास बनी हुई है **"स्वामी सर्वानन्द डिस्पेन्सरी"** जहां गुरु महाराज की शक्ति व प्रेमियों की अखण्ड भावना से प्रेमीगण अपनी बीमारियों का इलाज करवाकर अपने तन मन को स्वस्थ करते हैं, यहां पर निःशुल्क दवाईयां दी जाती हैं।

हॉस्पिटल के निकट बनी सीढ़ियां चढ़कर **प्रदर्शनी स्थल** पहुंचते हैं इस प्रदर्शनी स्थल का दरवाजा खुलते ही सूर्य भगवान के उदय व अस्त होने का नयनाभिराम नजारा देखने को मिलता है अति सुन्दर दृश्यों से भरपूर एक कमरा जिसका दरवाजा पारदर्शी कांच से बना हुआ है इस प्रदर्शनी में सद्‌गुरु सर्वानन्द जी महाराज का वरद हस्त से आशीर्वाद देता हुआ चित्र ठीक सामने रखा हुआ है। कमरे के चारों ओर महाराज श्री के विभिन्न अवसर पर लिये गये चित्रों को संजोकर आकर्षक ढंग से सजाया गया हैं। द्वार के सामने कांच के शोकेस में स्वामी जी की पोशाक व उनके बर्तनों को रखा गया है।

कमरे के दाहिनी ओर स्वामी हरिदासराम जी महाराज की प्रदर्शनी बनाई गयी है। जिसका उद्‌घाटन स्वामी जी के जन्म दिवस पर हुआ था चारों तरफ मन मोहक सजावट की गयी है। द्वार के ठीक सामने स्वामी जी का विशाल चित्र रखा हुआ है, जिसमें स्वामी जी वरद हस्त से आशीर्वाद दे रहे हैं। दोनों तरफ स्वामी जी की तस्वीरें लगाई गयी हैं, जिनमें सिन्ध यात्रा, विदेश यात्रा, टण्डा आदम और अन्ति यात्रा के दर्शन होते हैं। वहीं द्वार के दाहिनी अ शोकेस में गुरु महाराज की पोशाक, चरण पादुक व उनके द्वारा उपयोग में लाये गये बर्तनों को र गया है यह छोटा सा कमरा गुरु महाराज की सम्पू यादों को ताजा कर देता है और रोम–रोम महाराज श्री की उपस्थिति का आभास कराता है

कमरे से बाहर निकलकर बनी गैलरी में ख होकर ज्योंही नीचे की ओर दृष्टि डालते हैं, तो दरबार का दर्शन बड़ा ही मनोहर लगता है, रोम–रोम में नई उमंग का संचार होता है।

सीढ़ियों से नीचे उतरकर नीचे बना है **श्री क** जिसमें हमारे प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष स्वामी भग प्रकाश जी महाराज निवास करते हैं। वहीं पास बने हुए हैं भक्तों के लिए विश्राम कक्ष जहां दूर–दूर से श्री दरबार के दर्शन की इच्छा लेकर अ प्रेमी निवास करते हैं। चारों ओर शांतिमय वातावर प्रेमियों के रोम–रोम में गुरु प्रेम का प्रवाह बढ़ाता है

सत्संग मंच के ठीक पृष्ठ भाग में बनी हुई है **"गौशाला"** जो श्री दरबार का मुख्य भाग है। जिसक दर्शन करने के पश्चात् प्रेमीगण अपने आप कृतार्थ समझते हैं। सद्‌गुरु महाराज श्री का "गौमात से मधुर प्रेम था उन्होंने टण्डा आदम में भी गौशा बनाई और श्री अमरापुर स्थान में भी गौशाला बन इस गौशाला में 20–25 गायों के लिये पर्याप्त स्थ है। इस दरबार में संतों का पावन सानिध्य व प्र पाकर गौमाता भी अपने को धन्य महसूस करती है

यहां से निकलकर जैसे ही हम आगे बढ़ते तो गुरुमुख द्वार पर आकर इस परिक्रमा की समा होती है। श्री दरबार के प्रत्येक कोने का दर्शन हम यहां आकर ही कर सकते हैं, जिन भाग्यशा प्रेमियों ने श्री दरबार के दर्शन कर लिये मानों उस जीवित ही अमरापुरी के दर्शन कर लिये।

यह था पावन श्री अमरापुर का दिग्दर्शन, आपने लेखनी के माध्यम से पढ़ा। अब आप ही सो कि कैसा होगा यह पवित्रधाम ? जीवन में एक ब हम सबको इस पवित्रतम तीर्थ स्थल का दर्शन क मानव जीवन को कृतार्थ करना चाहिये

प्रस्तुति–गुड़िया प्रेम प्रकाशी, जय

श्री अमरापुर धाम दर्शन

पावन श्री अमरापुर स्थान के सत्संग हाल में बनाई गयी नवीनतम "आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज" की जीवन लीला चित्र प्रदर्शनी पर लिखे दोहे

1. माता कृष्णा हृदय में, फूली नाहिं समाय।
सन्त जनों की प्रेम से, सेवा रही कमाय।।

2. भगवत कृपा धार के, दर्शन दीना आज।
बाल रूप बन मात के, पूरण कीने काज।।

3. निर्गुण पूरण पारब्रह्म, जो सत् चित सुखधाम।
कृष्णा के घर प्रकटिया, बालक टेऊँराम।।

4. माता कृष्णा प्रातः उठ, चक्की रही चलाय।
बालक को निज ज्ञान की, लोरी रही सुनाय।।

5. खिल्लू को जब ले चली, प्रबल सिन्धु की धार।
सत्गुरु टेऊँराम ने, तत्क्षणं लिया उबार।।

6. भजन सार संसार में, जब उपजा मन ज्ञान।
शहर छोड़ एकान्त में, करने लगे हरि ध्यान।।

7. जितनी विद्या जगत की, सो सब अविद्या रूप।
तांको तज इक ओम का, स्मरण करो अनूप।।

8. पीछे अपना काम कर, पहले कर उपकार।
सबका घट भरवाय कर, तब लीनी जलधार।।

9. भगवत की कृपा भई, सन्त पधारे धाम।
भये प्रफुल्लित हृदय में, सद्गुरु टेऊँराम।।

10. जेते सुख संसार के, तेते सेवा माहिं।
भोजन पावें सन्त जन, आप जिमावें ताहिं।।

11. मजदूरी करके लिया, इकतारे का साज।
भूल न किससे मांगिये, कैसा भी हो काज।।

12. सच्चा सौदा नाम का, झूठा सब व्यवहार।
नाम जपें, चलता रहे, जग का कारोबार।।

13. सत्गुरु के युग चरण की, सेवा कर निष्काम।
स्वामी आसूराम से, मंत्र लिया सुख धाम।।

14. इक बुढ़िया के द्वार पर, पड़यो देख मृत श्वान।
छाड़यो जा दरियाह में, सबमें लख भगवान।

15. मैं निकस्यो अपने घर सों इक द्वार खड़ी बुढ़िया महतारी।
जो मृत श्वान के काज हरीजन, सोंविनिती करके थकहारी।।
मांगत दाम हरीजन जो वह, दे नहिं पाय गरीब विचारी।
मेंसो कही हम काढ़ लियो, हरिनाम महातम जानके भारी।।

16. "खण्डू" जल से घिर गया, विकल भये नर–नार।
वरूण देव से विनय कर, सत्गुरु लियो उबार।।

17. तजकर घर परिवार को, बैठे जा शमशान।
हरि भक्ति में लीन हो, याद किया भगवान।।

18. निज कर कुटी बनायली, कीनी तपस्या घोर।
भान नहीं कुछ समय का, सांझ भयी या भोर।।

19. माया आई मोहने, धार मोहिनी रूप।
जान लिया गुरुदेव ने, महिमा अमित अनूप।।

20. लक्ष्मी नारायण खड़े, धर अंग्रेजी भेष।
किसने आग लगाई है, कहौ हमें दरवेश।।

21. कूप नीर जब चुक गया, भक्तनि करि पुकार।
सद्गुरु छींटा मार तब, कीनी जय जयकार।।

22 अब तो अमरापुर बनी, अद्भुत अलीशान।
जांका दर्शन करत ही, आनन्द होय महान।।

प्रस्तुति :
राजा प्रेमप्रकाशी
अमरापुर स्थान, जयपुर

पावन श्री अमरापुर धाम दर्शन

श्री मन्दिर में लिखे दोहे व पद

प्रेम

प्रेम ही के वश प्रभु नाई बने सैन हित,
प्रेम वश केवट से चरण धुलाया है।
प्रेम ही के वश प्रभु बेर खाये भीलिनी के,
प्रेम वश हरि शाक विदुर का खाया है।
प्रेम ही के वश प्रभु पार्थ का रथ हांका,
प्रेम वश प्रभु यज्ञ झूठ को उठाया है।
प्रेम ही वश लीने तन्दुल सुदामा जी के,
कह टेऊँ प्रेम इक प्रभु मन भाया है।

संतोष और निर्लोभता

कह टेऊँ संसार में, सब वस्तु घट जात।
एकहिं तृष्णा ना घटे, बढ़त रहत दिन रात।।

तृष्णा काली, नागनी, दुःख विष से भरपूर।
कह टेऊँ सुख चहत तो, हो तुम तांसे दूर।।

संत सुखी संतोष कर, जाको तृष्णा नाहिं।
मूंढ दुःखी रोवत सदा, तृष्णा घर मन मांहि।।

लोभ पाप का बाप है, लोभ कपट की खान।
लोभी नर नर के पड़े, कह टेऊँ सत् जान।।

जैसे पंछी जाल में, चोग देख फंस जात।
त्यों लोभी जग जाल फंस, कह टेऊँ दुःख पात।।

मन

जो मन जीते आपना, जग को जीते सोय।
टेऊँ मन जीते बिना, हरि दर्शन ना होय।।

मन ही से सुख होत है, मन ही से दुःख होय।
कह टेऊँ इस मरम को, विरला जाने कोय।।

जग में बैरी तीन बड़, मन माया पुन वाम।
जो जीते इन तीन को, कह टेऊँ सो राम।।
रण में जीते शत्रु को, शूरा सों नाहिं जान।
कह टेऊँ मन जीते जो, शूरा ताहिं पछान।।

तब लग मन चंचल रहे, जब लग होय न ज्ञान।
ज्ञान भये मन शान्ति हो, टेऊँ कहत सुजान।।

यथार्थ वचन

मानुष चोला तुझे मिला, जिस काम के हेत।
कहे टेऊँ सो ना किया, अजहुँ भया अचेत।।
मंगते से मत मांगिये, मंगता खुद पेनार।
टेऊँ हरि से मांग जो, सबको देवन हार।।

बालापन खेलन गया, यौवन भोगे भोग।
कह टेऊँ बूढ़े भये, लागा तृष्णा रोग।।

कनक कामिनी देह से, त्याग दिया जिहँ राग।
कह टेऊँ दुई लोक सो, सुख पावन बड़ भाग।।

सब्र शुक्र जिस जन करा, त्याग तन अभिमान।
कहे टेऊँ तिस पुरुष पर, प्रसन्न हो भगवान।।

'यथार्थ वचन

तीन कर्म नित ही करो, भजन दान स्नान।
कह टेऊँ इन तीन से, कलि में हो कल्याण।।

स्वार्थ के सब मित्र हैं, देखा जग को छान।
बिन स्वार्थ भगवन्त इक, कह टेऊँ सत मान।।

पुरुषार्थ अरू प्रारब्ध, जब दोनों कर मेल।
कहे टेऊँ तब चलत है, सर्व जगत का खेल।।

निर्मल मन चित करन हित, है इक हरि का ध्यान।
कह टेऊँ हरि ध्यान कर, पाओ शान्ति महान।।

कह टेऊँ हरि मिलन के, मार्ग बहु जग जान।
सब मार्ग में एक ही, सत्संग है प्रधान।।

मिश्रित उपदेश

जगत भ्रम का जाल यह, ताहिं न आप फसाय।
कह टेऊँ जग आस तज, गोविन्द के गुन गाय।।

तिल भर दौलत ना चले, दर तक चाले नार।
मित्र चले शमशान तक, धर्म चले सुर द्वार।।
पांच तत्व का पिंजरा, तां में पंछी प्रान।
कह टेऊँ जब उड़ चला, तब तन सूना जान।।

कह टेऊँ वे जगत में, जीव अज्ञानी जान।
दो दिन जीवन हेत जे, जोड़त बहु सामान।।
ऊँचे महल बनाए के, बैठे निज धर मान।
टेऊँ मूढ़ न जानता, मेरा घर शमशान।।

मिश्रित उपदेश

रे मन तेरा जगत में, दो दिन का है वास।
कह टेऊँ यो समझ के, तज भोगों की आस।।

अब का कारज अब करो, कल पर राखो नांहि।
नाहिं भरोसा श्वास का, कह टेऊँ जग माहिं।।

रैन गयी पुन दिन गया, दिवस गया भयी रात।
कह टेऊँ मन चेत ले, आयु ऐसे जात।।

कहे टेऊँ थिर ना रहा, किस का यह तन थूल।
तू कहता मेरा रहे, यह है तेरी भूल।।
काम न आवत मित्र तब, जब मारे जम चोट।
कह टेऊँ तां प्रीत तज, लेह ईश की ओट।।

माया

माया ही से पाप होत, माया ही से पुण्य होत।
पाप पुण्य केरा बीज, माया ही को मानिये।।
माया हीं से दुःख होत माया ही से सुख होत।
दुःख सुख केरा खेत माया ही को जानिये।।
माया ही से नर्क होत माया ही से स्वर्ग होत।
नर्क स्वर्ग केरा हेतु माया ही वरदानिये।।
कह टेऊँ माया माहिं, गुन अवगुन आहिं।
तांते माया का ममत मन में न आनिये।।

गुरु महिमा

गुरु बिन प्रेम न ऊपजे गुरु बिन जगे न भाग।
कह टेऊँ तांते सदा गुरु चरनों में लाग।।

कह टेऊँ संसार में, गुरु जैसा नहीं मीत।
और मित्र सब स्वार्थी बिन स्वार्थ गुरु नीत।।

टेऊँ दीपक ज्ञान बिन, शोभत धाम न देह।
गुरु बिन ज्ञान न होत है, तातें गुरु कर लेह।।

सूनी चन्द बिन रैन जिमि सूना दिन बिन भान।
कह टेऊँ त्यों मनुष्य को, गुरु बिन सूना जान।।

सत्गुरु तीरथ रूप है, वचन सु निर्मल नीर।
टेऊँ तामें नहाय के पावन करो शरीर।।

सन्त महिमा

निष्ठा आत्म ज्ञान में, रहत सदा निर्मान।
कह टेऊँ निर्द्वन्द जो, साधु सो पहिचान।।

रहनी बिन तन भेष धर, संत न कहिए सोय।
कहे टेऊँ सो सन्त है, रहनी रहता जोय।।

तीर्थ दो प्रकार का, चल पुन अचल पछान।
गंगा आदिक अचल, चल है सन्त सुजान।।
मोह नहीं ममता नही, नहीं जांको अभिमान।
कहे टेऊँ तां संत पर, वांरू तन मन प्रान।।

चाह चिन्त करते नहीं, मोह ममता जिंह नाहिं।
कह टेऊँ इस जगत में, साधु कहिऐ ताहिं।।

राम नाम महिमा

कहे टेऊँ नित कीजिऐ, राम नाम से प्रेम।
राम नाम के सम नहीं, जप तप संयम नेम।।

राम नाम उल्टा जपे, बाल्मीक भये पार।
कहे टेऊँ तुम ना तरहिं, सुल्टा राम उचार।।

कर माला मन ध्यान, धर रसना से रट राम।
कहे टेऊँ इस जाप से, पाओ हरि का धाम।।

कलियुग में हरि नाम है, सब साधन का सार।
कहे टेऊँ तिहं सुमर के, पाओ मोक्ष द्वार।।

मुख से सुमरन ना करे, कर से देय न दान।
कहे टेऊँ तिस मनुष्य का, जीवन वृथा जान।।

भक्ति महिमा

भक्ति करनी कठिन है, करता है कोई सूर।
टेऊँ सिर साटे बिना, यह मंजिल है दूर।।
भक्ति करनी जगत में, है सूरों का काम।
कहे टेऊँ हरि भक्ति का, कायर ले न नाम।।

भक्ति करनी कठिन है, सुगम न तांको जान।
टेऊँ भक्ति सो करे, त्यागे जो अभिमान।।
मन चंचल के शान्ति हित, एक हरि का ध्यान।
टेऊँ हरि के ध्यान बिन, मिले न शान्ति सुजान।।
मात पिता गौ देश पुन, देव गुरु भगवान।
षष्ठ भक्ति से होत है, कहे टेऊँ कल्याण।।

प्रेम महिमा

प्रेम जगत में बहुत हैं, प्रेम बिना नहीं कोय।
टेऊँ सांचा प्रेम सो, जो लगा हरि से होय।।
धन, विद्या, गुण, रूप, बल, भावत न भगवान।
टेऊँ हरि को भावहिं, प्रेम एक प्रधान।।
करमा कुबजा भीलनी, हाथी अरू हनुमान।
टेऊँ केवल प्रेम कर, पाया हरि भगवान।।
कहे टेऊँ हरि प्रेम की, महिमा है अधिकाय।
प्रेम भरे परवाह में, ज्ञान ध्यान बह जाय।।

प्रेम तीन प्रकार का, कहे टेऊँ जग जान।
देखा देखी, स्वार्थी, तीजा मन का मान।।

सत्संग महिमा

पार करत भव सिन्धु से, सत्संग परम जहाज।
कहे टेऊँ तामें चढ़ो, छोड़ जगत की लाज।।

सत्संग से सत्गुरु मिले, सत्गुरु से निज ज्ञान।
कहे टेऊँ निज ज्ञान से, मिलहैं पद निर्बान।।
टेऊँ जेते कर्म शुभ, लिखे वेद के माहिं।
साधु संग गुरु नाम सम, और कर्म को नाहिं।।

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुन सत्संग।
कहे टेऊँ इनके किये, होवे भव दुख भंग।।

श्रद्धा से सत्संग कर, सेवा करो निष्काम।
कहे टेऊँ तेरे सभी, होवे पूरण काम।।

ज्ञान महिमा

सन्तन हरि को खोज के, पाया हृदय माहिं।
मूरख बाहर ढूंढते, टेऊँ मिलत न ताहिं।।
मूरख के मन में बसे, काम क्रोध मद मोह।
कहे टेऊँ शुद्ध सन्त जन, जामें दंभ न द्रोह।।

टेऊँ पारस और को, करत न आप समान।
साधू दीपक भृंग ज्यो, निज सम करते आन।।
बादल के सम संत है, वचन जान बरसात।
कहे टेऊँ नित पान कर, चात्रक के सम तात।।

सब स्वारथ के मीत है, बिन स्वार्थ है सन्त।
कहे टेऊँ तिंह सेव से, राजी हो भगवंत।।

कर्म महिमा

धर्म कर्म ना छोड़िये, जब तक तन में श्वांस।
कहे टेऊँ करते रहो, धारे मन विश्वास।।

बिना कामना करत जो, शुभ कर्मो को नीत।
कहे टेऊँ तिस मनुष्य का, होवे निर्मल चीत।।

शुभ कर्मो को छोड़ जो, करत पाप के काम।
कहे टेऊँ सो मनुष्य दुःख, पावत है यह धाम।।

टेऊँ जितना सुख चहो, उतना कर हरि जाप।
दुःख भी जितना सह सको, उतना करिये पाप।।

प्रारब्ध है प्रबल अति, कहे टेऊँ सुन तात।
जहाँ जीव का भोग है, तहां खैंच ले जात।।

प्रस्तुति :

गुड़िया प्रेमप्रकाशी, जयपुर

विशेष सूचना

सभी सदस्य प्रेमियों व सम्माननीय प्रतिनिधियों को सूचित किया जाता है कि प्रस्तुत चैत्र मेला अंक अप्रैल–मई का संयुक्तांक है, अब आगामी अंक 15 जून को प्रकाशित होकर सदस्य प्रेमियों को भेजा जायेगा। —व्यवस्थापक

श्री अमरापुर धाम दर्शन

समाधि स्थल पर लिखे दोहे व छन्द

छन्द

रे मन सबका मोह त्यागो,
मोह महा विकराला है।
मोह कुटुम्ब से कीना जिसने,
मोह तिसी को घाला है।
अर्जुन जैसे वीर बहादुर,
फंसे मोह के जाला है।
कह टेऊँ जो मोह त्यागें,
सो जन रहत सुखाला है।

छन्द

रे मन अजहूं तू न समझत,
बहुत तुझे समझाया है।
सत् वस्तू ना तुमको भावत,
झूठ पिछे ललचाया है।
तीन काल में नहिं जो तेरा
तिस पर दाव जमाया है।
कह टेऊँ इस मूर्खता से,
तुम ने बहु दुःख पाया है।

छन्द

बाजीगर की बाज़ी जैसे,
झूठा यह जग जानो रे।
जैसे स्वपना मिथ्या तैसे,
झूठा जग पहिचानो रे।
तीन काल में ब्रह्म सत्य है,
यह निश्चय उर आनो रे।
कहे टेऊँ तज झूठे जग को,
साचा ब्रह्म पहचानो रे।

मिश्रित उपदेश

माया दो प्रकार की, जड़ चेतन धन नार।
विरला को इनसे बचे, टेऊँ इस संसार।।

जैसे पय में घृत है, तैसे हरि उर मांहि।
कहे टेऊँ सतगुरु बिना, देख सके को नांहि।।

जिस सुख को तुम चाहते, सो सुख है तुम मांहि।
कहे टेऊँ गुरुदेव बिन, ताहि मिले कब नांहि।।

मिश्रित उपदेश

गुरु चरनामृत पान कर, सीत प्रसादी खाय।
कह टेऊँ गुरु सेव से, मन वांछत फल पाय।।

गुरु मंतर जो जपत नाहिं, करत गुरु का त्याग।
कह टेऊँ सो नर्क में, रहत सदा मद भाग।।

गुरु बिन वश ना होत है, काम क्रोध अहंकार
तांते गुरु की शरन ले, कह टेऊँ निर्धा...।।

छन्द

जो इस जग की आशा करता,
सो बहुते दुःख पाता है।
आशा बन्धन से वो बन्धा,
जोनि चुरासी जाता है।
जन्म मरण के महाचक्र से,
कोय न ताहिं छुड़ाता है।
कहता टेऊँ बार–बार सो,
रो–रो के पछता ... है।

छन्द

भगवत् की यह अद्भुत लीला,
देख हर्ष मुझ आया है।
पांच तत्वों से तन यह रचकर,
तामें आप छिपाया है।
योगिन योगकला से तिसका,
प्रत्यक्ष दर्शन पाया है।
कहता टेऊँ दर्शन करके,
आवागमन मिटाया है।

छन्द

नाम रूप है मिथ्या माया,
यह थिर ना कब होती है।
बढ़ना घटना आदत इसकी,
चलती है कब सोती है।
अद्भुत खेल खेलके जग में,
हंसती है, कब रोती है।
कह टेऊँ यह मोहनी माया,
पारब्रह्म की ज्योति है।

गुरु प्रार्थना

एक और गुरुदेव हो, दूजे सब संसार।
टेऊँ गुरु को अधिक लख, नित नित करो जुहार।
सत्गुरु हरि की देह है, यामें संशय नाहिं।
कह टेऊँ गुरु ध्यान धर, हरि देखो तिहं मांहि।।

गुरु चरनों की धूल का, तिलक देत जे धीर।
कह टेऊँ कट कर्म वे, पावत ज्ञान गम्भीर।।

छन्द

सुन्दर देह को देख न फूलो,
इक दिन ये जर जायेगी।
माया का अभिमान तजो यह,
यह अन्त काम नहिं आयेगी।
नारी से नहिं नेह लगावो,
नाता नाहिं निभायेगी।
कह टेऊँ इस जग की प्रीति,
जन्म जन्म भ्रमायेगी।

छन्द

यह मन पाप पुण्य को जानत,
पर न पुण्य को करता है।
कर्म जिसी का फल दुखदायी,
ध्यान उसी को धरता है।
सन्त गुरु का वचन न मानत,
स्वेच्छा से चरता है।
कहता टेऊँ इसी कारण से,
जन्म मरण में पड़ता है

गुरु प्रार्थना

गुरु को नित प्रणाम कर, पाद पद्य शिर नाय
कह टेऊँ त्रिलोक में, काल न तुम को खाय

भव सागर के बीच में, डूबत हूं गुरुदेव
कह टेऊँ मोहि काढ़ ले, दे निज आतम भेव

गुरु की कर तुम वंदना, श्रद्धा मन में धार
कह टेऊँ इस जगत में, पाय पदार्थ चार

गुरु प्रार्थना

मैं पापी तुम पावना, पाप करो परहार
कह टेऊँ गुरु सुमति दे, करलो भव से पार

पड़कर ममता कूप में, बहुत सहे संताप
कह टेऊँ करूणा करो, सत्गुरु काढ़ो आप

हाथ जोड़ सत्गुरु कहूं, सुन मेरी अर्दास
कह टेऊँ कृपा करे, काट कर्म की फांस

मिश्रित उपदेश

गुरु की वाणी वेद सम, पढ़े सुने जन जोय
कह टेऊँ संशय हरे, सुख को पावत सोय

सत्गुरु की कृपा बिना, सरे न कोई काज
तांते गुरु की शरण ले, कह टेऊँ तज लाज

सत्गुरु की कृपा बिना, भव सिंधु तरे न कोय
कह टेऊँ गुरु शरण ले, जे भव तरना होय

मिश्रित उपदेश

जैसे नौका काठ की, करत सिंधु से पार
कह टेऊँ ज्ञानी गुरु, त्यों तारत संसार

तन के गुरु बहुत मिलत है, कह टेऊँ जग माहि
दुर्लभ है मन का गुरु, मिलत भाग बिन नाहि

सत्गुरु अपने दास का, लेखा देत निवार
कह टेऊँ परलोक तिस, कोय न पूछन हार

छन्द

जो नर भोगों में कर प्रीती,
भव में खावत गोता है।
मानुष जनम अमोलक हीरा,
कौड़ी बदले खोता है।
खान पान में दिवस गंवाये,
सारी राती सोता है।
वृद्ध भये भी संत न सेवत,
प्यारा लागत पोता है।
पुण्य साबुन को छोड़ पाप के,
कोयलों से पट धोता है।
कहता टेऊँ ऐसा मूरख,
जन्म जन्म में रोता है।

छन्द

ना हरि मिलता बहुत पढ़ने से,
ना हरि मिले पढ़ाने से।
ना हरि मिलता कथा करन से,
ना हरि मिलता गाने से।
ना हरि मिलता जप तप कीने,
ना बहु देव ध्याने से।
ना हरि मिलता व्रत नेम से,
ना तीर्थों पर जाने से।
ना हरि मिलता यज्ञ होम से,
ना बहुत देते दाने से।
कहता टेऊँ मिलता हरि है,
केवल प्रेम बढ़ाने से।

छन्द

हे मन मेरा मान वचन यह,
छोड़ मलिन अभिमाना रे।
तन मन धन से कर्म करो शुभ,
भूल न पाप कमाना रे।
सब जीवों को नित सुख देवो
किसी का दिल न दुखाना रे।
कह टेऊँ सब माहिं व्यापक,
देखो इक भगवाना रे।

प्रस्तुति : गुड़िया प्रेमप्रकाशी,
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

स्वामी हरिदास–सन्देश

51 ''जहाँ जन्म है, वहाँ मृत्यु! जहाँ उत्पत्ति है, वहाँ विनाश। मृत्यु का पीछा उसी दिन से हमारे साथ शुरू हो जाता है, जब से हमारा जन्म है। मृत्यु भी कई प्रकार की होती है। **रोग भी मृत्यु है, गरीबी भी मृत्यु है, और अभिमान भी मृत्यु है।''**

52 ''मरता तो शरीर है आत्मा नहीं। ''**वह तो स्वयं ज्ञान स्वरूप है।**''

53 ''अहंकार को समाप्त किये बिना **शान्ति** संभव नहीं।''

54 ''गुरु से क्या पूछा जाता है ? **मंत्र या राय।** यदि राय तो बात बिगड़ जायेगी, अशान्ति आ जायेगी। गुरु से राय तब ही पूछनी चाहिए जब कोई शिष्य अर्जुन की तरह मुसीबत में फंस जाये, जब वह अपने निर्णय लेने में सर्वथा असमर्थ हो जाये तब ही राय लेनी चाहिए वरना नहीं।''

55 ''**आत्म–ज्ञान, ब्रह्म–ज्ञान, ईश्वर–दर्शन,** कोई साधारण बात नहीं, इनका बहुत बड़ा महत्व है, और बड़ा ही रहस्य युक्त है। इस रहस्य को जानने के लिये शास्त्रों का गहन अध्ययन करना पड़ेगा। ''श्री रामायण'' ''श्री महाभारत'' यह कोई साधारण ग्रन्थ नहीं ऋषिकृत ग्रन्थ है। पढ़ना हमें कब पड़ेगा? जब हमें जाना हो आगे।''

–प्रस्तुति–प्रीतम प्रेमप्रकाशी, जयपुर

स्वामी सर्वानन्द अमृतवाणी–3
प्रवचन कैसेट

स्त्री उपदेश

प्रवचन शुभ स्थल
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सदगुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज

बोलो सनातन धर्म की जय..........

प्रथम वंदऊं गुरू पारब्रह्म...........

छन्द : जां ज्ञान वैराग विज्ञाना है, पुनि पतिव्रत धर्म प्रधाना है।
जितने जग नर नारी है वे, इसके सब अधिकारी हैं।।
कहे टेऊँ जो सुन वीचारे, पावहिं सो जन मोक्ष द्वारे।
मात गर्भ में फेर न आवे, अजर अमर घर माहिं समावे।।

सारे प्रेमियों, सत्संगियों, गुरूमुखों! आप पहले अपने शरीर इन्द्रियों को सावधान करें। आसन बांध के नेत्रों को, कानों को सावधान करके, अपने मन को सावधान करके हर एक जीव, हर इक मनुष्य, अपने मन को आप ही सुधारे। अपने मन को बार–बार समझावें, हे मेरे मन! आपको क्या चाहिये? जागृत–स्वप्न में भटक रहे हो। हे मेरे मन! अभी मुझे सुनाओ।

छन्द : हे मन अपना मतलब सारा, खोल के मुझसे कहिये रे।
एक पलक भी स्थित नाहीं, क्या अब तुमको चहिये रे।।
अगर आस है आनन्द की तो, जग की इच्छा दहिये रे।
कहे टेऊँ पद पाय सनातन, परम शांति को लहिये रे।।

हे मेरे मन! अपना मतलब, राज मेरे को खोलके सुनाओ। आपको चाहिये क्या? जो एक पलक भी स्थित नहीं हो। आपको क्या चाहियें? मेरे को सुनाओ तो इसी के लिये, मैं कुछ तलाश करें, उसके लिये कुछ खोज करें, परिश्रम करें जो आप शान्ति पावो, सर्व दुःखों की निवृत्ति, परमानंद की प्राप्ति आपको हो। अगर जो आनंद की इच्छा है, ब्रह्मानंद की इच्छा है तो संसार की इच्छा त्यागो। ये मूल है चार वेद, षट्शास्त्र, उपनिषद्, स्मृतियाँ जितने भी शास्त्र पुराण हैं, सिद्धान्त हैं– संसार की इच्छा त्यागो, फिर परम शांति पाओ। वो भी कैसे? जाओ, महात्मा सद्गुरू की शरण में। हे मेरे मन! जागो। हम दो बार पंक्ति कहें, अपने मन को पहले हम आ जगाएँ, फिर सत्शास्त्र महा जागृति के अंदर आएंगे। क्या कहो–

कहता टेऊँ करो सुजागी, भजन करे नित हो बड़भागी
पाओ निर्भय डेरा, श्री राम जपो मन मेरा।
येही जपन की वेला, श्री राम जपो मन मेरा।

हे मेरे मन्! "**कहता टेऊँ करो सुजागी**" सुजा हो जाओ, नेत्र खोलो, जैसे राजा शिखरध्वज चूड़ाल द्वारा सुजाग हुआ है। नेत्र खोलकर सद्गुरू क शरण में आये हैं, हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं, शंव करते हैं, हे भगवन्! हम संसार में कैसे आये हैं? क्य आये हैं! संसार के अंदर? मेरे मन करना क्या है? खाना–पीना, बाल–बच्चे, ये व्यवहार तो पशु–पक्ष सारे कर रहे हैं। मेरे को करना क्या है? खास, मुख मेरे को क्या करना है?

छन्दः मैं हूं कौन कहां से आया, किसने मुझे बनाया है
कौन देश में जाना है फिर, किसने खेल रचाया है
कौन जन्मता कौन सु मरता, कौन चुरासी पावत है
काल किसी को कहते जोई, तीन लोक को खावत है
जीव ईश मन ब्रह्म क्या है, जग का कौन अकारा है
मैं मूर्ख कुछ जानत नाहीं, ना कुछ विचारा है।

हे भगवन्। मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ कहाँ मुझको जाना है ? संसार किसने रचा है चौरासी में कौन जाता है ? जो वस्तु आती है, जात है, घटती है, बढ़ती है, वो नाश हो जायेगी। आत्मा, जीव जावे तो नाश हो जावेगा। ये तो नह जाता है। कौन जाता है ? चौरासी जन्म–मरण चक्कर में कौन आता है ? जीव क्या है ? जीव आप देखा है, कि महाराज सुना है, कि जिससे सुना उससे पूछो कि आपने देखा है, कि महाराज वो कहेंगे कि सुना है। जीव क्या है ? ईश्वर क्या है

वेदों के सार तत्व को जानने वाले कहते हैं कि जो नारी पति को ही ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, गुरु और तीर्थ आदि सब कुछ समझती है, पति की सेवा के सिवा कुछ नहीं जानती है। वह ब्रह्मण्ड को धारण करती है।

स्त्री को प्रातःकाल अपने पतिदेव के चरण स्पर्श करने चाहिये। जिससे उसे रिद्धि–सिद्धि की प्राप्ति होती है।

मन क्या है ? ब्रह्म क्या है ? जगत् ये संसार का आकार क्या है ? संसार का स्वरूप क्या है ?

"मैं मूर्ख कछु जानत नाहीं, नहिं कुछ मोहि विचारा है।" हम मूर्ख हैं, जानते नहीं हैं। हमारे को विवेक नहीं है। ये कथा का प्रसंग कल हो चुका है। आज के प्रसंग में योगवशिष्ठ निर्वाण प्रकरण में वाल्मीक कहता है, हे भारद्वाज। हे राजन्। वशिष्ठ महाराज कहते हैं, हे रामजी। सद्गुरु महाराज कहते हैं, हे जिज्ञासु, गुरुमुखों, मुमुक्षुओं। ऐसे कहते राजा के नेत्रों से जल आया। महात्मा उसी के तरफ देख के क्या कहने लगे–

दोहा: **इतना सुन गुरुदेव को, उत्तर दिया वीचार।**
चतुर वेद के तत्व को, कहन लगे निर्धार।।

ये है उत्तम जिज्ञासु की शंका। ये सुन के महात्मा ने विचार करके चार वेद, षट्शास्त्र, उपनिषद को निचोड़ के जो तत्व था, वो वर्णन करने लगे–

दोहा: **अक्रिय आतमदेव जो, सर्व रूप है आप।**
ऐसे निश्चय धार के, जपले सोऽहं जाप।।

छन्द: **आतम अखण्ड स्वयं प्रकाशी, घट घट तां उजियारा है।**
अजर अमर अविचल अविनाशी, साक्षी सिरजणहारा है।।
सत् चित आनन्द ब्रह्म व्यापक, नाम रूप आधारा है।
मन बुद्धि वाणी इन्द्रिय अगोचर, तीन गुणों से न्यारा है।।
अमल अलेपा अच्युत अनन्ता, अतुल अनादि अडोला है।
अपने आप में स्थित रहते, अगम अगाध अबोला है।।

आत्मा अक्रिय है, अविनाशी है, उसमें क्रिया है नहीं, नहीं अन्दर है, नहीं बाहर है, बाहर भी है अन्दर भी है। नहीं आता है नहीं जाता है, आता भी है, जाता भी है। अखण्ड है, स्वयं प्रकाशी है, दूसरे किसी ने उसको प्रकाश नहीं दिया है। अजर है, अमर है, अविनाशी है, साक्षी है, सर्व जीवों पर साक्षी, घट–घट में साक्षी है। साक्ष्य दे रहे हैं, मन, बुद्धि, इन्द्रिय, अगोचर उसी से इन्द्रियों की विषय नहीं है। तीन गुणों से न्यारा है , रजो, तमो, सतो, तीनों गुणों से परे है, पाँच कोश से परे है, अमर है, अलेपा है, अच्युत है, अनन्ता है। अनन्त रूप धरा है, तो भी नहीं धरा है। जैसे सोने का अनन्त भूषण है, पर उसी में सोना बदला नहीं है। अतुल है, जो तोला नहीं जाता है, अनादि है, सनातन है, अडोल है, अपने आप में स्थित है। अगम है, अगाध है, अबोल है, निर्वाण है, अनादि है, अगामी है।

दोहा: **ऐसे सुन गुरु ज्ञान को, आए राज द्वार।**
कहे टेऊँ एकान्त में, करन लगे वीचार।।
परन्तु आतम पद के अन्तर, रानी शीघ्र जाग रही।
राजा की भी सेव करे नित, वृत्ति विवेक से लाग रही।।

इतना सुनकर, ये वेदान्त का तत्व है, इसके अधिकारी थोड़े हैं। वेद भगवान के अन्दर चारों वेदों के अन्दर लाख श्लोक हैं, लाख, श्रुति कहो, श्लोक कहो। उसमें अस्सी हजार हैं, कर्म--काण्ड, सोलह हजार हैं, उपासना काण्ड, चार हजार हैं, आत्मज्ञान का, वेदान्त। कहाँ चार हजार, कहाँ अस्सी हजार। तो आत्मज्ञान का, वेदान्त के सुनने वाले अधिकारी थोड़े हैं। तो भी सत्संग में तीनों की वार्ता निकलती है क्योंकि उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ–तीनों जिज्ञासु सत्संग में आते हैं। कर्म, उपासना, ज्ञान–तीनों की वार्ता निकलती है। सो जितने भी प्रेमी बैठे हों, ये तत्व सुनाया। ऐसे सुनकर सद्गुरु देव का वचन, राजा–रानी दण्डवत प्रणाम कर अपनी राजधानी में आये। **"कहे टेऊँ एकान्त में करन लगे विचार"** एकान्त में बैठके विचार करने लगे कि गुरु ने क्या कहा था। ये श्रवण तभी फलीभूत होगा जब इसका मनन करेंगे। मनन का फल तभी मिलेगा, जब निदिध्यासन करेंगे। ये याद रखना, भुलाना नहीं। विचार करने लगे। परन्तु वशिष्ठ महाराज कहते हैं, हे रामजी ! **"परन्तु आत्म पद के अन्तर, रानी शीघ्र जाग रही।"** आत्मपद में, अविनाशी पद में रानी शीघ्र माना जल्दी जागी। उसकी बुद्धि तेज थी, वो जाग गयी।

स्त्री को अपने पति की, चाहे वह अपंग, लूला लंगड़ा, सूरदास, निर्धन–रोगी आदि कैसा भी हो जाये, तो भी अपने पति को परमेश्वर का रूप जानकर हर घड़ी, हर पल, पूर्ण श्रद्धा भावना से सेवा करनी चाहिए।

पति चाहे कैसा भी हो जाए, फिर भी जो नारी पति का सम्मान करती है, छल कपट छोड़कर श्रद्धा भाव से सेवा करती है, वह नारी सहज में ही परम पद को प्राप्त करती है।

"राजा की सेव करे नित, वृति विवेक से लाग रही" राजा की बड़ी सेवा करी, पर वृति विवेक के अन्दर लगी। राजा की सेवा इसीलिए करी कि राजा बड़ा प्रसन्न होवे। क्योंकि **स्त्री का धर्म है पतिदेव की सेवा करना। पतिदेव प्रसन्न हुआ तो सारे देवता प्रसन्न होंगे। ये स्त्री का धर्म है पतिदेव की सेवा करना पतिदेव की प्रसन्नता में रहना।** बुद्धि को तेज़ करना क्योंकि बाकी दो–चार दिन हैं तो कुछ नए–नए विषय चलेंगे। प्रेम से बोलो हरे राम। आज तो यही विषय चले। इसी विषय की भी जरूरत है, दुनिया के अन्दर देखने में आता है, **स्त्री का धर्म है पति की प्रसन्नता में रहे, पति के हाल सारूं (अनुसार) चले, पति से दुःख–सुख में शामिल हो जावे,** पति को छोड़े नहीं। सेवा करे। प्राचीन में किसने करी हैः–

भजनः **गयी सीता गहन बन में, धरे ज्यों भेष मुनियों का।**
तजे त्यों भोग दुनिया का, निभाना नारि को चाहिये।।
पति से प्रेम का नाता, निभाना नारि को चाहिये।
गुनी जन ग्रन्थ सब गाते, निभाना नारि को चाहिये।।

बुद्धि को तेज करना। सीता को दशरथ महाराज, कैकेयी ने वनवास नहीं दिया था। कैकेयी, दशरथ महाराज सीता को वनवास दिया था क्या ? नहीं। भगवान ने भी रोका कि मतं चलो। कहा–नहीं प्रभु। मैं चलूंगी। आपके सिवाय रह नहीं सकूंगी। जैसे शरीर प्राण के सिवाय नहीं रह सकेगा। तैसे में नहीं रह सकूंगी। जैसे श्री रामचन्द्र, लक्ष्मण मुनियों का वेष धारण करके जटा बांधी, तैसे सीता ने भी जटा बांधी। नंगे पैर, राजकुमारी नंगे पैर पत्थरों में चली, जंगलों में। ये है नाता निभाना। राजा जनक का स्वर्गपुरी के समान राज था। राजा जनक का स्वर्गपुरी के समान राज का त्याग किया, सीता ने। कितना वन में दुःख सहन किया। फल–फूल खा के जमीन पर घास पर सोयी, जमीन पर सोयी, मिट्टी में। क्या वन में सेजा थी क्या ? ये है स्त्री का धर्म।

"एकई धर्म एक व्रत नेमा, काय वचन मन पति पद प्रेमा" नारी का एक ही धर्म, एक ही व्रत और एक ही नियम है वह है शरीर, मन, कर्म, वचन से पति की सेवा पूजा करना।

पतिव्रता पूरण स्त्री सदैव पति की प्रसन्नता में, सेवा में रहती है। कैसा भी पति हो।

कवितः **लूला होवे पिंगला, मुहां बोल न सके।**
चक्की पीस खवावे खसम नूं, पर दूजा पुरुष न तके।।
जहिड़ी नजर गहर दी करके, तके पुरुष पराया।
ऐसी दुष्ट नीच व्यभिचारिणी, वृथा जनम गंवाया।।

पति लूला होवे, लंगड़ा होवे, सूरदास होवे, रोगी होवे, चक्की पीसकर पति को खिलाये। हरि नारायण करे। अपने धर्म को पाले। पतिव्रता धर्म में बड़ी ताकत है। प्रेम से बोलो हरे राम। पतिदेव की आज्ञा में जो नहीं है, कितनी ही पूजा करे, देवता से कुछ भी फल नहीं मिलेगा।

दोहाः **पीपल पूजे, तुलसी पूजे, पूजे ठाकुर द्वारे।**
जब लग पति न पूजे अपना, सीधी नर्क सिधारे।।

पतिदेव की पूजा करे। "पूजे ठाकुर द्वारे" जैसे **कर्मयोग, उपासना योग, ज्ञान योग है, तैसे पतिव्रता भी योग है। जैसे तपियों को, योगेश्वरों को, योगियों को ऋद्धि–सिद्धि प्राप्त होती है योग से, तैसे पतिव्रता स्त्री को ऋद्धि–सिद्धि प्राप्त होती है।** जिसकी वृत्ति, नृत्ति, सुरती पतिदेव से जुड़ी रहे, पूरण पतिव्रता। दृष्टान्त कथाऐं तो बहुत हैं लेकिन इतना वक्त नहीं, इशारे में थोड़े–थोड़े में कहेंगे। जब महाभारत की लड़ाई समाप्त हुई, भीमसेन ने सायंकाल को ऐलान किया कि सुबह को दुर्योधन का जो धड़ है, गदा से कूट के, मार के जंगल में छोड़ेंगे। जो गिद्ध आके खाऐंगे। प्रतिज्ञा पूरी करेंगे। जो, जब द्रोपदी को नग्न करा था दुर्योधन, तभी मैंने ये प्रतिज्ञा की थी, वो कल अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेंगे। ये ऐलान जो किया, लड़ाई समाप्त हुई, उसी समय दुर्योधन रोने लगा। रोके माता गान्धारी के पास आया। आके रोया, माताजी! ये हकीकत है, भीमसेन कहा है अभी मैं कल मरूंगा आपसे सलाह लेने आये हैं। अभी कोई मेरे बचने का

धरती पर जितने भी तीर्थ हैं, वे सब सती नारी के चरणों में रहते हैं, सब देवताओं, ऋषियों और मुनियों का जो तेज है वह सब पतिव्रता नारी में रहता है। पतिव्रता नारी के चरणों की धूलि से धरती पवित्र हो जाती है। पतिव्रता को प्रणाम करने से सब पाप नाश हो जाते हैं।

स्ता होवे तो मेरे को सुनाओ। बाकी मेरे को तो ोई रास्ता देखने में नहीं आता है, मैं कल मरूंगा। ीमसेन मारेगा। है कोई रास्ता ?

माता गान्धारी पांच मिनट चुप होके, कहने गी पुत्र ! एक रास्ता है आपके बचने का, दूसरा ोई दुनिया के अन्दर रास्ता नहीं है। कौन सा ाताजी ? कहा कि आप जाओ युधिष्ठिर महाराज के ास। उसे नमस्कार करके कहो कि मैं आपकी शरण ें हूँ। मैं आपकी शरण में आया हूँ, मेरी रक्षा करो, ीमसेन से बचाओ। दुर्योधन कहा–माताजी ये क्या? वो तो कल मारेंगे भीमसेन, आपकी इच्छा है आज ही मरें क्या ? वो दुश्मनों की छावनी में जाऐंगे, छोड़ेंगे? युधिष्ठिर छोड़ेंगे ? उसी समय बांध के मार देंगे। कहने लगी–नहीं पुत्र! वो धर्मराज है, अपने धर्म को कभी नहीं छोड़ेंगे, शीश चला जाऐगा, नहीं छोड़ेंगे। सर्वस्व चला जाएगा, नहीं छोड़ेंगे। वो धर्मपुत्र हैं। कि हाँ माता ? हाँ! विश्वास करो। कि हाँ माताजी।

नमस्कार करके माता गान्धारी को दुर्योधन चला। छुपके–छुपके आया छावनी में, आया तो युधिष्ठिर महाराज बैठा था। उसके चरणों में मस्तक नवा के कहा–हे प्रभु! मैं आपकी शरण में आया हूँ, मेरी भीमसेन से रक्षा करो। तभी युधिष्ठिर महाराज सिर को ऊपर करके कहने लगे, अच्छा! माता गान्धारी ने भेजा है क्या ? (समझ गया कि ये दुष्ट कैसे आता है) कि हाँ जी। कि अच्छा। ये माता ने आपको युक्ति सुनाई है। अच्छा कोई बड़ी बात नहीं। आप जो मेरी शरण में आये हो, तो अब ऐसे करो, नंगा होके माता गान्धारी के पास जाओ। उसको कहो कि पट्टी खोले। क्योंकि पट्टी बांधती थी गान्धारी क्योंकि धृतराष्ट्र सूरदास था ना, उसने भी पट्टी बांध दी कि मेरा पति नहीं देखता तो मैं कैसे देखूँ। पट्टी बांध दी कैसे ? सेवा के वक्त पट्टी खोल दे, सेवा करके फिर पट्टी बांध दे। प्रेम से बोलो हरे राम।

पीपल वृक्ष–तुलसी या भगवान की पूजा कितनी भी क्यों न करे, पर अपने पतिदेव की पूजा नहीं की तो वह स्त्री नरक में जाती है।

ऐसे करके, वो पट्टी खोल के आपकी तरफ देखेंगी, क्या कहें ऐसे हजारों भीमसेन भी आपको नहीं मार सकेंगे। अभी जाओ, आपकी जय हो। बडा खुश हुआ। छावनी से बाहर निकल के, कपड़ा सारा उतार फेंक दिया। नंगा ही नंगा चला माता गान्धारी के तरफ। इधर कृष्ण के कान पर ये बात पहुंच गयी। कहने लगे, हो! हो! हो! अरे ये दुष्ट जिसके कारण वीर, धर्मात्मा राजा मर गये, अरे दुष्ट तो मरा ही नहीं। युधिष्ठिर बड़ा खराब काम कर दिया। ये क्या कर दिया, ये जवाबदारी मेरे सिर पर थी। कृष्ण भगवान ने अठारह दिन नींद नहीं करी थी। ये जब अर्जुन मेरे को घोड़ों की डोरी हाथ में दी, सारी जवाबदारी मेरे ऊपर रख दी कि हे प्रभु–

भजनः अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है हार तुम्हारे हाथों में, है जीत तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में।।

अब क्या करें ? ये भागा। कृष्ण भगवान दौड़–दौड़ के रास्ते में आके मिला। कहने लगा कि आप दुर्योधन है क्या ? बोला कि आप कृष्ण हैं क्या? कि हाँ जी, अरे ये क्या, क्या करा ये पागल हो गया है, क्या, सुनाओ है क्या ? सारी हकीकत सुनाई जभी सुनाई तभी कृष्ण कहा, हो! हो! हो! आपकी मति मारी गयी, वो आपका दुश्मन आपने उसका विचार किया ? उसका विचार ये है कि शूरवीर को रणभूमि में जो शूरवीर मारता है, वो स्वर्गलोक में जाता है। ये युधिष्ठिर ने क्या विचार किया है कि ये माता के पास नंगा जावे तो ये बड़ा महापाप होगा। अब ये भीमसेन इसको मारेगा तो ये सीधा नर्क में जावे। ऐसे जो उसने युक्ति करी आपको नर्क में भेजता है। माता को नंगापन दिखाना, कोई बच्चा तो नहीं है, ये महापाप है।

कहने लगा अच्छा तो फिर क्या करें ? कि

तीर्थों में स्नान करने की इच्छा से, जो नारी तीर्थ यात्राएं करती हैं, परन्तु यदि वह नारी श्रद्धा से अपने पति के श्री चरणों को धोकर उस जल से स्नान करती है और उस जल को पीती है, सिर पर चढ़ाती है। तो निश्चय समझो उसने सब तीर्थ कर लिये।

अच्छा ऐसा करो दोनों बात हो जावे, आप कौपीन लंगोटी बांध के जाओ। सारा शरीर नंगा होवे, पांव भी नंगा, सिर नंगा, लंगोटी कौपीन बांध के जाओ तो युधिष्ठिर महाराज की बात भी सच्ची हो जायेगी, आपको पाप भी न लगे। कहने लगा मेरे पास तो कपड़ा तो है नहीं। श्री कृष्ण बोले कपड़ा हम देवें। पीताम्बर काट के दिया कि क्या करें ? अभी तो जिसके लिये इतने धर्मात्मा राजा सारे मर गये, वो तो दुष्ट मरा ही नही। क्या किया, पीताम्बर को तोड़ के, काट के और उसको दिया कि लंगोट बांध के जाओ। लंगोट अभी बांधा तभी कहने लगे, दुर्योधन बात सुनो, मैं जोरी से नहीं बंधाता हूं, कहीं बोलो कृष्ण मेरे को जोरी से बंधाया। आप की इच्छा बांधो न बांधो। मैं आपको सलाह दी है, सम्मति दी है, बाकी बांधो न बांधो, आपकी इच्छा, नग्नपना है माता को दिखाना पाप, फिर भी आपकी इच्छा बांधो न बांधो। मैं नहीं कहता।

उसी की मति मारी गयी कि ठीक है, आप नहीं कहते हो मैं खुशी से। कि जाओ। वो दुर्योधन आगे कृष्ण भगवान पीछे छिप–छिप के आके दरवाजे के पास में बाहर छुपके खड़ा हो गया। दुर्योधन गया माता गान्धारी के पास। कहने लगा–माताजी! अभी मैं आया हूं। पट्टी खोलो। युधिष्ठिर महाराज ने कहा है मेरी तरफ देखो के सारी हकीकत आपको सुनावें। माता ने क्या करा गान्धारी ने पट्टी जो खोली, खोली तो दृष्टि जाकर दुर्योधन के शरीर पर पड़ी। दुर्योधन का शरीर वज्र के समान हो गया। शक्ति थी पतिव्रता धर्म की। वज्र के समान शरीर हो गया। पर लंगोटी की जगह कच्ची रह गयी। कहने लगी पुत्र! कहो। कि माता! ये बात है कि अच्छा ये लंगोटी कृष्ण ने रास्ते में आपको बंधाई है ना। मैं जानती हूं, पतिव्रता धर्म के योग से जानती हूं। जैसे युधिष्ठिर ने कहा तैसे मेरे पास आप नहीं आए हो।

स्त्री के लिये ब्रह्मा विष्णु और शंकर से भी बढ़कर अपना पति है। जिस नारी का शरीर, मन कर्म, वचन अपने पति को छोड़कर कहीं नहीं जाता, उस नारी को पतिव्रता समझना चाहिए।

ये लंगोटी कृष्ण ने बंधाई है। कि हाँ माताजी। कृष्ण ने बंधाई है।

इतने में कृष्ण निकल के आया। कृष्ण भगवान कहने लगे मैंने ही बंधाई है, मैंने सलाह दी कि बांधो न बांधो। पूछो कि जोरी से बंधाई है ? पूछ के देखो? बंधाकर फेर कहा था कि बांधो न बांधो आपकी इच्छा है। हमने जोरी नहीं करी है पूछो। कि हाँ जी। ये सारा कुल मेरा वंश आपने नाश कराया है। ये पाण्डवों की ताकत नहीं थी, आपने नाश कराया है। सारा वंश, पुत्र सारे नाश कराया है। ऐसे आपका सारा कुल नाश हो जाएगा। सारा यादवों का कुल नाश हो जाएगा। श्राप दिया। ये माता गान्धारी का श्राप और दुर्वासा ऋषि के श्राप से सारा यादवों का कुल नाश हो गया, द्वारिकापुरी समुद्र में डूब गयी। ये है पतिव्रता धर्म। क्या कहा ? योग, ऋद्धि–सिद्धि प्राप्त होती है। जितने प्रेमी बैठे हो, ये माता पुत्रियों का धर्म है पतिदेव की सेवा करना। पति को छोड़कर मायके नहीं जावें मायके जाना पति को छोड़ के किसी दुख में या गरीबी में छोड़ के जाना मायके ये पाप है। ये पाप है। परलोक में हिसाब–किताब है, कोई ठगी नहीं है। प्रेम से बोलो, हरे राम। हिसाब किताब है, कोई ठगी नहीं है। प्रेम से बोलो हरे राम। पर पता है, फिर हमने देखा है, सुना है कि पुरुष स्त्रियों को मायके में छोड़ आते हैं। ये है फिर महापाप। वो पाप, ये है महापाप। जो स्त्री को निकाल दे घर से, जाओ मायके। या तो तेरे मायके मुझे कुछ दे पैसे। स्त्री को मारे, या अग्नि दे स्त्री को, ये महापाप है। स्त्री शरण में आती है।

दोहा: **शरण आये को जो जन तजहीं, निज अनहित अनुमान।**
ते नर पामर पापमय, तिन्हीं बिलोकत हान।।

सीता कुर्बानी करी। नंगें पाँव पत्थरों में, जंगल में, रावण ले गया तो श्री रामचन्द्र ने भी कुर्बानी करी,

पतिव्रता नारी को चाहिये कि सभी देवताओं, सभी गुरुओं, सभी धर्मों, सभी तीर्थों और सभी व्रतों इत्यादि को छोड़कर एक अपने पति की ही सेवा में लगी रहे। पतिव्रता नारी के लिये देवता, गुरु, धर्म, तीर्थ, व्रत आदि सब कुछ पति ही है।

रोये हैं बहुत रामचन्द्र वन में। रामायण पढ़कर देखो सीता के लिये। क्या दूसरी स्त्री नहीं मिलती राम को? कितनी तकलीफ उठाई। रावण क्या मरने जैसा था ? नहीं रावण बहुत बली राजा था। कोई थोड़ी बात नहीं थी। कितना परिश्रम दुःख किया रामचन्द्र ने। लक्ष्मण को मेघनाथ ने जब शक्ति बाण मारा है तब रोये हैं। वन में रोये हैं सीता के लिये पत्ते–पत्ते से पूछा है। नंगे पांव, कितनी तकलीफ करी। क्या रामचन्द्र को दूसरी स्त्री नहीं मिलती क्या ?

स्त्री को निकालकर मायके छोड़ना, ये महापाप है। स्त्री के साथ दुख में शामिल हो। भगवान से काम पड़ेगा या नहीं ? ये समय कठिन आया है, सच करके पूछो। स्त्री को निकाल दे कि जाओ मायके, वो है पाप, ये है महापाप। क्यों स्त्री शरण में आयी है ना। आपने देखा होगा, हमें भी कभी–कभी ले चलते हैं। जाते तो नहीं शादी में ज्यादा करके, क्यों शादियाँ तो बहुत होती रहती हैं। कभी–कभी जाते हैं तो देखते हैं कि दुल्हन का हाथ नीचे दुल्हे का ऊपर, माना जो नीचे रहती है शरण में। उस शरण में आई को धिक्का देकर मायके छोड़ना ये महापाप है। या फिर कहें कि तेरे मायके मुझे पैसे देवें।

इससे तो मांगकर खाए तो अच्छा है। सच पूछो तो, ये महाघोर नर्क में जलेंगे। याद करना। स्त्री को मारते हैं कि ये मरे तो दूसरी शादी करूं, ये भी महापाप है। और स्त्रियों को जलाया भी है। जो ना स्त्री को जलाता है वो महानर्क में जलेगा। याद करना। हमने तो बहुत काम देखे हैं, वे जेल में पड़े हैं।

एक आपको सलाह बताऐं, स्त्री पतिव्रता न हो, बिलकुल वचन में आज्ञा में न होवे तो स्त्री को नहीं मारे। करमण्डल लेकर चले जाओ गंगा के किनारे पर। शास्त्रों की आज्ञा है। कई राजा, कई महात्मा वैराग्य में घर छोड़कर चले गये। मारो मत। जलाओ मत। दूसरे को मारना आसान बात है ? महापाप है। और स्त्री को मायके न छोड़ दे। जितने प्रेमी बैठे हो थोड़ा इशारे में समझ ज़ाओ। ये अपना धर्म छुड़ाएगा। गृहस्थ मार्ग बहुत अच्छा है। पर उसमें धर्म पर चलो। अपने धर्म पर चलो तो गृहस्थ मार्ग में भक्ति बड़ी सुगम है। बाकी त्याग की भक्ति तो बहुत कठिन है। बहुत कठिन है। वो मक्खन की शीख पकानी है। सच पूछो, जीते जी मरना है। जिज्ञासुओं को और सन्तों को, मुश्किल है बड़ी। जितने प्रेमी बैठे हो थोड़े में समझ जाओ। और माता–पिता का धर्म है आपस में प्रेम। स्त्री–पुरुष आपस में प्रेम करें, बच्चों की रक्षा करें। **जिस घर में ना स्त्री–पुरुष का प्रेम है, एकता है, सम्पदा है, वहाँ लक्ष्मी आकर वास करेगी। जिस घर में ना झगड़ा है वहाँ से लक्ष्मी चली जाएगी।**

दोहाः आज्ञाकारी पुत्र है, पतिव्रता है नार।
धन सच का सन्तोष मन, चारों स्वर्ग संसार।।

दोहाः आज्ञाकारी पुत्र नहीं, कुलक्षणी है नार।
धन हीन मन कल्पना, चार नरक संसार।।

जिस घर में आज्ञाकारी पुत्र नहीं है, पिता कहे पुत्र ऐसा करो। कहे–आप नहीं करते, मैं नहीं करूंगा आज्ञाकारी पुत्र नहीं है। स्त्री है कुलक्षणी जिसमें कोई लक्षण नहीं है। घर में ना झगड़ा होगा तो लक्ष्मी चली जायेगी। धनहीन, मन सदैव भटकता रहेगा, दुःखी होगा, घर में कलह–झगड़ा होगा उसके लिये नर्क साक्षात् यही है। वहां तो नर्क पीछे जाऐंगे, पर अभी नर्क में है। पर जिसके घर में आज्ञाकारी पुत्र है, जो माता–पिता की सेवा करता है। स्त्री पूरण पतिव्रता है। कभी पति की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करती। धन सच की कमाई का है, रिश्वत का, ठगी का, मिलावट का नहीं। सच की कमाई का धन है। महात्माओं का संग करके स्त्री पुरुष आपस में बंधकर एक रूप हो गया है वो स्वर्ग में यहां है, आगे भी स्वर्ग में जाएंगे।

ये माता–पिता का धर्म, ये है धर्म कि बच्चों को सुधारे। छोटा न बच्चा होता है, हम क्या कहें

> जो पति अपनी पत्नी को मारता है, जलाता है, घर से निकाल देता है। वह पति भी महाघोर नर्क में जाता है। अतः उसे भी अपने धर्म पर स्थित रहना चाहिए।

> पती पिंगला अंधा भावें, विकारी मूक हो रोगी समझ तो भी परम योगी, निभाना नार को चाहिये। पति से प्रेम का नाता–निभाना नार को चाहिये।

आजकल के बच्चों का सुधार करते नहीं हैं। मांगते बहुत हैं, अर्दास बहुत करते हैं, महाराज अर्दास करो मेरे को बच्चा होवे कि पुत्र की पालना भी करेंगे कि खाली पुत्र होवे। पशु जैसे पैदा कर देंगे ? नहीं। उसकी रक्षा करो बच्चों की, कि पुत्र चोरी नहीं करना, सिनेमा में नहीं जाना। ये बच्चे का सुधारा करें। आज छोटे बच्चों की मांग निकालते हैं और बाल फिर रखते हैं ऐसे, जैसे नाग फन निकालता है। हंसो मत। ये जो ना अभी नाग जैसे फन निकालते हैं वो बूढ़ापन में उन्हें ही डसेंगे नाग। याद करना वे पुत्र दुख देंगे। ये कम बात नहीं है। बच्चों का सुधारा करो। हे भगवन्! बच्चा दो हमें तो कैसा दो–

दोहाः **जननी जने तो हरिजन जने, या दाता या सूर।**
ये तीनों जननी ना जाने, और जने सब धूड़।।

माता पहले तो हरि का भगत, हरिजन पैदा करे, न तो दूसरा दाता। कोई भी दरवाजे पर आये तो धर्मशास्त्रों के मर्यादा से, खाली न जाये। और दूसरा न देवे तो वचन से भी उसका चित खुश कर देवें। या दाता या सूर, शूरवीर जो अपने धर्म के लिये अपना सीस देवे। अपने धर्म की रक्षा करे। ऐसे शूरवीर होवे। जो ये तीनों बच्चा नहीं है तो दूसरा तो ये मिट्टी है कीड़ी मकौड़ी है जो कि बच्चा जन्मती है। कुछ नहीं है। ये उल्टा भार है भूमि पर। ये माता का धर्म है बच्चों को बहादुर बनाओ, वीर बनाओ, धर्मात्मा बनाओ, हरिभक्त बनाओ बच्चों को। ये माता–पिता के इख्तियार हैं।

पर पता है साइन्सदान ने काम किया है, पर महात्माओं की साइन्स कहती है कि **बच्चों को गौर पैदा करे ये माता के हाथ में है। बच्चा काला पैदा करे, माता के हाथ में है। बच्चा वीर करे तो माता के हाथ में है। या दातार करे, शूरवीर करे, चोर करे, जुआरी ये सारा माता के अधीन है। जब ना बच्चा पेट में होवे, पांच महीने प्राण बच्चे में पड़ते हैं, ऐसे शास्त्र कहते हैं। उसी दिन से लेके प्रभु का भजन करें, किसी से झगड़ा नहीं करें, झगड़ा करेंगे तो बच्चा बड़ा होके लड़ाई करेगा। चोरी न करे, अव्यार्थ न बोले, प्रभु का भजन करे, शुभकर्म करें, सच बोलें। ये परहेज करेंगे तो बच्चे में संस्कार पड़ेंगे।** फिर बच्चा पैदा होवे। फिर उसको संस्कार डालो। थोड़ा बड़ा होवे विद्या पढ़ाओ। जितने प्रेमी बैठे हो सो भी कैसे हो ? छोटा बच्चा उसको पता ही नहीं है। वो पिता लेके जाएंगे नाई के पास कि इसके अंग्रेजी बाल रखो। इसको पता ही नहीं है। बच्चों के बाल मशीन से कटाओ।

पदः **जहिंजी सींधि दिंगी, तहिंजो मनु दिंगो।**
जहिंजो मनु विंनो, तहिंजा कम दिंगा।।

ये याद करना। हे मेरे मन! शरीर को मत सींगारो। अपनी बुद्धि को दैवी सम्पदा के गुणों से सींगारो शरीर को नहीं। शरीर को सींगारेंगे, शरीर एक दिन शमशान में खाक हो जाएगा। मिट्टी, भसम हो जाएगा। अपनी बुद्धि को सींगारो। प्रेम से बोलो हरे राम। बच्चों को धर्मी विद्या पढ़ाओ।

सनातन धर्म की विद्या, पढ़ो भाईयों तथा बहनों।
पिता–माता सुकुल सेवा, कही वेदों ने मुख एवा।
प्रसन्न होते देवी देवा, पढ़ो भाईयों तथा बहनों।।

पहले बच्चों को धर्मी विद्या पढ़ाके, दूसरी विद्या अंग्रेजी, फारसी, गुजराती, मराठी, पारसी जितनी विद्या पढ़ाओ उतनी थोड़ी है। पर पहले धर्मी विद्या पढ़ाओ। दूसरी जाति में हम देख रहे हैं पहले अपने बच्चों को अपनी धर्मी विद्या पढ़ा के अपने धर्म में स्थित करके दूसरी विद्या पीछे पढ़ाते हैं। ये हिन्दू जाति है, जो अपने बच्चों को धर्मी विद्या नहीं पढ़ाती है। लोभ करके, नौकरी करके वो धर्मी विद्या छोड़ दी। फिर वो बच्चा भी ऐसा पैदा होता है, नहीं। **जितने प्रेमी बैठे हों, बच्चों को भागवत, रामायण ये तो कण्ठस्थ**

जिस प्रकार माता सीता सारे संसार के भोग पदार्थ छोड़कर भगवान श्रीराम के साथ जटा धारण करके वनवास गईं। वहां सुख–दुख, गर्मी–सर्दी, भूख–प्यास, कंकर–पत्थर, आदि सब सहन किये। उसी प्रकार सब नारियों को भी पतिव्रता धर्म का पालन करना चाहिये।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।
जहां स्त्रियों का आदर किया जाता है, वहां देवता रमण करते हैं। और जहां इनका अनादर होता है, वहां सब कार्य निष्फल होते हैं।

होवें। धर्मी विद्या पढ़ानी चाहिए बच्चों को, तो धर्म का तो पता लगे कि हमारा धर्म क्या है ? माता–पिता का धर्म क्या है ? बच्चों का धर्म क्या है ? स्त्री का धर्म क्या है ? स्त्री का धर्म क्या है ? धर्म का जिसे पता नहीं वो पशु है। प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेरे मन। आप मनुष्य हो सब जानते हो, तो आप पर जवाबदारी। बच्चों को धर्मी विद्या पढ़ाओ लड़की को, कन्याओं को अंग्रेजी विद्या न पढ़ाओ। क्या कहा राज विद्या नहीं। दास का ये विचार है। हाँ इतना है–

दोहा: **समय समय पहचानिये, समय समय की बात।**
किसी समय में दिन बड़ा, किसी समय में रात।।

छन्द: **एक समय महाभारत को, अर्जुन बाण से जीत लिया।**
एक समय में भील ने बन में, अर्जुन को जा लूट लिया।।
एक समय में ब्रज के माहीं, हरी ने जन्म धारा था।
एक समय में बीच सभा के, जाके कंस को मारा था।।
एक समय में कृष्ण डर के, जरासंध से भाग गया।
एक समय में बिनही शस्त्र, दैत्य को मार के करी द्रया।।
एक समय में रावण लंका, राज्य मद से करता था।
एक समय में रण में माहीं, कूकां कर कर मरता था।
कहता टेऊँ समय समय की, गुरुमुख बात विचारत है।
एक समय में देखो दिनकर, तीन अवस्था धारत है।।

दृष्टान्त बहुत है। समय–समय के प्रभाव से कन्याओं को इतनी विद्या पढ़ाओ कि अंग्रेजी विद्या लिख सकें, पढ़ सकें, समझ सकें, बोल सकें, इससे ज्यादा अंग्रेजी विद्या कन्याओं के लिये निष्फल, बेकार है। प्रेम से बोलो हरे राम! नौकरी करेंगे क्या राज विद्या पढ़कर ? नौकरी करना धर्म नहीं है। भला महाराज नौकरी करें, पति करे नौकरी, स्त्री भी करे नौकरी, फिर घर कौन चलाएगा ? नौकर चलाएगा ? एक बात आपसे पूछें ? याद रखना भुलाना नहीं। जो ना बड़ी परीक्षा देगी कन्या ओ.बी. पता नहीं क्या कहते हैं, बी.ए.। बड़ी बैरस्ट्री बहुत बड़ी परीक्षायें देकर आये, कन्या शादी करके आवे और क्या वो पतिदेव को रोटी बनाकर खिलाएगी ? सच बात बताओ। पतिदेव को स्नान करायेगी ? अगर पति पढ़ा हुआ न हो, पति उसको स्नान कराएगा, पति उसको रोटी बनाकर खिलाएगा। पति नौकर बनेगा तो घर चलेगा। वो भला झाडू देगी, रोटी बनाएगी ? जो ना, पतिदेव अगर बोले, स्त्री पानी दो, तो क्या बोलेगी, अरे नौकर! साहब को पानी दो, सेठ को पानी दो, दीवान को पानी दो। वो स्वयं पानी भी नहीं देगी। ये कोई स्त्री है क्या ? हम नहीं समझते वो स्त्री है।

और कन्याओं को इतनी अंग्रेजी विद्या भले पढ़ाओ क्योंकि देश सभी मिल गये हैं। हवाई जहाज, रेलों ने मिला दिये हैं देश। अंग्रेजी समझ सकें, कह सके, बोल सके, लिख सके, अंग्रेजी आये। ज्यादा धर्मी विद्या पढ़ाओ, वेदों का अध्ययन कराओ। वो जो इतनी बड़ी परीक्षा देगी राज विद्या की, उनसे जो ना पुत्र पैदा होंगे, वो बस क्या कहें, हमें कहना नहीं आता, वो सुपात्र होंगे क्या ? पर जो वेदों, धर्मी विद्या का, वेदों का अध्ययन करेगी। प्रेम से बोलो हरे राम। **धर्मी विद्या पढ़ेगी, उसके उदर से पुत्र अवतार होंगे ऋषि–मुनि, अवतार, भीमसेन, गुरु तेगबहादुर, गुरुनानक साहिब, सद्गुरु टेऊँराम जैसा।** सच पूछो, धर्मी विद्या पढ़ाओ कन्याओं को देखो। धर्मी विद्या। अंग्रेजी इतनी। बच्चों को भी पहले धर्मी विद्या फिर दूसरी पढ़ाओ। थोड़े में समझ जाओ। करेंगे तो गुरुमुख कोई–कोई सभी नहीं। पहले भी किसी ने किया है, सब ने किया क्या ? अगर सबने किया होता तो अभी क्यों सिर खपाना पड़े।

धर्मी विद्या पढ़ो पढ़ाओ, देववाणी का खोलो द्वारा।
धर्म सनातन जागो प्यारा, भारत को अब करो उजारा।।

धर्मी विद्या पढ़ाओ, देववाणी, देववाणी है संस्कृत, देववाणी पढ़ाओ, हिन्दी पढ़ो, अंग्रेजी थोड़ी। अभी हमने सुना है, देखा तो है जयपुर में, यहां तो पता नहीं कि ये शागिर्द, जो स्कूल के ना लड़के, ये कहता

सभी भगवत प्रेमियों को अपने घर में, सन्त–महात्मा–अवतार वीर–धर्मात्मा, दाताओं की तस्वीर लगानी चाहिए। जिससे बच्चों में अच्छे संस्कार पड़ेंगे। आपके पुत्र भी वीर–धर्मात्मा सन्त महात्मा बनेंगे।

जो नारी वेद–शास्त्र, रामायण, धर्मी विद्या पढ़ाती है। तो उनके पुत्र में भी वे ही संस्कार पड़ेंगे। पुत्र सुपात्र होंगे। आगे चलकर वे भी ऋषि–मुनि, सन्त–महात्मा, गुरुनानक सद्गुरु टेऊँराम आदि अवतार रूप होंगे।

है अंग्रेजी जो बोर्ड लगा हुआ है ना दरवाजे पर, दुकानों पर, हिन्दी लिखो। जो अंग्रेजी है, तो हम तोड़ेंगे, जलाऐंगे, उसने बहुत तो उतार दिया है दूसरे ढांप लिया है। यहां तो पता नहीं। उनको धन्यवाद होवे जो अपने धर्म में जागे हैं। ये अपने धर्म में जागना है। जितने भाई–माई बैठे हो, क्या कहें। भारत को उजाला करो।

हमारा विचार क्या है, ये महात्माओं का अपना–अपना विचार है। कि सिनेमा बन्द होनी चाहिए। कि महाराज! फिर वक्त पास कहां करे ? कि हां जी, जितनी सिनेमा है उतनी सत्संग सभाएं बना दो। महात्मा, पण्डित, महात्मा निष्कामी, निरइच्छा, जिसको पानी पीने की भी इच्छा नहीं है, कोई नास्ति नहीं है। वो सत्संग करे। गीता भवन बनाओ। प्रेम से बोलो हरे राम। ये आश्रम बना हुआ है। सत्संग करो। आपको वक्त ही पास करना है ना, सत्संग करो। राम राज हो जावे। परन्तु कोई कहे महाराज सिनेमा बन्द तो कठिन होगी। कठिन होगी, तो सिनेमा का सुधारा करें जो सुधारा नहीं करेगी तो नास्ति का कारण हो जायेगी। ये कोई कम बात नहीं है।

देखो मूर्ति पहले दरवाजे पर देखा स्त्रियों की मूर्ति, अन्दर स्त्रियों की मूर्ति। हमने सुना है कि नंगी मूर्ति दिखाते हैं। इतने बैठे हो, सिनेमा में अथवा बोर्ड लगा हुआ है चौक पर, दुकानों पर स्त्रियों की मूर्ति। स्त्रियों की कोई जरूरत है क्या सिनेमा में, सुनाओ? इतने बैठे हो उठ के तो सुनाओ। अवतारो की मूर्ति होवे, बहादुर वीरों की मूर्ति होवे, धर्मात्मा दातारों की मूर्ति दिखाये। क्या स्त्रियों की मूर्ति को दिखाने की जरूरत है क्या ? रोडों पर जरूरत है क्या स्त्रियों की मूर्ति लगाने की ? ये भारत माता की बेइज्जती है। महात्मा विनोबा इसी बारे में बहुत कोशिश कर रहे है। जितने प्रेमी बैठे हों ये भारत माता की बेइज्जती है। सच पूछो तो। महात्मा विनोबा का जब जन्म का दिन आया तभी सारे सत्संगी कहने लगे, प्रभु! कल आपका जन्म का दिन मनावें, क्या क्य करें? जैसी आज्ञा करें। महात्मा विनोबा कहने लग जैसे हमे कहेंगे वैसे करेंगे। कि हाँ प्रभु। जैसे कहा कि पहले शहर में जो ना स्त्रियों की मूर्ति मर्यादा बाहर है वो तोड़के जलाओ, तोड़ो कि हाँ प्रभु। ऐ करेंगे जलाने लगे बड़ा झगड़ा हुआ। प्रेम से बोल हरे राम। ये बेइज्जती करनी है भारत माता की अज्ञानी जीवों को क्या पता ? एक कहने ल महाराज स्त्रियों की मूर्ति सिनेमा में नहीं दिखाऐंगे त सिनेमा में कोई जाएंगे ही नहीं। इसीलिए तो बहु जाते है सिनेमा में। मैंने कहा जो इसीलिए जाते हैं उसको धिक्कार है। इसीलिए कि स्त्रियां जाकर देखे क्या वो मनुष्य है ? नहीं प्रेम से बोलो हरे राम।

प्रस्तुति–ज्योति खत्री, जयपु

स्त्री का धर्म है पतिदेव की आज्ञा से चलें, पति की प्रसन्नता में रहे। पति के दुखः–सुख में शामिल रहे। किसी भी परिस्थिति में छोड़े नहीं। सदैव सेवा करती रहे।

श्री अमरापुर धाम जयपुर

श्री अमरापुर स्थान (मन्दिर) की दैनिक समय सारणी

मन्दिर खुलने का समय

सुबह : 6.00 बजे से 12.00 बजे तक

सांय : 3.00 बजे से 9.00 बजे तक

प्रतिदिन सत्संग का समय

सुबह : 7.00 बजे से 8.15 बजे तक

सांय : 5.00 बजे से 6.30 बजे तक

प्रत्येक रविवार

सुबह : 7.00 बजे से 9.30 बजे तक (सत्संग–प्रवचन कैसेट)

सांय : 5.00 बजे से 6.30 बजे तक (भजन संध्या)

आरती का समय

सांय 6.30 बजे से 6.50 बजे तक

प्रत्येक गुरुवार व शनिवार

प्रातः 7 से 8.30 बजे प्रार्थना–सत्संग गुरु प्रार्थनाष्टक

सांय : 5.00 से 7.00 बजे तक भक्ति संध्या, सत्संग, आरती

सत्नाम साक्षी संकीर्तन एवं समाधि स्थल पर पुष्पो की झांकी

झांकी दर्शन समय

सांय 5 से रात्रि 9.00 बजे तक

नोटः दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक मुख्य द्वार ब श्री मन्दिर बन्द रहेगा।

25 अप्रेल 2002

पुण्यतिथि पर विशेष

अवधूत श्री स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित्र

(ब्रह्मलीन सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज)

रत्न प्रसविनी भारत की पुण्य भूमि जिन्होंने महर्षियों, देव ऋषियों, भक्तों, वीरों व अवतारों को जन्म दिया है व दे रही हैं और भविष्य में भी देती रहेंगी। हिमालय की गगन चुम्बी चोटियां दिवावसु की तेजोमय रश्मियां, की उताल–उतुगं तरंग मालाएं, अनन्त आकाश की घनघोर घटाएं, गंगा, यमुना, सरयु व सिन्धु आदि सरिताएं अपनी अपनी मूक भाषाओं द्वारा उन परम पावन रत्नगर्भा की कीर्ति को गाया करती हैं और जिसकी महिमा का यशोगान देव लोक में देवताओं द्वारा भी अहर्निश गाया जाता है, अतः भारत भूमि की गौरव गरिमा का संकेत मात्र दिग्दर्शन कराया गया, अब जिस उद्‌देश्य को लक्ष्य में रखकर उपरोक्त भूमिका बांधी गयी है अब उन महापुरुष के जीवन चरित्र की ओर बढ़ने के लिये मेरी इस लेखनी की उत्सुकता बढ़ती जा रही है। संभव है, विलम्ब करने पर इस चंचल लेखनी के धैर्य का बांध टूट जाये। कहीं ऐसा न हो कि धारा प्रवाह में बाढ़ आ जाय और पाठकगण बह न जाय। इसलिए शीघ्रातिशीघ्र उनके संकलित किये हुए जीवन चरित्र का लेख आरम्भ कर रहा हूँ।

हाँ तो लीजिये पढ़कर प्रेरित होकर आनंदित होइये। विश्व विख्यात भारत वर्ष का एक अंश विशाल सिन्धु दरिया ही जिसका हृदय है, जिसका प्रसिद्ध नाम सिन्धु देश है। ऐसे रमणीय और समृद्धि सम्पन्न सिन्धु देश के प्रमुख नगर हैदराबाद जन पद अन्तर्गत शाहभिट नामक गांव में धनजानी कुलोत्पन्न एक भाग्यवान दम्पति श्रीमान् लक्ष्मीचन्द जी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती ज्ञानीबाई सहित निवास करते थे, स्वामी गुरुमुखदास जी के सिवा उन्हें और भी सन्तति थी, अस्तु यहाँ पर केवल स्वामी गुरुमुखदास जी के विषय में लिखा जाएगा।

सम्वत् 1953 चैत्र मास शुक्ल पक्ष द्वितीय तिथि गुरुवार के पवित्र दिन प्रातःकाल की शुभवेला में भाग्यवती पुण्यशीला यशस्विनी श्रीमती ज्ञानीबाई ने एक महापुरुष को जन्म दिया था। जिनका नाम स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज था। पाठक गण उपरोक्त नाम से प्रायः विशेष रूप से परिचित होंगे, बहुत लोग उन्हें ''डंडे वाले स्वामी जी'' के नाम से पुकारा करते थे, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जहां जहां जाते थे तो वहां पर बहुत से प्रेमी सज्जन पूछते रहते थे कि डंडे वाला स्वामी जी कहां है ? क्योंकि देश विभाजन पश्चात् सिन्धी लोग भारत के कोने कोने में जा बसे और विदेशों में भी न जाने कहां कहां जा बसे उन सभी को अभी तक ये अवगत नहीं है कि स्वामी गुरुमुखदास जी ब्रह्मलीन हो गये हैं। स्वामी गुरुगुखदास के पूर्वज भक्त प्रवर दादा विशनदास जी आदि परम्परागत से महान भक्त थे, स्वामी जी के दो चाचा श्री तीर्थदास जी व श्री टेकचन्द जी तो अवधूत थे, ऐसे पवित्र कुल में स्वामी जी का जन्म हुआ था।

गीता के प्रणेता व वक्ता भगवान श्री कृष्ण जी के श्री मुख से निर्गत अभिव्यक्ति (गीता अ.6 और श्लोक 41,42, 43) के अनुसार उच्च श्रेणी के साधक महापुरुषों की दुर्गति कभी नहीं होती है। ऐसे महात्मा लोग, ब्रह्मलोक देवलोक आदि पुण्य लोकों के दिव्य भोगों का दीर्घकाल तक उपभोग कर फिर इस मृत्युलोक में किन्हीं पुण्यवानों पवित्र यशस्वी श्रीमानों अथवा योगियों के घर में जन्म लेते हैं, ऐसे योग युक्त आत्माओं में से स्वामी गुरुमुखदास जी एक थे।

विश्व प्रांगण के मंच पर आकर जहां पुरुषों ने अपने अद्भुत कर्म दिखलाकर इतिहास को अति आकर्षक रोमांचकारी और प्रोत्साहन देने वाला बनाया है वहां पर नारियों का भी प्रथम स्थान रहता आया है।

मातृ देवो भवः।। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः

विस्तार भय से नारी के विषय में न लिखकर उन महापुरुष के जीवन को लेते हैं। श्रीमती ज्ञानी बाई पुराण प्रसिद्ध नारियों में से एक थीं, जिसने स्वामी गुरुमुखदास को बाल्यावस्था से ही हरि भक्ति की और बढ़ने के लिये प्रेरित किया व प्रोत्साहन दिया, माताजी के सुन्दर शिक्षाओं के द्वारा स्वामी जी का "विमल, विशुद्ध व सरल हृदय अधिक प्रभावित हुआ और स्वामी जी हरि भक्ति की ओर उत्तरोत्तर बढ़ने लगे। स्वामी जी का पितृ कुल व परिकर तो असाधारण भगवद् भक्त था ही, परन्तु स्वामी जी का मातृ कुल व परिकर तो और भी असाधारण भगवत भक्त था, स्वामी जी के मातृ कुल में भगवान विष्णु के अंश अवतार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का प्राकट्य हुआ था, जो इस वर्तमान प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे, जिन्होंने पाखण्डियों के दमनचक्र को जो कि अत्यन्त दुर्दमनीय था, और वे पाखण्डी लोग हिन्दु धर्म के उन्मूलन करने का भरसक प्रयास कर रहे थे उन लोगों ने निन्यान्वे प्रतिशत भोले भाले लोगों को पददलित कर रखा था, ऐसे लोगों के पाखण्ड को अपने दिव्य कर्मों व प्रतिभाशाली सत्संग द्वारा खण्डन किया था और मण्डली (जिसमें स्वामी गुरुमुखदास जी भी थे) को साथ लेकर पूरे सिन्धु देश के गांव गांव व नगर नगर में जाकर सनातन धर्म का प्रचार व प्रसार किया था। उन्हीं महान विभूति बाल ब्रह्मचारी तेजपुंज तपोधन साक्षात कृतधर्मा ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के स्वामी गुरुमुखदास जी शिष्य भी थे तो व्यवहार सता में भानजे भी लगते थे इस नाते से वह माताजी के साथ अपने नानाजी के घर आते जाते रहते थे और सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज भी शाहभिट आते जाते रहते थे, इस संबंध के कारण स्वामी जी को सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की मधुर व चित्त को आकर्षित करने वाली वाणी सुनने का प्रचुर समय मिलता रहता था। स्वामी जी की आयु अभी केवल दस वर्ष की ही थी तो उनके पिता श्री लक्ष्मीचन्द जी का देहावसान हो गया, भगवान का विधान मंगलमय होता है भविष्य में स्वामी जी को एक महान सन्त बनना था। पति के स्वर्गारोहण पश्चात् श्रीमती माता ज्ञानी बाई अपने दस वर्षीय बच्चे गुरुमुखदास जी को लेकर अपने पीहर के घर खण्डू गांव में आकर रहने लगीं, स्वामी गुरुमुखदास जी जो अभी अबोध बालक ही था, वह भी वहां पर सेवा सुश्रूषा में लगा रहता था, और अब तो उन्हें गुरु महाराज जी के उपदेश सुनने का भी पूरा पूरा अवसर मिलता रहता था और गुरु महाराज जी केसाथ गाने बजाने का भी अवसर मिलता रहता था, ज्यों ज्यों उनकी आयु बढ़ती गई त्यों त्यों उनकी बुद्धि का भी विकास होने लगा, और सतत् सत्संग व सेवा के प्रभाव से स्वामी जी गुरु महाराज जी के उपेदशों को अच्छी तरह समझने लगे। एक दिन उन्होंने गुरु महाराज जी से दीक्षा देने के लिये प्रार्थना की उनकी प्रार्थना सुनकर उन्हें सांत्वना देते हुए व अमृत स्रावी वरद करकमल द्वारा स्वामी गुरुमुखदास जी के मस्तिष्क का स्पर्श करते हुए गुरु महाराज जी ने माधुर्य भरी व स्नेह–मयी वाणी में कहा कि हे वत्स। आप धैर्य रखो व और भी सेवा करो आपकी अभिलाषा पूर्ण होगी, फिर तो गुरु महाराज का निर्देश पाकर बड़ी लगन के साथ सेवा में लग गए कुछ समय पश्चात जब स्वामी जी सोलह वर्ष के हुए तब फिर दीक्षा देने के लिए करबद्ध सानुरोध प्रार्थना करने लगे। स्वामी जी की अनन्य भक्ति व सेवा सरलता देखकर गुरु महाराज जी ने उन्हें विधिवत् दीक्षा दी, दीक्षा ग्रहण के पश्चात् स्वामी जी को भी अपनी संत मण्डली में सम्मिलित कर लिया, गुरु महाराज जी की संनिधि पाकर स्वामी जी अपने को महान भाग्यशाली समझने लगे, व मन ही

मन अपने भाग्य की भूरि–भूरि प्रशंसा करने लगे। गुरु महाराज जी की महती कृपा, सेवा, स्मरण व श्रद्धा भक्ति के फलस्वरूप स्वामी जी के विकसित बुद्धि में देवी सरस्वती ने आकर निवास किया, गुरु महाराज व वाग्देवी की अपार कृपा से अनुभव की वाणी का निर्गमन होने लगा, फिर तो उन्होंने सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी की प्रशस्ति काव्य के साथ–साथ और भी अनेक विषयों पर कविताएं लिख डालीं, जिनमें से "**श्री गुरुमुख भजन माला**" सिन्धी तथा हिन्दी में तो पूर्व प्रकाशित हो चुकी है। "**श्री गुरुमुख दोहावली**" हिन्दी में जो कि आपके हाथों में है और शेष कविताएं भी शीघ्र ही प्रकाशित की जायेंगी। स्वामी जी का सबसे प्यारा वाद्ययन्त्र "डंडा" था जिसके अग्र भाग में घुंघरू बन्धे रहते थे उसके बजने की आवाज मेघ गरजन सी गम्भीर होती थी और कीर्तन के समय बड़े ही सुचारू ढंग से बजाया करते थे, डंडे बजाने के ढंग व तन्मयता को देखकर गुरु महाराज जी बड़े प्रसन्न होते थे। वो डंडा अन्तिम घड़ी तक स्वामी जी के पास रहा और अभी भी वो डंडा अमरापुर स्थान जयपुर में सुरक्षित है। अपनी काव्य–कुशलता और वाक्पटुता के द्वारा अनेक सारगर्भित, शिक्षाप्रद, मनोरंजक व हास्यप्रद प्रसंगों व प्रवचनों द्वारा श्रोताओं के मन को हठात् अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे, जिस प्रसंग को सुनाते थे तो वे एक ऐसे विलक्षण ढंग से अभिनय करते थे मानो वह सारी घटना उन पर ही घटित हुई हो, जिसे देख व सुनकर सभी श्रोतागण सहसा हंस पड़ते थे, उनके बोल चाल अवलोकन व प्रत्येक चेष्टा का एक अपूर्व ढंग था, सभी श्रोताओं को तो खूब हंसाते थे परन्तु स्वयं इतना तो गम्भीर रहते थे मानो उन्होंने कुछ कहा ही न हो।

यह घटना टंडे बागे सिन्ध की है, गुरु महाराज के साथ जब वह टंडे बागे गये तब वहां पर स्वामी जी को सत्संग करने का समय दिया गया स्वामी जी का सत्संग सुनकर सब हंस रहे थे सारी सभा भरी हुई थी उस सभा में एक व्यक्ति जिस का नाम दीवान मंघाराम था (जो कि उप राज्यपाल थे) वह भी बैठे थे सत्संग सभा विसर्जन के पश्चात् वह गुरु महाराज जी के पास आकर अपने मनोगत विचारों को व्यक्त कर कहने लगा, स्वामी जी ! मैनें भी बहुत सी सतसंग सभाएं देखीं व सत्संग सुने परन्तु मुझे कभी भी हंसी न आई परन्तु आज इस सन्त का प्रवचन सुनकर मैं अपनी हंसी को रोकने में असमर्थ हो गया। अतः औरों का तो कहना ही क्या परन्तु गुरु महाराज जी स्वयं हंस पड़ते थे। स्वामी जी गुरु महाराज के साथ मण्डली में तो रहते थे परन्तु वह अकेले भी घूमा करते थे और जिस जिस शहर में नई नई बात देखते थे तो गुरु महाराज जी को आकर सुनाया करते थे, और गुरु महाराज जी के सत्संग के बीच बीच में भी अच्छी अच्छी उक्तियां बोल देते थे, एक उक्ती ये है, उनके सरल शब्दों में। एक माई थी हैदराबाद की उसका पति बाहर से आया था एक दिन वह बीमार पड़ा उसने जब स्त्री से पानी मांगा तो स्त्री ने नौकर से कहा अरे भैया! भाई को पानी पिलाओ, आखिर उसका पति मर गया पर स्त्री ने पति को पानी नहीं पिलाया, और भी अनेक उक्तियां बोला करते थे, स्वामीजी जी कब बोलेंगे। इस प्रकार की आशा लेकर सब स्वामीजी की ओर ताकते रहते थे। गुरु महाराज के साथ रहकर उन्होंने संपूर्ण सिन्धु देश का भ्रमण किया था व भारत के भी प्रमुख नगरों तीर्थों व कुम्भ मेलों की भी यात्रा की थी, अमरापुर स्थान (टंडा आदम सिंध) के निर्माण कार्य में तो स्वामी जी ने साहस व लगन के साथ सेवा की थी। सामयिक प्राबल्य से सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी दिव्य लीला का संवरण कर परमधाम गए, तत्पश्चात् श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को प्रेम प्रकाश मण्डल के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया, फिर तत्काल ही देश का विभाजन हुआ और सारा प्रेम प्रकाश मण्डल श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के संरक्षण में अपने प्यारे देश व अमरापुर

स्थान का परित्याग कर भारत को चले आये, स्वामी गुरुमुखदास जी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के चचेरे भाई भी थे तो गुरु भाई भी थे। यहां भारत में पधारने के पश्चात स्वामी जी ने स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के साथ संपूर्ण भारत के देशाटन के साथ–साथ श्रीलंका की भी दो बार यात्रा की थी। वहां पर वह अशोक वाटिका के गहन विपिन में भूल गये थे वह अपनी यात्रा संबंधी पूरी पूरी कहानियां बड़े ही विचित्र ढंग से सुनाया करते थे। राजस्थान राज्य के प्रमुख नगर श्री जयपुर में (जो कि वर्तमान राजस्थान की राजधानी है) स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के द्वारा विद्यमान अमरापुर स्थान की स्थापना की गयी तब ये वर्तमान अमरापुर स्थान एक उजाड़ क्षेत्र के रूप में था, स्वामी जी ने अमरापुर स्थान के नव निर्माण कार्य में पर्याप्त मात्रा में सेवा की थी, वृद्धावस्था होने पर भी वे निशीथ में जग जाते थे और विशेष कर ये पद (जो कि सिन्धी भाषा में हैं) सदैव गाया करते थे। **"उथी रे जोगी जाग सुबहु थियो थई सुम्हण छदे दे"** फिर वह काव्य रचना में लग जाते थे और प्रातःकालीन सत्संग में भाग लेते थे फिर सेवा कार्य में लग जाते थे, देशाटन पर भी जाते थे फिर सेवा कार्य में लग जाते थे, आश्रम पर भी रहते थे, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अनुपस्थिति में सत्संग का पूरा कार्य भार संभालते थे, वर्तमान अमरापुर स्थान का नवनिर्माण कार्य व सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के मन्दिर का निर्माण कार्य व प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा और अनावरण ये सब मंडल कार्य स्वामीजी की उपस्थिति में ही संपन्न हुए थे, और आचार्य अनन्त श्री विभूषित सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा विरचित श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के मुद्रण कार्य में तो स्वामी जी ने विशेष रूप से भाग लिया था, क्योंकि उनमें कवित्व शक्ति विशेष थी और वह अच्छे कवि थे, सुगम संगीत और शास्त्रीय संगीत के भी विशेषज्ञ थे, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के मुद्रण कार्य की संपन्नता भी स्वामी जी के उपस्थिति में ही हुई थी। स्वामी जी में एक अनुपम विशेषता और भी थी जिसने स्वामी जी की ख्याति को और भी बढ़ा दिया वह थी 'सर्वजनप्रियता' यह गुण उनका नैसर्गिक था वे किसी से भी वैमनस्य नहीं रखते थे न घृणा करते थे परन्तु सबके प्रति प्रेम रखते थे। उनका हृदय राग द्वेष से शून्य रहता था।

श्लोकः अय निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुदैव कुटुम्बकम्।।

ये था उनका लक्ष्य। वह सर्वथा निःस्पृह रहते थे, निस्पृह दैवीगुण जो कि वेदों पुराणों व गीता आदि शास्त्रों में पाये जाते हैं वे समस्त गुण सचमुच, इस सन्त में विद्यमान थे, उन्होंने अपने जीवन काल में किसी भी पदार्थ का संग्रह न किया था, सदा सर्वदा सादे वेशभूषा में रहते, उनकी प्रत्येक चेष्टा में भोलापन प्रतीत होता था, आधुनिक युग में ऐसे सन्तों का मिलना कठिन ही नहीं अपितु अत्यन्ताभाव है आबालवृद्ध उसे चाहते थे। "कालस्य कुटिला गति" उपरोक्त उक्ति के अनुसार समय की गति बहुत ही टेढ़ी कही जाती है संसार परिवर्तनशील है सभी का इस नश्वर संसार से जाना अनिवार्य है, परन्तु यश अपयश संसार में रह जाता है यश के द्वारा मनुष्य अमर कहलाता है व अपयश के द्वारा मृत कहलाता है। प्रसिद्ध वेद पारंगत महर्षि याज्ञवल्क्यजी ने अपने वक्तव्य में कहा है **"यो वा एतदक्षरं गार्गि अविदित्वा अस्माल्लोकात् प्रैति स कृपणः"** भावार्थ–जो कोई भी प्राणी इस अक्षर ब्रह्म को न जानकर इस संसार से प्रस्थान करता है वह कृपण कहेलाता है। और जो **"यो वा एतदक्षरं गार्गि विदित्वा अस्माल्लोकात् प्रति स ब्राह्मणः"** इस अक्षर ब्रह्म को जानकर इस संसार से विदा होता है वो ब्राह्मण कहलाता है।

जिन्होंने आत्मतत्व का साक्षात्कार कर लिया है उन्हीं की आत्मा सदा जागृत रहती है उन्हीं की स्मरण शक्ति कभी भी नष्ट नहीं होती है, उपरोक्त वाक्यों के अनुसार स्वामी गुरुमुखदास जी के प्राणों के प्रयाण के पूर्व **उनका शरीर तो निश्चेष्ठ हो गया था**

परन्तु आत्मा जग रही थी। ये अवगत तब हुआ जब श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने कीर्तन आरम्भ किया तो आवाज सुनकर स्वामी गुरुमुखदास जी की अंगुलियां भी ताल मिलाकर नाचने लगीं, जैसे तबले पर अंगुलियां नाचा करती हैं। प्रेम प्रकाश मण्डल के समस्त सन्त व अन्य सन्त और आगन्तुक यात्रीगण व जयपुर नगर के नागरिक सभी के सभी उस समय उपस्थित थे (कारण कि सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा आरम्भ किया हुआ वार्षिकोत्सव भी उन दिनों था) ऐसा अनोखा दृश्य देखकर उन सभी की आंखें आश्चर्य चकित हो उठीं, थोड़ी देर के लिए तो सब लोग आनन्द में भर कर हर्षनाद से स्वामी गुरुमुखदास जी की जय मनाने लगे, और सब बड़े प्रसन्न हो रहे थे कहने का मतलब अन्तिम घड़ी तक स्वामी जी की चेतन शक्ति यथावत् बनी रही। सम्वत् 2022 चैत्र मास शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि के पवित्र दिन प्रातःकाल के प्रथम प्रहर में और अमरापुर स्थान के पुण्य क्षेत्र में जब कि सूर्य भगवान भी उत्तरायण में था ऐसी शुभवेला में स्वामी जी ने इस पंच भौतिक शरीर का परित्याग कर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पुनीत श्री चरणों में विलीन हो गये, स्वामी जी के निधन पर सबको बड़ा शोक हुआ तथा आकाश से देवताओं, द्वारा वृष्टि हुई, स्वामी जी के अभाव की क्षतिपूर्ति होना असंभव है। अन्त में उन दिवंगत महान आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जीवन चरित्र को समाप्त करता हूं। **प्रस्तुति–श्री अमरापुर स्थान, जयपुर**

आरती
स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज

ओम जय गुरु गुरुमुखदास–स्वामी जय गुरु गुरुमुखदास
लीला तेरी नाथ निराली, अद्भुत वचन विलास–ओम जय.

1. प्रेम प्रकाशी सब सुख रासी, गुरुमुखदास तेरा नाम स्वामी
   माता ज्ञानी सब गुण खानी, गुरुवर टेऊँराम–ओम जय..
2. अगुन सगुन दोऊ रूप तुम्हारे, सबके तुम आधार–स्वामी
   मात पिता गुरु देव स्वामी, तुम हो पालनहार–ओम जय..
3. एक हाथ में घुंघरू बाजे, दूजे इकतारा–स्वामी
   सोहम् सोहम् गरजे बाणी, बरसे रस धारा–ओम जय.....
4. गुरुमुख तेरा नाम निराला, संकट सब टारे–स्वामी
   भूत प्रेत भय निकट न आवे, जो ध्यान तेरा धारे–ओम जय
5. ग्रह गोचर सब सुख पहुंचावे, गुरुमुख गुन गावे–स्वामी
   रिद्धि–सिद्धि बल बुद्धि ज्ञान विज्ञाना, नव निधि घर आवे–ओम जय...
6. चण्ड प्रचण्ड मुख मण्डल तुम्हारा,अद्भुत छवि राजे–स्वामी
   वीर धीर गुण ज्ञान गम्भीरा, जय जय धुनि गाजे–ओम जय....
7. दण्ड कमण्डल कर कमलों में, भूमि पर शैया–स्वामी
   सब जीवों के मार्ग–दर्शक, जल थल नभ नैया–ओम जय.....
8. आरत होकर आरती तेरी, जो कोई नर गावे–स्वामी
   भ्रम चकर भव बन्ध तोड़कर, सहज मुक्ति पावे–ओम जय....

गुरुमुखदास चालीसा

सत्य सनातन ब्रह्म जो – व्यापक सर्व आधार।
निराकार साकार बन – ले आता अवतार।।
अगम अलेख अचिन्त्य है – अखण्ड अनूप अरूप।
अपना भेद लखान हित – धारे सत्गुरु रूप।।
कब हीं गुरु बन आवता – कब हीं शिष्य सुजान।
आप कहे सद्ज्ञान को – आप ही सुनता ज्ञान।।
अविद्या तम को दूर कर – किया ज्ञान प्रकाश।
सिन्ध देश में जन्म ले – आए गुरुमुख दास।।

तन लागा गुरु सेव में – मन भी सत्गुरु पास।
वाणी गुरु महिमा कथे – धन धन गुरुमुखदास।।
सिन्ध देश अति उत्तम प्यारा – कल कल बहती सिन्धु धारा
घर घर बहत ज्ञान की गंगा – हरि स्मरण होता सत्संगा
भिट्‌ट शाह एक सुन्दर ग्रामा – जहं आये सत्गुरु सुखधामा।
धन्य धान्य भरपूरा भारी – सुखी सभी थे नर अरू नारी
कर्मशील करते परिश्रमा – पालत यत्न करे निज धर्मा
धन्य देश ऐसा अति सुन्दर – प्रकट भए जहं सतगुरु सुख कर

लक्ष्मीचन्द घर मंगल छाया – ज्ञानी देवी सुखको पाया
बाल रूप का कीना दर्शन – निरखत रूपा मुदित भया मन
देन लगे सब लोग बधाई – सब के मन अति खुशियां छाई
ओम ओम की ध्वनि पावन – करन लगा बालक मनभावन
झूला ज्ञानी मात झुलावें – गा गा मीठे वचन सुनावे
बाल्य काल से हरि सुमरन में–मगन रहे नित हरि भजन में
सर्वानन्द गुरुमुख अभिरामा – उभय भ्रात जग से उपरामा
भ्रात सहित मिल बैठ एकान्ती – ध्यान मग्न हो पायी शान्ती
जग निस्सार स्वपनवत भासा – हरि दर्शन की जगी प्यासा
साधु संत आते सैलानी – सतसंग में यों करत बखानी
वेद शास्त्र सब खोल सुनावहिं– गुरु बिन ज्ञान कबहुं नहीं पावहिं
सन्तजनों की पावन बानी – सुन सुन श्रद्धा मन उपजानी
सत्गुरु मिले हरि अनुरागी – ऐसी मन जिज्ञासा जागी
गुरुखोजन हित गृह को त्यागा– उपजा हृदय परम वैरागा
खोजत खोजत खण्डू आहे – सतगुरु टेऊँराम तहं पाये
निर्मल निरख निरंजन मूरत – सुखदायक अति सुन्दर सूरत
चरन कमल में शीश झुकाया – विनय करे निज हाल सुनाया
बार बार जन्मन फिर मरना – तांसे मुक्त आप अब करना
मिट्टी चढ़ती चाक कुम्भारा – पावत है ज्यों रूप अपारा
त्यों माया के चक्कर माहीं – भटके बहुत जन्म हम ताहीं
भरमत केते जन्म बिताए – अब लौं शांति तनिक नहीं पाए
मिथ्या है जग मृग जल न्याई – तज लीनी तवशरण गुसांई
निश्छल निर्मल सरल स्वभावा– गुरुकृपा सो सहजे पावा
आर्त वचन सुन गुरुवर ज्ञानी– दिया शब्द सत्पात्र जानी
कहा शब्द निशिवासर सुमरो–गुरुमुख हो तुम जग में विचरो
वृत्ती जिस गुरुशब्दे माहीं – गुरुमुख नाम जगत में ताही
गुरुमुख सुख दुख सिर पर सहता–गुरुमुख गुरु आज्ञा में रहता
गुरुमुख गुरु वाणी नित पढ़ता–गुरुमुख गुरु मूरत दिल धरता
गुरुमुख गुरु के सम्मुख रहहीं–गुरुमुख गुरु से ज्ञान सुलहहीं
गुरुमुख गुरु में अन्तर नाहीं –गुरु बसे गुरुमुख के माहीं
गुरुशब्द में ध्यान लगाया –परमानन्द परम पद पाया
गुरु मूरत में सुरति समाई –गुरुमुख बन गुरुकृपा पाई
नाम गुरु का घर घर गाया –अविद्या नीन्द से सबहिं जगाया
गुरुकृपा धन पाय अकूता –गुरुमुख दास भया अवधूता
हृदय बसा गुरुशब्द को –कर गुरु कीर्ति–गान।
गुरुकृपा से पाईया –अमरापुर स्थान।।
माया छल में ना छला –त्यागी जगकी आस।
धन्य धन्य सो जगत में –स्वामी गुरुमुखदास।।
यह चालीसा जो पढ़े –प्रेम सहित चित्तलाय।
निश्चय ही गुरुमुख बने –संसा सकल मिटाय।।

स्वामी शांतिप्रकाश वाणी–20

हृदय को शुद्ध रखिए

(परम श्रद्धेय सद्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज)

मंगलाचरण :

ओऽमकारं बिंदु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः
कामदं मोक्षदं चैव ओऽमकाराय नमो नमः।।
सर्व स्वरूपं आदि अनूपं भूमि भूपं भय भाना।
अंत न ऊपं छाय न धूपं काढ़त कूपं धर ध्याना।
रहस्यारामं दायक धामं नित निष्कामं निर्बानी।
पाद न मांमं निशदिन शामं श्री टेऊँरामं गुरुज्ञानी
शांति ! शांति ! शांति !

कीर्तन–गोविन्द जय जय, गोपाल जय जय
श्री राधा रमण हरि, गोविन्द जय, जय।

मूलसूत्र–।।राग भैरवी।।

थलुः

1. प्रेम जो प्यालो पीआरियो, दयालू दया करे।
प्रेम जो प्यासी, सत्गुरु आहियां,
प्रेम प्यालो पीअण चाहियां,
नूरी नज़र निहारियो, दयालू.....
2. जंहिं बि पीतो प्रेम प्यालो
मुहब्बत में सो थियो मतवालो
तिनिजे संग में विहारियो–दयालू
3. गोपीचंद भर्थरी, पीपे
पीतो प्यालो नामे छीपे,
मस्तीअ मांहि गुज़ारियो दयालू
4. सफलु जनमु माँ समझां तद॒हिं
प्रेम प्यालो पीआं जद॒हिं,
द॒ातर द॒ाति द॒ियारियो–दयालू
5. कहे टेऊँ गुरु अर्जु अघायो
प्रेमु पीआरे मस्त बणायो
संसा मरम निवारियो–दयालू (भजन बहार–2)

गुरु महाराज अपने गुरुदेव और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान अगर आप रहम और दया करके मुझे कुछ देना चाहें तो प्रेम दीजिये, परन्तु वह प्रेम आप के लिये ही देना न कि संसार के लिए देना। क्योंकि इस संसार के प्रेम के कारण सभी मनुष्य कितनी ही योनियों में भटके हैं कभी कैसी योनि में तो कभी कैसी योनि में।

स्वामी जी कहते हैं कि आप या हम जितने भी लोग यहाँ बैठे हुए हैं क्या हम सभी मुक्त हुए हैं, हमें मालूम नहीं है कि हमारे कितने जन्म हुए हैं, कितने जन्मों तक हम भटके हैं। क्योंकि मुक्त होने का अर्थ है दुबारा जन्म मरण के चक्र में न आना।

"भगवान श्री कृष्ण" अर्जुन से कहते हैं कि अर्जुन! जो एक बार मेरे लोक में आ जाता है उसे फिर इस संसार में नहीं आना पड़ेगा।

परन्तु हम अभी तक उस सीमा तक नहीं पहुंचे हैं, और अभी तक संसार में ही भटक रहे हैं।

एक महात्मा ने कहा है, जहाँ प्रेम नहीं है, प्रभु परमात्मा के लिए इज्जत नहीं है, सन्तों के लिए आदर नहीं है, सत्गुरुओं के लिए विश्वास नहीं है, वह स्थान (जगह) और वह दिल बरबाद है। वह दिल किसी काम का नहीं है।

एक सेठ था, वह बड़ा दयालू था, उसे मन में विचार आया कि मैं गरीबों के लिए जिनके पास रहने के लिए घर नहीं है उनके लिए कुछ करूं। ऐसा विचार आने के बाद उस सेठ ने सौ (100) कमरे बनवाए और गरीबों को रहने के लिए एक–एक कमरा बांट दिया, और कहा कि आप आराम से निश्चिंत होकर रहिए। आप इसका किराया भी न देना सिर्फ एक कमरा मेरे लिए रखना क्योंकि मैं यहाँ आऊँगा तो इस में आकर रहूंगा।

बाद में उन गरीबों को मन में स्वार्थ पैदा हुआ,

उनका मोह और उनके बच्चे बढ़ते गये तो वह सेठ वाला कमरा भी खाली नहीं छोड़ा, अपने बच्चों को सेठ का कमरा दे दिया। जब सेठ वहाँ आया तो एक भी कमरा खाली न देखकर वहाँ रहने वाले लोगों से पूछने लगा कि मेरा कमरा कहाँ है ? तो वहाँ रहने वाले लोग उसे कहने लगे कि सेठ जी आप का कमरा भर गया है इसलिए आप अपने लिए दूसरी जगह का प्रबंध कर लें। ऐसा सुनकर सेठ बहुत नाराज़ हुआ। कहने लगा कि इतने सारे कमरे मैंने आपके लिए बनवाए और आप लोगों ने एक भी मेरे लिए नहीं छोड़ा। जब आप अपने सेठ को दुःखी करते हो तो स्वयं कैसे सुखी रह सकोगे ? सेठ को बहुत गुस्सा आया और सारे के सारे कमरे तुड़वा दिये।

इसलिए स्वामी जी कहते हैं कि इस शरीर में जो हृदय है, वह अपने मोहन को अर्पण कर दीजिये, बाकी सारी बातें आप अपने सगे संबंधियों को करने दीजिये।

परन्तु हम मूर्ख और अज्ञानी मनुष्य इस नश्वर संसार के माया जाल में फंस गये हैं। हमने अपने हृदय में संसारी मनुष्यों को अपने मकानों और कारोबार को बसा लिया है, हमारा हृदय संसारी बातों से भरा हुआ है। तो हमारे हृदय में भगवान कैसे विराजमान होंगे ? हमने भगवान को निकालकर मोह–ममता को बिठाया है, तो भगवान कैसे आऐंगे और कैसे हमें सुख देंगे।

आप भी अपने दिल पर हाथ रखकर देखें। हांग–कांग बहुत ही विख्यात शहर है। व्यापार के ख्याल से, धन के ख्याल से अपने शान–मान के ख्याल से, सरकारी बातों से आदि से बहुत मशहूर शहर है। यहाँ सभी करोड़पति, अरबपति लोग रहते हैं, पर किसी से पूछेंगे, कि भाई, आप खुशहाल तो हैं, तो कहेंगे, भाई वैसे तो खुश हैं, परन्तु मन में शान्ति नहीं है।

विचार करने की बात है कि जिस व्यक्ति के मन में शांति नहीं है, तो दूसरी सभी सम्पति हुई तो भी क्या हुआ ? जिस व्यक्ति के मन में शान्ति न हो, उसे नींद नहीं आती हो, शरीर रोगी हो, मन में चिन्ताऐं हों तो उस व्यक्ति के धन–पदार्थ किस काम के हुए ? उसके मकान–गाड़ियां किस काम की हुई?

"जय श्री कृष्ण" इन सभी बातों का योग तब होगा जब हम अपने हृदय को शुद्ध रखेंगे। अपने मन में दूसरे ख्याल और संसारी बातों को उत्पन्न नहीं होने देंगे तो ही हमें फायदा होगा और प्रभु परमात्मा का मिलन होगा। हरिजन लोगों के घर में मरी हुई बिल्ली पड़ी हो तो भी वे वहाँ बैठ जाऐंगे परन्तु किसी बड़े आदमी के घर में थोड़ा सा कचरा भी पड़ा होगा तो भी वह उठाकर बाहर फेंकेगा।

हम भी ऐसा अन्याय करते हैं जो कि, जहाँ अनन्त लोकों के मालिक हमारे भगवान का स्थान है, वहाँ हमने संसारी ख्यालों और संसारी मनुष्यों को बिठाया है तो भगवान कैसे आकर बैठेंगे ?

वह स्थान इतना पवित्र, शुद्ध और निर्मल होना चाहिए कि जो भी देखे उसका मन आनंदित हो जावे और हमारे प्रभु परमात्मा भी अपने आप आकर विराजमान हो जाऐं। **प्रस्तुति–कुमारी पिंकी लालवाणी, बड़ौदा**

अप्रैल 2002 से अप्रैल 2003 तक आचार्य श्री की पावन चौथ तिथि

18	अप्रेल	2002	गुरुवार
17	मई	2002	शुक्रवार
16	जून	2002	रविवार
15	जुलाई	2002	सोमवार
14	अगस्त	2002	बुधवार
12	सितम्बर	2002	मंगलवार
12	अक्टूबर	2002	शनिवार
10	नवम्बर	2002	रविवार
10	दिसम्बर	2002	मंगलवार
08	जनवरी	2003	बुधवार
07	फरवरी	2003	शुक्रवार
08	मार्च	2003	शनिवार
07	अप्रेल	2003	सोमवार

26 मई जन्मोत्सव पर विशेष

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज जीवन–दर्शन

–आलेख : गोविन्दराम 'माया', जयपुर

सच्चिदानन्दाघन परब्रह्म परमात्मा सब प्रकार से सदा सर्वदा परिपूर्ण है। यह जगत् भी परब्रह्म परमात्मा से पूर्ण है, क्योंकि यह पूर्ण (जगत्) उस पूर्ण (परब्रह्म परमात्मा) से उत्पन्न हुआ है। पूर्ण (परब्रह्म परमात्मा) से जो उत्पन्न होता है वह भी पूर्ण (जीव व जगत्) होता है तथा जो बचा रहता है वह भी पूर्ण (परब्रह्म परमात्मा) ही बचा रहता है।

अर्थात् इस सृष्टि में सर्वत्र पूर्ण (परब्रह्म परमात्मा) ही व्याप्त है, इसीलिए कहते हैं, **'ओम् तत् सत्'** यह वेदांत का पहला महावाक्य है। वेदांत का दूसरा महावाक्य है, **'तत्वमसि'** अर्थात् तू ही तू (परब्रह्म परमात्मा ही परब्रह्म परमात्मा)। वेदांत का तीसरा महावाक्य है, **'सोहम्'** अर्थात् वो (परब्रह्म परमात्मा) मैं हूँ। वेदांत का चौथा महावाक्य है, **'अहंब्रह्मास्मि'** अर्थात् मैं ही ब्रह्म (परब्रह्म परमात्मा) हूँ।

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी अपने प्रवचनों से वेदांत दर्शन के गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाने का प्रयास करते थे। वे कहते थे कि जीव तो साक्षात् परमात्मा का अंश है। नित्य प्राप्त परमात्मा तत्व के साथ उसका (जीव का) नित्य योग है, परन्तु संसार अविद्या के आवरण से ढका हुआ है। जीव की दृष्टि स्वयं स्वरूप ''आत्म तत्व'' पर कभी जाती ही नहीं और यदि कभी चली भी जाये तो वह स्थिर रहती नहीं।

जीवन में यदि स्वयं को जानने की उत्कण्ठ इच्छा जाग्रत हो जाये तो यह सम्भव है कि जीव में समता आ जाए और उसकी दृष्टि स्वयं स्वरूप, नित्य उपलब्ध, आत्म तत्व पर स्थिर बन जाये।

अवतरण एवं बाल्यकाल :

परम् पूज्य सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी का अवतरण विक्रम सम्वत् 1987 के वैसाख मास की सिन्धी तारीख 13 अर्थात् 30 मार्च, 1930 को माता श्रीमती मोतिल बाई के पावन आंगन में सिन्ध प्रांत के छोटे से गांव, ''घुण्डन'' में हुआ।

स्वामी जी के पिता श्री हीरानन्द जी सेवाभावी धर्मभीरू सरल स्वभाव के संत पुरुष थे। स्वामी जी के दो भाई थे, बड़े का नाम श्री रतनलाल जी एवं छोटे का नाम सन्त ज्ञानप्रकाश जी था। सन्त ज्ञानप्रकाश जी अमरापुर स्थान, जयपुर पर रहते थे, वे तबला बजाने में निपुण थे।

स्वामी जी का लालन पालन भक्तिमय वातावरण में हुआ। माता मोतिलबाई परम् पूज्य सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की बहिन थीं, अर्थात् सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी के मामा थे। स्वामी जी बचपन से ही अपने माता पिता के साथ टन्डा आदम, अमरापुर दरबार (सिन्ध में) में आचार्य ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दर्शनार्थ जाते थे, सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम् तेजस्वी मुख मण्डल का दर्शन एवं स्वरूप आखिरी श्वास तक उनके स्मरण में रहा।

युवावस्था :

स्वामी जी ने जब 17 वर्ष पार कर 18 वें वर्ष में प्रवेश किया उस समय देश स्वतंत्र होने की तैयारी कर रहा था। देश की स्वतंत्रता के लिए सबसे बड़ा बलिदान सिन्धी समाज को देना पड़ा। उन्हें न केवल अपनी जमीन–जायदाद, रोजगार धंधे छोड़ने पड़े बल्कि अपनी जननी जन्मभूमि से सदा सदा के लिये विदा होना पड़ा। सिन्धी समाज की स्थिति विभाजन के समय ऐसी थी जैसे हरे भरे वृक्षों को एक जमीन से उखाड़कर दूसरी जमीन पर पटक दिया गया हो। ऐसे समय में सन्तों का आशीर्वाद ही एक सहारा था। संतों के आशीर्वाद एवं कड़ी मेहनत से सिन्धी पुरुषार्थी

समाज शरणार्थी से परमार्थी बना है।

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज विभाजन के समय अपने पिता श्री हीरानन्द जी के साथ राजस्थान के अलवर जिले के गांव हरसोली में आ गए। यहाँ पर श्री हीरानन्द जी बीड़ी बांधने एवं खेती का काम करते थे। स्वामी जी भी अपने पिता के साथ बीड़ी बांधते एवं खेती के काम में हाथ बंटाते थे।

दीक्षा एवं गुरु सेवा :

सन् 1954 में स्वामी माधवदास जी द्वारा आदर्शनगर, अजमेर में आयोजित सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के वर्सी उत्सव में स्वामी जी ने सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की दिव्य आभा के दर्शन पाकर अपना सारा जीवन गुरुचरणों में समर्पित करने का निश्चय कर लिया। माता–पिता से आज्ञा लेकर स्वामी जी सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के साथ हरिद्वार चले गये। दो माह तक हरिद्वार में सेवा करने के बाद स्वामी जी अमरापुर स्थान, जयपुर आ गए।

उन दिनों अमरापुर स्थान जयपुर का निर्माण कार्य सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी की देखरेख में चल रहा था। यहाँ स्वामी जी ने गुरुचरणों में सेवा की तथा सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज से दीक्षा लेकर गुरु सेवा एवं भक्ति में लीन रहे।

प्रातःकाल सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज के उठने से पहले ही स्वामी हरिदासराम जी उठ जाते, उनके दांतुन एवं स्नानादि की व्यवस्था करते। उन्हें दवाई देते, ज्यूस देते, कपड़े धोते, बिस्तर लगाते एवं सत्संग में उनके साथ बाजा बजाते, उनके साथ स्वर मिलाकर भजन गाते। दोपहर भोजन के समय वे स्वयं गुरु महाराज जी की थाली कटोरी लेकर भण्डारगृह से फीकी सब्जी एवं बिना चुपड़ी रोटियां लाकर गुरु को भोजन खिलाते, भोजन खिलाकर उनकी थाली से सबको प्रसाद वितरित करते तत्पश्चात् उसी थाली में स्वयं भोजन करते थे।

स्वामी हरिदासराम जी आलस्य और गफ़लत से कोसों दूर थे। आप कड़े अनुशासन का पालन करते एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करते थे।

स्वाध्याय एवं शास्त्र प्रकाशन :

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी स्वयं स्वाध्याय करते थे तथा ओरों को भी शास्त्राध्ययन के लिये प्रेरित करते थे। स्वामी जी ने 1974 में प्रेमप्रकाश ग्रन्थ की सुन्दर छपाई के लिए पूरा योगदान दिया। स्वामी जी ने अमरापुर वाणी (हिन्दी व सिन्धी), चूड़ाला शिखर ध्वज, यमराज नचिकेता, वामनबली, दोहावली, ब्रह्मदर्शनी, गुरुमुख दोहावली, भजनावली, सद्गुरु टेऊँरामजी जीवन चरित्र आदि के प्रकाशन में बड़ा योगदान दिया।

स्वामी जी ने साक्षी दर्शन का एवं सद्गुरु टेऊँराम जी जीवन चरितामृत का हिन्दी अनुवाद किया, सद्गुरु सर्वानन्द जीवन चरित्र एवं अमरापुर दर्शन पुस्तकों का संकलन करके सम्पादन किया। स्वामी जी ने सद्गुरु टेऊँराम जी एवं सद्गुरु सर्वानन्द जी महाराज के महिमा के भजनों की रचना की।

स्वामी जी की आज्ञा से ही प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का सिन्धी लिपि में प्रकाशन हुआ, जिसका विमोचन स्वयं स्वामी जी ने चैत्र मेला 2000 में किया।

नाम रूप का भेद :

21 जुलाई, 1977 को सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के अमरापुर धाम पधारने पर सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज 4 अगस्त 1977 को गुरु गद्दी पर विराजमान हुए तथा सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के 15 अगस्त 1992 को अमरापुर धाम पधारने पर 30 अगस्त 1992, को सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज गुरु गद्दी पर विराजमान हुए तथा श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के चतुर्थ पीठाधिपति बनाये गये।

सद्गुरु श्री हरिदासराम जी महाराज वेदांत दर्शन की सरल शब्दों में व्याख्या करते थे। आप समझते थे कि यह सारी सृष्टि पूर्ण परमात्मा से उत्पन्न है तथा सर्वत्र वही सर्वव्यापक, सर्वसमर्थ, सर्वकालिक परमात्मा

ही विराजमान है, केवल नाम रूप का भेद है।

सद्गुरु महाराज जी उदाहरण देकर समझाते थे, जैसे सोने के कंगन, हार, अंगूठी, बाली या अन्य जेवर में केवल सोना ही सोना व्याप्त है, किन्तु रूप (आकृति) एवं नाम के भेद के कारण ही जेवर को अलग–अलग जाना जाता है। जेवर बनने से पूर्व सोना था, जेवर स्वयं भी सोना है तथा गलकर पुनः नया जेवर बनने के बाद भी वह सोना ही रहेगा, ऐसे ही सृष्टि के निर्माण से पूर्व भी परमात्मा ही व्याप्त थे तथा सृष्टिकाल एवं सृष्टि के अंत में भी परमात्मा ही परमात्मा व्याप्त हैं व रहेंगे। सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी एक और उदाहरण देते थे, जैसे, रजाई कपड़े से बनती है तथा कपड़ा धागे से बनता है और धागा कपास से बनता है। अतः रजाई, कपड़े, धागे व कपास से बनी प्रत्येक वस्तु में कपास ही कपास व्याप्त है। जीव स्वयं ब्रह्म है मृत्यु के पूर्व ब्रह्म था तथा मृत्यु के बाद भी ब्रह्म ही रहेगा। यही अद्वैतवाद अर्थात् पूर्ण ज्ञान है।

इन उदाहरणों को समझ लेने के बाद जीव जीव में तो क्या, जीव निर्जीव में भी कोई भेद नहीं रहेगा तथा कण कण में परमात्मा का दर्शन होगा। यही मोक्ष है, यही मुक्ति है, ऐसा होने पर मनुष्य अचाह हो जाता है तथा वह सभी में प्रभु को व्याप्त मानकर जीव, पर दया करता है तथा सच्चे दिल से सभी की सेवा करता है, इससे आदमी का अहंकार गल जाता है, उसके लिये कोई सेवा अच्छी बुरी नहीं होती है।

अंतिम यात्रा :

परम पूज्य सद्गुरु स्वामी जी ने जिस वेदांत दर्शन को वाणी से समझाया उसको अपने आचरण में भी उतारा अर्थात **उनका आचरण ही उपदेश था**। 15 जुलाई शनिवार, 2000 को गुरुपूर्णिमा से पूर्व सद्गुरु महाराज जी ने विद्यार्थियों से दरबार की सफाई करने को कहा। नागपुर से मेहमान आने वाले थे। विद्यार्थियों ने कमरों की सफाई तो कर दी किन्तु स्नानघर तथा शौचालय साफ नहीं किये। महाराज जी समझ गये कि विद्यार्थी सेवा के इस काम को छोटा काम या बुरा काम समझते हैं तब उन्होंने स्वयं झाड़ू लेकर यह कार्य करना आरंभ कर दिया, यह देख विद्यार्थियों की आंखों में आंसू आ गए तथा उन्हें तत्वज्ञान हुआ। इस प्रकार गुरुदेव ने अपने आचरण से अनेक पर तत्वज्ञान का उपदेश दिया।

महान तत्वज्ञानी, कर्मनिष्ठ, अहंकार रहित सर्वकालिक, सर्वसमर्थ, सर्वव्यापक, अचाह परम् पूज्य सद्गुरु महाराज जी 26 अगस्त 2000 को प्रतिदिन की भांति अमृत वेला में उठकर स्नानादि कर ध्यान में बैठे बैठे अपने आचार्य परम पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्री चरणों में विलीन हो गये। जोत् परम् जोत् में समा गयी। स्पेन का लान्सरोते नामक नगर ज्योति जोत् समाने के इस पावन दृश्य का साक्षी बना।

2 सितम्बर, 2000 शनिवार के पवित्र दिन को प्रातः 11 बजकर 10 मिनट 10 सेकण्ड पर परम् पूज्य गुरुदेव स्वामी श्री हरिदासराम जी महाराज की स्थूल देह को हरिद्वार में सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द स्मृति स्थल (घाट नं. 10) से पतित पावनी माँ भागीरथी में विसर्जित किया गया। साकार निराकार में, सर्गुण निर्गुण रूप में परिवर्तित हो गया। उस निर्गुण निराकार कृपा सिन्धू की कृपा सभी पर कायम है।

धारावाहिक–1

आचार्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित
सोलह शिक्षाऐं (सिन्धी देवनागरी लिपि में अर्थ सहित)

पहिरीं सिख्या

समस्त वेद पुराणों का सार 'सोलह शिक्षाऐं' आचार्य श्री सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने लोक कल्याण के लिये अत्यन्त सरलतम भाषा में जगत को व्यवहारिक–पारमार्थिक जीवन के लिये 'सोलह शिक्षाओं' की रचना की। जो कि अपने आप में अद्भुत विलक्षण गूढ़ अर्थों को लिये हुए एक–एक अक्षर, एक–एक पंक्ति हमें ज्ञान का संदेश करती है। ऐसी महानतम् गूढ़ वाणी को अपनी लेखनी द्वारा जयपुर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार गोविन्दराम 'माया' समझाने का प्रयास कर रहे हैं।

आदि फल वीचार के तुम, कर पीछे सब काम जी।
ये वचन मन माहिं धारे, पाय सुख आराम जी।।

सत्गुरु महाराज जी पहिरीं सिख्या आहे त को बि कमु करण खाँ पहिरीं उनजे फल ते वीचारु करण घुरिजे, जेको माण्हू मन में इऐं सोचे पोए को कमु करे थो उनखे सुख ऐं आराम मिले थो।

सत्गुरु महाराज चवनि था त कर्म करण खां पहिरीं फल ते वीचार कयो। हिकु थींदो आहे फल ते वीचार करण ऐं ब़ियो थींदो आहे फल जी कामना करण। विचार इहो करणो आहे त पंहिंजे कर्म सां ब़िए जो नुकसान न थिए, कंहिंजो मन न दुखे, पंहिंजे मन में न त को रागु पैदा थिए ऐं न ही को द्वेष।

भगवान श्री कृष्ण गीता में जंहि कर्म जे फल जी ग़ाल्ह कई आहे उहो असांजे हथ में नाहे। उनजी असांखे चिंता बि न करण खपे।

सत्गुरु महाराज जहिं फल जी ग़ाल्ह कनि था उहो इंसान कर्म करण खां पहिरीं सोचे, हुनजे कर्म सां उनजो असरु ब़ियनि जे मथां कहिड़ो थो पवे ऐं संदसि मन में को राग़ या द्वेष त पैदा कोन थो थिए। कंहिंजो भलो करण सां बि मन में अहंकार रूपी रागु पैदा थी सघे थो।

अगर इंसान उहो कर्म करे जंहिंसा हुनजे मन में को रागु (असक्ति) पैदा न थिए ऐं न ही कंहिंजे प्रति का द्वेष भावना थिए ऐं हुनजे वीचार में उन कर्म सां कंहिंजो बुरो बि कोन थींदो, त पोइ उहो कर्म निष्काम कर्म बणिजी पवंदो।

जेको माण्हू मथे बुधायल सिख्या मूजिब राग़–द्वेष रहित निष्काम कर्म करण जो वीचार मन में रखे थो उहो सुख ऐं आराम पाए थो।

हिते सुख ऐं आराम जो अर्थ गूढ़ आहे। इनजो अर्थ को दुनियावी सुख नाहे। दुनियावी सुख खां पोइ आराम कोन मिलंदो आहे। दुनिया जो कहिड़ो बि सुख हुजे जद॒हिं हू शुरू थींदो आहे तद॒हिं वधीक मज़ो ईंदो आहे ऐं धीरे–धीरे मज़ो घटिबो आहे ऐं आखिर में सुख खां पोए दुःख ईंदो आहे। इन सुख ऐं दुःख जो ही कुचक्र अग़िते हली करे इंसान खे राग़ ऐं द्वेष रूपी कर्म ब॒ंधण में ब॒धी चौरासीअ जा चकर हणाईंदो आहे, पर निष्काम कर्म करण खां पोए जेको शांति आनंद मिलंदो आहे उहो घटिबो कोन आहे ऐं इनसां नओं ब॒ंधण बि कोन ब॒धिबो आहे।

निष्काम कर्म करण खां पोइ इंसान खे जेको सुख ऐं आराम मिले थो उहो हकीकत में मोक्ष आहे। निष्काम कर्म खां पोइ काम, क्रोध, लोभ मोह ऐं अहंकार रूपी पंज विकार हमेशा हमेशा वास्ते शांत थी वेंदा आहिनि।

जेको इंसान कर्म करण खां पहिरीं विवेक रूपी सोझरे में कर्म जे फल ते मथिए नमूने वीचार करे सत्गुरु महाराजनि जी पहिरीं सिख्या ते अमल कंदो हुनखे मोक्ष रूपी सुख आराम यानि सद्चित आनंद जरूर मिलंदो।

प्रस्तुति–गोविन्दराम माया, जयपुर

एक कहानी

टूरिस्ट–दर्शन

–सुरेश के. अजवानी, सिवनी

दक्षिण–भारत के 'श्रीरंगम' शहर के एक भव्य मंदिर के मुख्य द्वार के पास खड़े थे हम। मेरे साथ मेरे अन्य तीन दोस्त और थे। और साथ में मेरा एक भाई भी था। मंदिरों की संख्या के बारे में यदि अनुमान लगाया जाए तो 'दक्षिण–भारत' पूरे विश्व में अव्वल नम्बर पर आएगा। लगता है प्रभु की विशेष कृपा है यहां। पूजा–पाठ के कारण यहां के लोगों में अनुशासन व ईमानदारी भी ज्यादा है। **रामेश्वरम्, कांचीपुरम, मीनाक्षी–मंदिर मदुराई,** व कई अन्य छोटे–बड़े मंदिरों के दर्शन के पश्चात् आज हमारी यात्रा का अंतिम स्थान **'श्रीरंगम'** जो कि दक्षिण–भारत के तमिलनाडु राज्य के तिरूचापल्ली जिले में ही है। श्रीरंगम में **'विष्णु–भगवान'** की भव्य प्रतिमा है। तमिल–भाषायी लोग **'विष्णु–भगवान'** को **'श्रीरंगनाथ स्वामी'** भी कहते हैं। मंदिर के थोड़ी दूरी पर ही **'कावेरी–नदी'** का दर्शन होता है। जहां पर **'अम्मामंडपम'** नामक स्थान पर एकादशी व अमावस्या व अन्य प्रमुख त्यौहारों के समय स्नानों व पूजा–पाठ के लिये आयी विशेष भीड़ देखने को मिलती है। वास्तव में देखा जाये तो नदियों का आध्यात्मिक महत्व आज भी उतना ही विद्यमान है, जितना पहले हुआ करता था। **'श्रीरंगम'** का वातावरण एक अनोखा आनंद प्रदान करता है। मंदिर के प्रवेश के पहले **'गोपुरम'** के दर्शन का भी उतना ही फल मिलता है। "चलो यार गेट खुल गया" मेरे दोस्त ने मेरा ध्यान प्रवेश की ओर करते हुए कहा। मैं उस भव्य मंदिर की बाहरी छटा देख रहा था। वाकई इस भव्य मंदिर का निर्माण आज के इस युग में नामुमकिन सा ही है। इस तरह के मंदिर प्रभु की शक्ति को समझने के लिये मजबूर कर देते हैं, एक नास्तिक व्यक्ति की सोच को चैलेंज के लिये ये काफी हैं।

मेरे बेल्ट में 'कैमरा लगा हुआ था। मेरे एक दोस्त के पास एक छोटा सा वीडियो कैमरा भी था। एक अन्य दोस्त के पास एक बड़ा हैण्ड बैग था जिसमें कुछ स्वीट्स, नमकीन व बिस्किट्स पानी वगैरह थे, भगवान के दर्शन के लिए आए हुए हम लोगों के पास मंदिर में भी एक छोटा–सा खाने–पीने का संसार साथ था। दर्शन के लिये एक लम्बी क्यू लगी थी। एक क्यू **"फ्री–दर्शनम्"** के लिये थी और एक **"पे–दर्शनम्"** के लिए। हम लोगों को तो **'टूरिस्ट–दर्शन'** करना था। हमारी यह आध्यात्मिक व धार्मिक यात्रा थी जरूर, मगर थी 'टूरिस्ट यात्रा अतएव हम 'पे–दर्शन' की क्यू में खड़े थे। क्यू में खड़े अन्य दर्शनार्थी **'श्री रंगनाथ'** भगवान की जय–जयकार कर रहे थे। मैं कभी छत को देखता कभी मंदिर के पिलरों को कभी आर्ट को तो कभी कभी भीड़ को। और इस तरह हमारा नम्बर भी अन्ततः **'भगवान'** के दर्शन के लिए आ ही गया।

'शेषनाग पर शयन करते श्री विष्णु–भगवान की भव्य प्रतिमा को देखकर लगता है वाकई 'भगवान' सचमुच सो रहे हैं।' पूजा का सामान पुजारी को देकर प्रसाद लेकर दर्शन करके हम बाहर आ गये और हमारे बाद दर्शन के लिये दूसरे व्यक्तियों का नम्बर आ गया। दर्शन के पहले क्यू में दो घंटे खड़े होने के पश्चात एक–मिनट में दर्शन करके बाहर आना ऐसा लगता था जैसे हम भगवान को देखने गये थे। दर्शन करने नहीं। दर्शन और देखने में काफी अन्तर है। इसका आभास हमें करवाया एक शख्स ने। एक महापुरुष ने।

उस महान–पुरुष का नाम है 'गोपीलाल जे. निचानी' जो कि मद्रास के निवासी हैं और हमेशा की तरह इस बार भी वे अपनी पंद्रह–दिवसीय **'श्रीरंगम'** यात्रा पर थे। और **'विष्णु–भगवान'** के उस भव्य मंदिर में हमारी ही क्यू में हमसे पहले लगे हुए थे। मगर

वे लौटे काफी समय के बाद। वे साईड में खड़े होकर विष्णु–भगवान जी के दर्शन में ऐसे ध्यानस्थ थे जैसे एक बेटा काफी समय के बाद आकर अपने पिता से मिलता है।

'अंकल' आप तो हमारी ही क्यू में हमसे पहले खड़े थे मगर आप अभी वापिस आ रहे हैं' मैनें उनसे बातचीत के दौरान ये बात कही।

मेरी बात पे वो थोड़ा 'हंसे' फिर उन्होंने हमें बताया कि **"मैं अपने पिता से मिलने आया हूं और आप सिर्फ भगवान से"**

उनकी इस बात को हम समझ न पाये। अतः मेरे एक दोस्त ने पुनः उनसे सवाल किया। 'अंकल आप कहते हैं आप अपने 'पिता' से मिलने आए हैं हम समझे नहीं।'

'देखो ये 'श्रीरंगनाथ' (विष्णुभगवान) मेरे पिताश्री हैं, जिस तरह एक पुत्र अपने पिता से मिलने की इच्छा रखता है, दूर रहने पर तड़प रखता है बात करने की अभिलाषा रखता है और कुछ पूछने की जिज्ञासा रखता है ठीक वैसी ही तड़फ, वैसी ही इच्छा और जिज्ञासा व अभिलाषा मुझे भी होती है। 'दर्शन' की। मैं हर पंद्रह दिन में अपने 'पिताश्री' से मिलने जरूर आता हूँ यहाँ। 'भगवान से मिलने की उसके दर्शन की ऐसी तीव्र अभिलाषा होनी चाहिए ऐसी तड़फ होनी चाहिए कि बस हम भगवान को देखते ही रहें। 'उन्होंने कहा तुम लोगों की यह 'टूरिस्ट–दर्शन' भावना है बेटा' 'श्री गोपालीलाल जे. निचानी' के वाक्य थे। 'मैं तुम्हें बताता हूं कि भगवान के दर्शन के लिये क्या जरूरी है।' और उसके बाद उन्होंने हमारे जिज्ञासापूर्ण चेहरे को पढ़कर हमें मंदिरों की महत्ता, नदियों की महत्ता व भगवान के दर्शन के समय 'मन की भावनाओं से संबंधित काफी रोचक व महत्वपूर्ण जानकारी दी। गोपीलाल जी का कहना था–'मंदिर में हम क्यूं आते हैं ? क्या भगवान को देखने के लिये या ये प्रदर्शन करने के लिए कि भगवान हमें देखें कि हम आए हैं। नहीं। **मंदिर में लेकर आना चाहिए एक तड़फ** ऐसी तड़फ जिसमें भगवान के दीदार का इंतजार हो, उसके दर्शन की तीव्र अभिलाषा हो' मगर हमारे पास तो कैमरे थे, खाने पीने की चीजें थीं। और थी क्यू में भी सांसारिक बातें। भगवान के दर्शन के समय भी हम संसार की अभिलाषा ही लेकर चल रहे थे। जिस तरह कोई पर्यटक, पर्यटन पर निकलता है। व प्रकृति व अन्य चीजों यात्रा आदि का आनंद लेता है। ठीक वही आनंद हम भी ले रहे थे। मगर गोपीलाल जी ने कहा किहमें ये आनंद नहीं लेना चाहिए जब हम भगवान के दर्शन के लिए यात्रा पर निकलते हैं तो हमें भगवान के दर्शन के समय सांसारिक सामान सांसारिक भावनाऐं नहीं होना चाहिए। 'हममें दर्शन की तीव्र–इच्छा, भगवान के दर्शन की अभिलाषा, व जिज्ञासा होनी चाहिए।' पुनः एक बार फिर से हम गोपीलाल जी के साथ थे। इस बार क्यू में खड़े होकर हम मंत्र–जाप कर रहे थे। 'विष्णु सहस्त्रनाम' जप रहे थे। हमने अपने 'कैमरे' खाने–पीने वगैरह के सभी सामान के बैग बाहर एक शॉप पर रख दिये। जिस तरह जूते–चप्पल व चमड़े की वस्तुओं का बाहर ही त्याग करके मंदिर के भीतर प्रवेश किया जाता है। ठीक उसी तरह सभी सांसारिक व्यर्थ बातों को हमने मन से निकाल दिया था। इस बार 'भगवान' के दर्शन के आगे बढ़ते हुए एक असीम अनोखा आनंद हृदय को मिल रहा था। एक तड़फ थी भगवान से मिलने की मन में। और जिज्ञासा थी कुछ पूछने की भगवान से एक खुशी थी भगवान के पास जाने की तो एक अनोखा आनंद था भगवान से कुछ कहने का साथ में थी एक अभिलाषा 'भगवान' से 'कुछ' मांगने की।

'भावनाओं से ही ये संसार व्यवस्थित है। और भावनाओं से ही संबंधित है ईश्वर की आराधना । हमारी भी भावनाऐं ईश्वर उस समय समझ रहे थे। इस कारण जब पुनः दुबारा गोपीलाल जी के साथ दर्शन करने पर' श्री विष्णु भगवान की वो प्रतिमा,

प्रतिमा न लगकर ऐसे आनंद दे रही थी। जैसे भगवान साक्षात सो रहे हैं, और सोकर मुस्करा रहे हैं। एक विशाल शेषनाग पर सोये श्री विष्णु भगवान सोते हुए भी हमें देख रहे थे लेटे हुए भी हमें अपने चरणों में जगह देने के लिए बुला रहे थे और अपनी मुस्कान के द्वारा यही कह रहे थे कि 'देखो मैं तो सोया हूं मगर मेरी सृष्टि चल रही है।' मन में उठी इसी जिज्ञासा का जवाब अन्तरात्मा में मुझे उसी समय भगवान ने दे दिया कि 'हे प्रभु तुम तो सोये हो मगर तुम्हारे इस विशाल ब्रह्माण्ड को कौन चला रहा है।' और वो जवाब था प्रभु का मुस्कराते हुए ''वत्स मेरी इस विशाल और असीमित सृष्टि को मेरी 'माया' नियंत्रित करती है। कैसा गहरा व अनोखा जवाब था। प्रभु का जो शायद इस जन्म में तो क्या किसी भी जन्म में मुझे न समझ आता, यदि मैं गोपीलाल जी के कहने पर दुबारा दर्शन के लिए न जाता तो। ये दर्शन हमारा 'टूरिस्ट' दर्शन नहीं था ये दर्शन था एक पुत्र का पिता से मिलन' मैंने पीछे मुड़कर देखा हमारी क्यू में हम ही लोग अंतिम थे उसके बाद मंदिर का समय दर्शन के लिये 'शाम' को था। ये थी लीला प्रभु की इस बार हमें पुजारी जी ने जल्दी जाने नहीं दिया। हम खड़े थे प्रभु सो रहे थे मुस्करा रहे थे शेषनाग अपने फुंफकारते फन लेकर प्रभु के ऊपर छाया कर रहे थे। प्रभु ने हमें ये नहीं कहा इस बार 'नेक्स्ट' (Next) हम खड़े ही थे। 'दर्शन' की भावनाएं इस बार बदली हुई थीं हमारी। इसलिए प्रभु की 'कृपा' भी 'विशेष' थी इस बार हमारी 'टूरिस्ट–दर्शन' की सोच निकल चुकी थी दिमाग से। अब हमने अपने मन में प्रभु के दर्शन का वास्तविक आनंद प्राप्त कर लिया था। 'दर्शन' के बाद हम बाहर आ गये गोपीलाल जी ने स्वयं एवं हमसे भी बाहर बैठे 'गरीब' मांगने वालों को दान दिलवाया हमने स्वीट्स व अपना सभी सामान उन लोगों को खिलवाया। और मंदिर के **'गोपुरम'** का दर्शन करके गोपीलाल जी के साथ अगले दर्शन के लिये निकल पड़े। वो था 'माता' का दर्शन 'कावेरी' माता का। 'कल–कल' करती तेज प्रवाह लिए 'कावेरी–नदी' में स्नान ऐसा आनंद दे रहा था जैसे माँ हमें अपनी गोद में बिठा रही है।' वो स्थान था **'श्रीरंगम' का अम्मामंडपम**। पुनः अम्मामंडपम पर ब्राह्मणों वगैरह को दक्षिणा देकर पूजा पाठ कराके हम दरिद्रनारायण की सेवा में लगे थे। शाम का सूर्य अलविदा कह रहा था। और हमने भी श्री गोपीलाल जी से विदा ली अपने अगले 'टूरिस्ट–दर्शन' नहीं 'सच्चे–दर्शन' के लिये।

पुस्तक समीक्षा

ब्रह्म दर्शनी

चतुर्थ नया संस्करण

''ब्रह्म दर्शनी'' पुस्तक मंगलमूर्ति आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का एक छोटा अंश है जैसा इस पुस्तक का नाम है वैसा ही गुण है **''यथा नाम तथा गुण''** इसमें पूरा ब्रह्मज्ञान भरा हुआ है। हर प्रकार की प्रार्थनादि पच्चीस दशपदियाँ हैं। जिसके पढ़ने सुनने मनन एवं निदिध्यासन करने से ब्रह्म का साक्षात बोध होता है। मन निर्मल होकर ध्यानस्थ हो जाता है। इस ब्रह्मदर्शनी पुस्तक के प्रतिदिन साधारण पाठ करने से मन को शान्ति मिलती है एवं ग्रन्थ का अनुष्ठान करने से मनोकामना भी पूर्ण होती है।

अतः नित्य प्रति नियम पूर्वक स्नान करके प्रातःकाल श्रद्धा प्रेम से इसका पाठ करके अपने मानव जीवन को सार्थक बनावें।

पूर्व में प्रकाशित संस्करण समाप्ति पर अब नया साज–सज्जाकर ब्रह्माण्ड स्वरूप आवरण पृष्ठ छपवाकर तैयार किया गया है। इसका मूल्य मात्र 10 रूपये है।

ब्रह्मदर्शनी ज्ञान बतावे, पांचों भेद भान्ति मिटावें।
ब्रह्मदर्शनी ब्रह्म दिखावे, सुख स्वरूप में सहज समावे।
ब्रह्मदर्शनी भव सिन्धु तारे, पाप ताप सन्ताप निवारे।
ब्रह्मदर्शनी जो नित पढ़ता, बन्धन काट होय सो मुक्ता।
ब्रह्मदर्शनी धारे जोई, ''टेऊँ'' सब फल पावे सोई।।

पूर्व में इसी ब्रह्मदर्शनी पुस्तक को 5 कैसेट सेट के रूप में तैयार किया गया था। नये बॉक्स समेत 5 कैसेट सेट व ब्रह्मदर्शनी पुस्तक मात्र 100/–रूपये में उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थल : श्री अमरापुर स्थान, एम. आई. रोड, जयपुर (राज.)
फोन : 372424, 372423

अन्य प्राप्ति स्थल : बडौदा, अजमेर, खैरथल, दिल्ली, कोटा, इन्दौर, हरिद्वार, ग्वालियर, सभी आश्रमों पर उपलब्ध है।

विधि का विधान

दुख में छुपा सुख–कण में छुपा मण'

एक महिला के पतिदेव की जिन्दगी के दिन पूरे होने पर मृत्युदेव का बुलावा आ गया और वो चल बसा। उस महिला की तीन लड़कियाँ थीं–तीनों छः महीने की उम्र की एक साथ जन्मी हुईं। किस्मत और ज़माने की मारी हुई वो महिला शहर के बाहर रास्ते पर गिर गयी और प्राण पखेरू उड़ गये। मृत्युदेवता ने अपने किसी दूत को भेजा उसके प्राण लेके आने को। जब दूत वहां पहुंचा तो महिला को बेहोश पाया और उसी वक्त उन तीनों मासूम लड़कियों को भी देखा। दूत को करूणा आ गयी और सोचने लगा कि मैं अगर इस महिला को ले जाऊँ तो कौन इन मासूम बच्चियों को देखेगा। मैं इतना ज़ालिम नहीं ये सोचके इस महिला के प्राण लिये बगैर ही चला गया। यमराज ने जब कारण पूछा तो जो कुछ दूत ने महसूस किया था कह सुनाया।

विधाता का विधान अटल है न टल सकता है न बदल सकता है। इसलिये उस दूत को आज्ञा न मानने के लिये सजा मिली और दूसरे दूत को उस महिला के प्राण ले आने के लिये भेजा गया। उस दूत की सज़ा ये थी कि उसे मृत्यु लोक में जाके तब तक रहना पड़ेगा जब तक कि वो तीन बार हंस नहीं लेता। उसे उस महिला पर दया आयी और ईश्वर पर संदेह हुआ जो कि दयालू माना जाता है, कृपालू जाना जाता है। उसने अपने को ईश्वर से ज्यादा दयालू समझा और ईश्वर को करूणा रहित।

जब वो मृत्युलोक में भेजा गया तो उसे दूत के कपड़े भी न दिये गये और वहां नदी के किनारे दिगम्बर अवस्था में पड़ा रहा। उसी गांव में एक चमार रहता था और ठंडी के मौसम में बच्चों के लिये ऊनी कपड़े लेने जा रहा था। अचानक उसकी नज़र उस दूत पे पड़ गयी और उसे इस अवस्था में देखके उसे दया आयी और पूछा कि तुम कौन हो। उस दूत ने बताया कि वो एक रवाजी गरीब इन्सान है। उस चमार ने अपने बच्चों के कपड़े न खरीद कर उस दूत को कपड़े खरीद दिये और खाने के लिये भी पूछा तो दूत ने हाँ कहा। चमार उसे घर ले गया और रास्ते में बताया कि जब हम घर जायेंगे तो मेरी पत्नी जरूर रोयेगी, चिल्लायेगी कि मैं बच्चों के लिये कपड़े न खरीद कर तुम्हें कपड़े खरीद दिये। पर थोड़े टाईम के बाद वो ठीक हो जायेगी, ये तो स्त्रियों का स्वभाव होता है इसलिये तुम बुरा न मानना।

जब वो दोनों घर आये तो वही बात हुयी। चमार ने उसे बहुत समझाया पर वो न मानी और कहने लगी कि जिन पैसों से बच्चों के कपड़े आने चाहिये थे उनसे आपने इसे कपड़े लेके दिये उस में भी आपको संतोष न हुआ और इसे घर ले आये। हमें तो अपने खाने के लिये भी खाना नहीं है। अब इसे कहां से खिलायें। बस ये सुनना था कि दूत को बड़ी ज़ोर की हंसी आ गयी और सोचने लगा कि कैसी मूर्खता। चमार को अच्छा न लगा और कहने लगा कि तुम हंस रहे हो और मेरी पत्नी रो रही है उसे तो रोने का, चिल्लाने का कारण है। तुम्हें तो दया आनी चाहिये मेरी पत्नी पर किस कारण से तुम हंस रहे हो? दूत ने कहा कि अभी मैं नहीं बता सकूंगा जब तीन बार हसूंगा तब बताऊंगा।

तब चमार ने कहा कि इसका कारण जानने के लिये मैं तुम्हें अपने पास रखूंगा। दूत को उसकी किस्मत से खाना और रहने की जगह मिल गयी और वो वहां रहने लगा। कुछ दिनों के बाद दूत ने कहा कि मैं बैठे बैठे बेज़ार हो रहा हूं इसलिये तुम मुझे कुछ काम दे दो। चमार ने कहा कि मैं तुम्हें और क्या दे सकता हूं, मैं लोगों के जूते बनाता हूं तुम भी मेरे पास आके बैठो और सीखो। दूत ने वैसा ही किया अब दूत के वहां बैठने से चमार के व्यापार में बढ़ोतरी होने लगी–ये है (कण में छुपा मण)। चमार ने दूत को बहुत थोड़ा दिया पर दूत ने बहुत ज्यादा। चमार दुनिया का सबसे बड़ा शाहूकार आदमी बन गया, बड़े–बड़े धनी आदमी और राजे महाराजे उसके दुकान पर आने लगे जूते बनवाने के लिये।

एक बार रश्या के राजा का मंत्री उसके पास एक चमड़ा लेके आया राजा का बूट बनवाने के लिये और कहा कि इस किस्म का चमड़ा सिर्फ इतना ही है इसीलिए खबरदारी से बूट ही बनाना न कि चप्पल। जिस दिन मंत्री बूट लेने आये तो कहा कि अब हमें बूट नहीं चाहिये बल्कि चप्पल चाहिये चमड़ा तो और नहीं है बल्कि उसी में से

बनाओ। चमार ने दूत को कहा कि वो बूट ले आओ जब बूट का बक्सा खोल के देखा तो उसमें बूट नहीं बल्कि चप्पल थी इस पर मंत्री नाराज़ होने की बजाय बड़े खुश हुआ।

मंत्री से जब पूछा गया कि अब बूट की जगह चप्पल क्यों चाहिये तो उसने कहा कि हमारा राजा इस दुनिया में नहीं रहा और ये हमारे देश का रिवाज है कि जब राजा मर जाता है तो उसे सजाते हैं मगर बूट की जगह चप्पल पहनाते हैं। अब दूसरी बार दूत बड़े जोर से हंस पड़ा, पहली बार एक साल पहले हंसा था। चमार ने दूत से कारण पूछा हंसने का कि गल्ती के बावजूद, बूट बनाने की जगह चप्पल बनाने की गल्ती के बाद भी तुम हंस क्यों रहे हो तो दूत ने कहा कि जब मैं तीसरी बार हसूंगा तब इसका कारण बताऊंगा। चमार तो किसी घाटे में नहीं था वो दिनों दिन शाहूकार हो रहा था, इसी तरह दूत को वहां रहते रहते बीस साल हो गये।

बीस साल के बाद एक दिन एक रानी, अपनी तीन बेटियों के साथ उस दुकान पर आयी उनके लिये सैण्डल बनवाने को उनकी शादी के लिये। जब दूत ने उनके पैरों की नाप ली तीनों के पैरों की नाप एक ही थी, न सिर्फ इतना पर उनकी सूरत, लम्बाई, चौड़ाई, कद बुत सभी कुछ एक जैसा था। दूत की जिज्ञासा बढ़ गयी और उसे वो तीन लड़कियाँ, जिनकी माँ के प्राण लेने भेजा गया था बीस साल पहले, वो घटना उसे याद आने लगी और लगा पूछताछ करने। आखिरकार उस रानी ने उसे बताया कि मैंने इन लड़कियों को जन्म नहीं दिया है पर मैंने इनको अपना सारा लाड़ प्यार दिया है। एक बार मैं शहर से दूर किसी रास्ते से गुज़र रही थी तो देखा कि एक औरत मरी पड़ी है और ये तीनों लड़कियाँ रो रही थीं। हमें अपनी औलाद नहीं थी इसलिये भगवान का प्रसाद मान कर घर ले आयी और तबसे ये तीनों मेरे पास हैं और मेरी ही बच्चियां हैं—अब मैंने इनके लिये लड़के ढूंढ निकाले हैं और कुछ ही दिनों में ये शादी करके चली जायेंगी।

देवदूत यहां फिर पागलों की तरह हंसने लगा—तीसरी बार। चमार को बड़ा ही अचरज लगा कि तू बीस साल के बाद हंसा है और ये तीसरी बार है अब तो बताना ही पड़ेगा कि तुम पहली बार क्यों हंसे थे। देवदूत ने अब उसे बताया कि वो देवदूत है और मेरी वजह से ही तुम इतने बड़े शाहूकार हुये हो और जो कुछ थोडा तुमने मुझे दिया उस थोड़े में कितना तुम्हारे लिये छुपा था। मैं पहली बार इसलिये हंसा कि तुम्हारी पत्नी ने कहा कि 'हमें अपने खाने के लिये भी नहीं है और अब इसे भी खिलाना पड़ेगा।' उसने सोचा कि तुम या वो मुझे खिलायेगी बिल्कुल विश्वास नहीं भगवान में। मुझे उसकी मूर्खता पर बड़ी हंसी आयी, पहली बार।

दूसरी बार जब मंत्री राजा का बूट बनाने आया था—बूढ़े राजा को पहली बात तो, उस उम्र में चप्पल ही बनवाना चाहिये था। मगर उसने ऐसा न करके बूट बनवाना चाहा। उसने सोचा वो कभी नहीं मरेगा—बजाय अंत समय सुधारने से ज्यादा उसकी अभी तक शरीर और पदार्थ में मोह और अपनापन कायम था—ये थी मेरी हंसी, दूसरी बार।

तीसरी बार मैं अपनी ही मूर्खता पर हंसा जब मैंने इन तीनों लड़कियों को देखा। ये तीनों लड़कियां वो ही थीं जो मैंने बीस साल पहले देखीं उस समय ये सिर्फ छः महीने की थीं। उस समय मैंने अपने मालिक मृत्युदेव का कहना न माना इस औरत के प्राण न ले जाकर कि इन मासूम बच्चियों का क्या होगा। अब मैं हंसा कि कितना मूर्ख था मैं। जरा विधाता का विधान तो देखो अगर वो औरत ज़िन्दा होती तो ये तीनों लड़कियां आज भिखारिन होतीं। ज़रा सोचो तो इन लड़कियों की किस्मत इन्हें कहां ले गयी, रानी के महलात में और अब वे राजकन्याऐं हैं।

मैं हंस रहा हूं कि मैंने सोचा कि मैं ही बुद्धिमान हूं और करूणावान हूं, भगवान बेवकूफ है। भगवान, जिसने ये सारा संसार और मुझे भी बनाया है उसके लिये मैंने सोचा कि उसे दया नहीं है, वो मूर्ख है। मैं ऐसा भी तो नहीं कर सका कि मृत्युदेव को मना सकूं कि वो किसी और को न भेजे उस औरत के प्राण हरने, वो तो फिर भी मरी। ये 'दुख में छुपा सुख' नहीं तो और क्या है, 'थोड़े में छुपा बहुत' नहीं तो और क्या है ? ये हुआ तीसरी बार हंसना।

नसीहत—विधाना के विधान में खुश रहना चाहिए—हमें नही पता कि हमारे लिये क्या अच्छा है और क्या बुरा—उसे सब मालूम है और उसे ही पता है कि हमारे लिये क्या अच्छा है।

—किरन सदारंगानी, न्यूयार्क

सरल प्रार्थना

एक बहुत ही गरीब ग्रामीण था जो अपनी उदर पूर्ति के लिये भेड़ें चराया करता था जंगल में। रात को थक हार के जब घर आता था तो कभी कभी खाना भी न बना पाता था सिर्फ पानी पीके सो जाया करता था। कितने कितने दिनों तक तो अपने कपड़े धोने की भी हिम्मत न होती उसमें। एक दिन वो ग्रामीण जहां से गुज़र रहा था वहां सत्संग हो रहा था जो उसने श्रवण किया कि इस सारे जगत का मालिक, पालक और रक्षक एक ही है, सिर्फ एक। बड़े सोच में पड़ गया कि अच्छा तो ऐसा है, मैं तो समझ रहा था कि इन भेड़ों का मैं ही मालिक, पालक और रक्षक हूँ और बड़ा ही इतरा रहा था पर अब पता चला कि ऐसा नहीं है।

वो ग्रामीण प्रार्थना करने लगा कि "हे जगत के मालिक, मैंने सुना है कि तुम ही इस जगत के मालिक, पालक और रक्षक हो और तुम अकेले हो। मुझे पता है कि अकेला होना कैसा है कि मैं भी तो अकेला हूँ। जिस तरह मैं शाम को इतना थक जाता हूँ कि बग़ैर खाने के और मेले कपड़ों में सोना पड़ता है उसी तरह तुम भी तो सारे जगत की संभाल के बाद शाम को जब घर आते होगे, तुम भी तो थक जाते होगे ये मैं अच्छी तरह समझ सकता हूँ।" अब एक काम करते हैं--या तो तुम मेरे पास आ जाओ या फिर मुझे अपने पास बुला लो, मैं जरूर तुम्हें मदद करूंगा--और कुछ नहीं तो कम से कम शाम को जब तुम वापस आओगे तो खाना बनाके रखूंगा और तुम्हारे चरण दबाऊँगा, तुम्हारे कपड़े धोके रखूंगा। इतना ही नहीं मैं तुम्हें मेरी खटिया पे भी सोने दूंगा, मैं खुद नीचे सो जाऊँगा, मेहरबानी करके ज़रूर आओ।"

उसी समय पीछे से कोई सन्त मूशा करके आये जिसने ये प्रार्थना सुनी और उसे क्रोध आ गया और कहा कि मूर्ख प्रार्थना कोई ऐसे की जाती है। बेचारा ग्रामीण घबरा गया और नत्मस्तक होके प्रार्थना करने का त़रीका पूछा। जिस तरह से मूशा ने बताया उसी तरह वो ग्रामीण प्रार्थना करने लगा।

रात को भगवान मूशा के सपने में आया कि इतने सारे सालों से जिस तरह से प्रार्थना करना सिखा रहे हो लोगों को कोई मेरे पास पहुंचा अब तक पर आज जब एक सीधे सादे, निर्मल मन इन्सान ने, अपनी दिल की गहराई से मुझे पुकारा और मैं लगभग उसके दरवाज़े तक पहुंच चुका था कि तुम आ गये और हम दोनों में दूरी पैदा कर दी।

मूशा बड़े विस्मय में पड़ गया कि ये क्या कह रहे हो ? हर रोज़ मैं इतने सारे लोगों को सही राह दिखाता हूँ, तुम्हारी तरफ लगाने की कोशिश करता हूँ न सिर्फ इतना बल्कि आज तो मैंने एक मूर्ख इन्सान को सही राह दिखाई और तुम मुझे ये कह रहे हो।

भगवान ने कहा कि भले ही वो ग्रामीण मूर्ख है और उसके अल्फाज़ बड़े ही सीधे साधे थे पर वो उसके ज़बान से नहीं निकल रहे थे वो तो उसकी दिल की गहराई से निकल रहे थे और अब तुम्हारी वजह से मैं उस तक न पहुंच सका और वो मुझ तक नहीं पहुंच सका।

नसीहत : दिल की गहराई से, निर्मल मन से और इक मन इक चित होके की हुयी प्रार्थना ही भगवान तक पहुंचती है– किसी मंत्रों की या बड़े मुश्किल अक्षरों की ज़रूरत नहीं है।

–किरन सदारंगानी, न्यूयार्क

समाधि सुख

हमने बहुत से सुख जाने हैं–कभी भोजन का सुख, कभी स्वास्थ्य का सुख कभी प्यास लगे तो जल से तृप्ति का सुख इत्यादि हमने बहुत सुख जाने हैं। लेकिन इन सुखों के साथ दुख जुड़ा है। अगर हमें प्यास न लगे, तो पानी पीने की तृप्ति भी न होगी। प्यास की पीड़ा तुम झेलने को राजी हो, तो तुम्हें पानी पीने का मज़ा आऐगा। दुख पहले है, दुख लम्बा है और सुख क्षण भर है, क्योंकि जैसे ही कंठ से पानी उतरा, तृप्ति हो गयी। फिर भूख, फिर प्यास। भूख न लगे, भूख की पीड़ा ना हो तो भोजन की कोई तृप्ति नहीं।

इसलिए दुनियां में एक अजीब घटना घटती है–जिनके पास भूख है, उनके पास भोजन नहीं। वो भोजन का सुख ले सकते थे, उन्हें भोजन में सुख आता है क्योंकि वे बड़ा दुख झेल रहे हैं भूख का। और जिनके पास भूख नहीं है, उनके पास भोजन है, वे भोजन का सुख ले नहीं पाते, उन्हें भोजन से दुख ही मिलता है।

जब तक तुम्हें प्यास लगती है, तभी तक तुम्हें पानी की तृप्ति है। लेकिन तुम ऐसा जीवन जी सकते हो, जिसमें प्यास न लगे। धूप में मत जाओ श्रम मत करो आराम से घर में रहो–प्यास नहीं लगेगी। और अब तुम पाओगे पानी में कोई सुख नहीं। जिस आदमी ने दिनभर श्रम किया है, उसे ही रात सोने का सुख मिलेगा। अगर रात सोने का सुख चाहिए तो दिन में मजदूर जैसी जिन्दगी चाहिए। मगर हम यह चाहते हैं कि दिन हो एक अमीर सम्राट जैसा, और रात की नींद मजदूर जैसी–यह नहीं हो सकता। बाहर के जगत मे सुख और दुख जुड़े हैं। इसलिए जिस दिन तुम्हारे पास महल आ जाऐगा, उसी दिन नींद खो जाएगी। और देखो मजदूर को वह सो रहा है वृक्ष के नीचे। कंकड़–पत्थरों का भी उसे पता नहीं है। मच्छर भी उसको काट रहे हैं, उसका भी उसे कुछ पता नहीं, उसने दिन भर इतनी पीड़ा झेल ली है कि रात का सुख अर्जित कर लिया। दुख की कीमत चुकानी पड़ती है, सुख पाने के लिए। पर आदमी यही एक मजबूरी में उलझा हुआ है वह चाहता है कि सुख बचे और दुख कट जाये। हम जो कोशिश कर रहे हैं। वह संभव नहीं हो पाती, "दुख हम चाहते नहीं सुख हम चाहते हैं इसलिए झंझट है। समाधि–सुख का अर्थ है जिसके साथ दुख बिल्कुल नहीं है, समाधि–सुख किसी प्यास की तृप्ति नहीं है। समाधि सुख किसी भूख में लिया गया भोजन नहीं है। समाधि सुख श्रम करके रात में ली गयी निद्रा का सुख नहीं है। समाधि सुख के साथ दुख का कोई भी संबंध नहीं। यही अंतर है सांसारिक और आध्यात्मिक सुख में, समाधि सुख सिर्फ होने का आनंद है। समाधि सुख बिल्कुल भिन्न है, वहां तुम्हें मूल्य नहीं चुकाना है। क्योंकि जो तुम पाने चले हो वह अभी भी मौजूद है। इसी वक्त मौजूद है। वह कोई भविष्य नहीं जिसके लिए तुम्हें यात्रा करनी पड़े, चलना पड़े, मेहनत करनी पड़े। वह सुख तुम्हें मिला ही हुआ है। वह सुख तुम्हारी स्वभाव सिद्ध सम्पदा है । उसकी बराबरी में कोई सुख नहीं है। शरीर से तुम जो भी सुख जानोगे, उसमें दुख रहेगा ही, लेकिन आत्मा सिर्फ अमृत है। उसकी कोई मृत्यु नहीं। वह शाश्वत है। वहां विपरीत नहीं–जीवन है शुद्ध जीवन। मुड़ो स्वयं की ओर, स्वयं में ठहरो, ताकि महा ऊर्जा तुम्हें उपलब्ध हो जाये। जीवन तुम्हारा हो–परम जीवन, जागृति से निद्रा को तोड़कर और आनंद भोग सकेंगे हम। समाधि सुख तुम्हारा है। जहां हम शरीर को भी भूल जायेंगे, मन को भूल जायेंगे–वहीं हमें आत्मा का समाधि सुख, उपलब्ध होना शुरू हो जायेगा।

ध्यान द्वारा नाम सुमरन द्वारा शरीर और मन को भूल जायें। जैसे ही शरीर और मन का विस्मरण होगा आत्मा का स्मरण होगा। जब तक हमें शरीर और मन का स्मरण होगा आत्मा का स्मरण नहीं होगा। क्योंकि शरीर और मन बाहर है, आत्मा भीतर है। दोनों की तरफ एक साथ नहीं देखा जा सकता एक तरफ ही देखा जा सकता है। अगर इतना हो गया कि एक क्षण को भी ध्यान अवस्था में शरीर और मन भूल जायें तो समाधि सुख का स्वाद मिल जायेगा। और एक बार स्वाद मिले, बस, फिर ये जिन्दगी दूसरी हो जाती है। पहला स्वाद ही कठिन है। बस एक बार युक्ति मिल जाये, फिर तो तरकीब मिल गयी। फिर तुम जहाँ भी चाहोगे वहीं पाओगे यह समाधि–सुख

–हरीश प्रेम प्रकाशी, अमरापुर स्थान, जयपुर

ज्ञान–सत्संग–चर्चा

यात्रा–दर्शन

पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्तमण्डली का देशाटन

ग्वालियर में स्वामी गणेशानन्द जयन्ती
सीकर में निर्माणाधीन प्रेम प्रकाश आश्रम का भूमि पूजन सम्पन्न

मंगलमूर्ति आचार्य अनन्त श्री विभूषित श्री श्री 1008 पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की परम पावन पीठ श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के पांचवे पीठाधीश्वर पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सोये हुए जीवों को जगाने के लिये सत्य–सनातन धर्म का प्रचार प्रसार करते हुए, आचार्य श्री की पवित्रतम वाणी से असंख्य लोगों को ज्ञानामृत का पान नगर–नगर, ग्राम–ग्राम का रटन करते हुए करवा रहे हैं। प्रस्तुत है उन क्षेत्रों का सत्संग–कथा विवरण :

भुसावल में ध्वजारोहण व सत्संग वर्खा

27 फरवरी 2002 को बुरहानपुर के प्रेमियों से विदा लेकर, उन्हें आशीर्वाद देकर सत्गुरु महाराज जी ने भुसावल के लिये प्रस्थान किया। लगभग 10 बजे प्रातः भुसावल शहर में पधारे। यहाँ पर सत्गुरु महाराज जी व संत मण्डली का सुन्दर आत्मीय स्वागत किया गया।

तत्पश्चात "प्रेम प्रकाश आश्रम भुसावल" में ध्वजारोहण किया गया।

सांय सत्संग का कार्यक्रम प्रेम प्रकाश आश्रम के बाहर पंडाल में रखा गया था। सर्वप्रथम सन्तों ने सत्संग किया। तदोपरान्त पूज्य स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में बताया कि–

दोहा– राम नाम रटते रहो, जब लग घंट में प्रान।
कबहुं तो दीन दयाल के, भनक पड़ेगी कान।।

भजन–पीउ तूं प्यारा पीउ नित राम नाम रस पीउ।

1. **दुनिया चारि दिहाड़ चुटिको, आहि ख्याल जो खाली खुटको**
तूं तहिंते मस्तु न थीउ

संसार में आकर जिस किसी मनुष्य ने राम–नाम का स्मरण न किया, वह मनुष्य कोल्हू के बैल की तरह रात–दिन गृहकार्यों में लगा रहता है। संसार के मनमोहक पदार्थों व मोह में फंस कर अपना नर तन रत्न भगवान के भजन, दर्शन बिना व्यर्थ गंवाता है। ऐसे मोह–माया से ग्रसित, अज्ञान निद्रा में निद्रित मनुष्यों को सन्त महात्मा जगाते रहते हैं, और राम नाम का सुमरण कराते हैं।

उपरोक्त भजन गाकर व प्रवचन कर पल्लव पाकर सत्संग समाप्त किया।

नागपुर में सत्संग की मौज

28 फरवरी 2002 को प्रातः 8 बजे पूज्य स्वामी जी अपनी मण्डली सहित नागपुर रेल्वे स्टेशन पर पहुंचे। यहाँ पर पहले से ही उपस्थित श्री कमल मनवानी के नेतृत्व में कई प्रेमियों ने पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व संत मण्डली का नागपुर आगमन पर हार्दिक स्वागत किया।

संत मण्डली के रहने की व्यवस्था श्री कमल मनवानी जी के निवास स्थान पर रखी गयी थी।

चार दिवसीय सत्संग महायज्ञ में नागपुर के प्रेमियों और बाहर से आये प्रेमियों ने सन्तों के सतसंग व दर्शन का भरपूर आनन्द लिया, और पूज्य सत्गुरु महाराज जी के सत्संग–दर्शन का अलौकिक आनंद प्राप्त किया।

सीकर में स्वामी टेऊँराम आश्रम (ट्रस्ट) का भूमिपूजन

सीकर (राज.) 6 मार्च 2002–श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के आज सीकर आगमन से प्रेम प्रकाशी ही नहीं वरन् समूचा सिन्धी व गैर सिन्धी समाज भी

अत्यन्त हर्षित होकर महाराज श्री के सत्संग–दर्शन के लिये उत्साहित था। पूज्य महाराज श्री व सन्त मण्डली के आगमन पर शहनाईवादन, पुष्पवर्षा व स्वागत गीत गाकर पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली का अभिनन्दन किया गया। तुलसीदास टहलानी के निवास पर स्वामी जी व सन्त मण्डली के विश्राम की व्यवस्था की गयी थी। आज ही स्वामी टेऊँराम आश्रम (ट्रस्ट) के निर्माणाधीन आश्रम का भूमिपूजन स्वामी जी के कर कमलों से संपन्न हुआ। सत्संग सभा में सत्गुरु महाराज के अमृतरूपी ज्ञानगंगा में सीकरवासियों ने पावन डुबकी लगाकर अपने को कृतार्थ किया। **–प्रेमप्रकाशी महेन्द्र, सीकर से**

ग्वालियर में पूज्य स्वामी गणेशानन्द जयन्ती महोत्सव

सन्त शिरोमणि आत्मदर्शी सन्त पूज्यपाद स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का 101 वाँ पावन जन्मोत्सव 9 मार्च से 13 मार्च 2002 तक प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता में सोल्लास मनाया गया। सन्त हरिओमप्रकाश जी के संयोजकत्व में मनाये गये जन्मोत्सव में उल्हासनगर से सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज, कोटा से स्वामी मनोहरप्रकाश जी, दिल्ली से स्वामी जयदेव प्रकाश जी, जयपुर से सन्त दयाप्रकाश जी के अतिरिक्त श्री अमरापुर स्थान का विद्यार्थी समूह, इन्दौर से सन्त शम्भू प्रकाश जी, सन्त नरेश प्रकाश जी व जयपुर से दादी चेतादेवी भी महिला मण्डली के साथ सम्मिलित हुईं। दिल्ली, पलवल, फरीदाबाद, हथीन, आगरा, मुरैना, डबरा, दतिया, गोंदिया, इंदौर, भोपाल, झांसी, इत्यादि समीपस्थ क्षेत्रों से लेकर दूरदराज क्षेत्रों तक के प्रेमियों ने उत्साह पूर्वक स्वामी गणेशानन्द जयन्ती में भाग लेकर सेवा–सत्संग–दर्शन की त्रिवेणी में आनंद प्राप्त किया। हजारों–हजारों की संख्या में नगरवासी प्रेमियों ने नित्यप्रति समस्त कार्यक्रमों में उपस्थिति रहकर सन्त–सत्गुरु दर्शन का परम सौभाग्य प्राप्त करते हुए सेवा–सत्संग–सुमरण की अलोकिक त्रिवेणी में डुबकी लगाकर अपने को कृतार्थ किया। पंचदिवसीय महोत्सव (मेले) का लाईव आंखों देखा प्रसारण सांईबाबा कम्बाईन द्वारा सांईबाबा डिस्क, डेनी डिस्क, रविडिस्क के सहयोग से नगर में किया जाकर किन्हीं कारणों से मेले में सम्मिलित होने से वंचित रहे प्रेमियों को घर बैठे ही मेले में सम्मिलित करके पुण्य प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त दिन भर सांईबाबा, कोमल कम्बाईन पर मेले की रिकार्डिंग का प्रसारण किया जाता रहा।

9 मार्च 2002 शनिवार–एकादशी का परम पावन दिवस प्रातः अमृतवेला 4 बजे से ही रंगबिरंगी वेशभूषा में सुसज्जित नर–नारी–बाल–वृद्ध आश्रम की ओर चले आ रहे हैं। प्रातः 5 बजे एक सुसज्जित चौपहिया वाहन में सद्गुरु महाराज व स्वामी गणेशानन्द जी महाराज के परम मनोहारी चित्रों को विभिन्न प्रकार के पुष्पों से सजे हुए काष्ठ के मंदिर में विराजमान किया गया था। ध्वनि विस्तारक यंत्रों के माध्यम से सद्गुरु महाराज के जयघोष के साथ प्रभात फेरी की शुरूआत की गयी। सन्त हरीओमप्रकाश, सन्त शम्भूप्रकाश, दादी लाजवन्ती के नेतृत्व में हरिनाम संकीर्तन की मौज में नगर का वातावरण पावन करते हुए, प्रभात फेरी का नगर परिक्रमा के मार्ग में वैकुण्ठ आश्रम ट्रस्ट, झूलेलाल मंदिर ट्रस्ट, बाबा थाहिरियासिंह दरबार के अतिरिक्त और प्रेमियों ने भी स्वागत सत्कार का प्रबन्ध किया था। प्रातः 8 बजे प्रभात फेरी आश्रम पर विसर्जित होकर सत्संग सभा में परिवर्तित हो गयी। प्रभात फेरी में आश्रम के युवाओं द्वारा धारण किये गये सत्नाम साक्षी अंकित वस्त्र प्रेम प्रकाशियों की एकरूपता का आभास करा रहे थे। सद्गुरु महाराज की स्तुति आराधना के पश्चात पंचदिवसीय पाठों का आरम्भ किया गया। सांयकालीन सत्संग सभा में स्थानीय निजधाम आश्रम के सन्त दयालदास जी के प्रवचनों का आनन्द प्रेमियों ने प्राप्त किया। रात्रि 8 बजे पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के नगर आगमन पर नगर के प्रवेश द्वार रायरू सीमा पर पूज्य महाराज श्री व सन्त मण्डली का उत्साहपूर्वक स्वागत किया गया। गाड़ियों के

काफिले में महाराज श्री को आश्रम पर लाया गया। जहां पर उपस्थिति सैकड़ों प्रेमियों ने सन्त हरीओम प्रकाश जी के नेतृत्व में पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली का भव्य अभिनंदन किया।

10 मार्च 2002 प्रातःकाल सत्संग सभा में नित्य प्रार्थना के साथ सन्त हरीश, सन्त श्री मुक्त, भक्त मूलचन्द ने आचार्य जी के भजनों का मधुर आनन्द संगत को दिया तत्पश्चात् सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों द्वारा प्रेमियों को सन्त की महिमा बताते हुए **"तुहिंजे दर ते आयुसि भगवान सुमति जो दान दे मूंखे"** भजन गाया व पुरातन सन्त मण्डली की चर्चा करते हुए बताया कि पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज वयोवृद्ध सन्त व ज्ञान के भण्डार थे उनके जीवन में कई गुण विद्यमान थे सादगी, सरलता, विनम्रता व त्याग तपस्या वैराग्य व गुरु भक्ति थी जिनका प्रभाव आप देख रहे हैं सच्चे सन्तों की पहचान लोगों को बाद में पड़ती है। इतना कहते हुए अपना सत्संग समापन किया।

तत्पश्चात इसी दिन आश्रम के बाहर विशाल सत्संग पंडाल में सामूहिक जनेऊ संस्कार का कार्यक्रम भी अद्भुत था, पंच (भू–देव) ब्राह्मण समाज द्वारा विधिवत बच्चों को शिक्षा दीक्षा के साथ सामूहिक जनेऊ पहनाया गया। इस सामूहिक जनेऊ संस्कार कार्यक्रम में 86 बच्चों का संस्कार सिर मुड़ाकर कराया गया। ग्वालियर नगर में आश्रम परिवार द्वारा इस प्रकार किया गया कार्यक्रम तीसरी बार था जिसमें प्रति बच्चे के पीछे 25 परिजनों की भोजन व्यवस्था आश्रम पर की गयी थी। कई भक्त सेवक इस कार्य सेवा में लगे हुए थे बाद में आश्रम में गुरुदेव भगवान द्वारा पाखर, लॉकेट पेन व अन्य उपहार तथा शुभाशीष दी गयी।

11 मार्च 2002 को इसी प्रकार प्रातः व सायंकाल सत्संग में अपार जनसमूह ने ज्ञान भक्ति का अमृत पान किया।

12 मार्च 2002 मंगलवार प्रातःकाल 6:30 बजे सत्गुरु महाराज व सन्तों के कर कमलों द्वारा हवन यज्ञ किया गया। जिसमें सन्तों प्रेमियों द्वारा आहूतियाँ देकर देवताओं को पूजित किया गया।

तत्पश्चात सत्संग का आयोजन किया गया इस प्रकार इसी शिवरात्रि महापर्व व पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज के जन्मोत्सव कार्यक्रम में सन्त जयदेव जी, पूज्य सन्त स्वामी देवप्रकाश जी भी पधारे। प्रातःकालीन सत्संग सभा पूर्ण होने के बाद आश्रम के ऊपरी तल पर ध्वजा वन्दन करके प्रेम प्रकाशी धर्म ध्वजा स्थापित की गयी। सांयकालीन सत्संग सभा में संत नरेशलाल जी व सन्त श्री मुक्त, भक्त मूलचन्द, दादी चेतादेवी जी, सन्त जयेदव जी महाराज, पूज्य स्वामी सन्त देवप्रकाश जी महाराज, सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि पूज्य स्वामी श्री गणेशानन्द जी महाराज परम विद्वान होते हुए विनम्र शील, स्वभाव के थे उनका जीवन परोपकारी था, महोत्सव पर आने का मुख्य उद्देश्य है ऐसे सत्संग आयोजन पर आकर महानपुरुषों के जीवन से हम शिक्षा लेकर अपना कल्याण करें मनुष्यत्व मोक्षत्व व सन्त संग तीनों दुर्लभ हैं।

पीउ तू प्यारा पीउ श्री राम नाम रसु पीउ
प्रेमी प्यारा रामु नामु न विसारि तू
हीरो ही जनमु न हारि तू
साधो जीवत ही कर आशा

कई भजनों को गाकर श्री राम भगवान के जीवन प्रसंग बताते हुए सारी संगत को आनंदित किया।

13 मार्च 2002 बुधवार प्रातःकाल की मधुर वेला में सत्संग आरंभ हुआ जिसमें सन्त हरीश कुमार, सन्त परसराम ने नित्य प्रार्थना के बाद सुन्दर भजन गाये। तत्पश्चात् सन्त हरीओमलाल, सन्त जयदेव जी ने अपनी मधुर वाणी से संगति को ज्ञान व भक्ति का रसास्वादन कराया, सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज ने शास्त्रों व पुराणोक्त प्रसंगों द्वारा सन्तों की महिमा का गुणगान किया तत्पश्चात् सन्त प्रताप, सन्त जयदेव जी द्वारा पाठों का भोग पारायण हुआ अन्त में सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने अपनी मधुर सारगर्भित वाणी द्वारा कई भजनों एवं गीता व रामायण के प्रसंगों द्वारा अमृतपान

कराया। तत्पश्चात आमभण्डारे के कार्यक्रम में अपार संख्या में नगरवासियों ने श्री सत्गुरु महाराज का पावन परशाद सश्रद्धा ग्रहण किया। इसी प्रकार सांयकाल सत्संग सभा में 4 हजार से अधिक श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही अन्त में सत्गुरु महाराज ने **आहिनि तुहिंजे आसिरे मोती तिनखे मिलाई** भजन गाकर सर्व सन्त ने मिलकर पंल्लव पाया। इसी प्रकार अन्तिम सत्संग समाप्ति पर सन्तों व प्रेमियों ने ऊपर हाथ उठाकर नाचा व गुरु महाराज की जयघोष ध्वनि से सारा सत्संग पंडाल गूंज उठा मानो ऐसा लगा कि जैसा अमरापुर स्थान का नजारा था। ऐसा अमर अजर मंगलमूर्ति श्री आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी की परम कृपा आशीर्वाद से यह पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव बड़े हर्ष आनन्द उल्लास पूर्वक बधाइयों की तालियों की झंकार से समाप्त हुआ।

दतिया में सत्संग समारोह

14 मार्च 2002 ग्वालियर में पंचदिवसीय सत्संग की अद्भुत मौज प्रदान कर गुरु महाराज जी ने सड़क मार्ग द्वारा दतिया के लिये प्रस्थान किया। पूज्य स्वामी जी अपनी मण्डली सहित दिनांक 14 मार्च को प्रातः 10 बजे दतिया नगरी पधारे पूज्य गुरु महाराज जी के नगरागमन पर भव्य स्वागत किया गया। यहाँ पर सत्संग का आयोजन स्वामी टेऊँराम धर्मशाला में रखा गया। पूज्य स्वामी जी व सन्तों ने प्रवचन किये। सारी संगत ने बड़ी प्रसन्नतापूर्वक स्वामी जी के प्रवचन श्रवण करके अपने आप को कृतार्थ किया।

डबरा में सत्संग–दर्शन

15 मार्च 2002 को स्वामी जी प्रातः 7 बजे दतिया के प्रेमियोंसे विदाई लेकर प्रातः 9 बजे प्रेम प्रकाश आश्रम डबरा पहुंचे वहाँ पहुंचने पर प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी का भव्य स्वागत किया।

सांयकालीन सत्संग 5 बजे प्रारम्भ किया गया जिसमें डबरा की महिला मण्डली ने भजन सुनाये। उसके बाद सन्तों ने प्रवचन किये।

तदोपरान्त पूज्य सद्गुरु महाराज जी ने प्रवचनों के माध्यम से बताया कि संत महात्मा सदा अपने आपको तो शुभ गुणों से सिंगारते ही हैं साथ में अन्य व्यक्तियों को भी अपने साथ मिलाते हैं। सारे पापियों को पाप मुक्त करा देते हैं।

इन्हीं वचनों के साथ स्वामी जी ने अपनी वाणी को विराम दिया। सत्संग पश्चात पल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति की।

16 मार्च 2002 को प्रातः 8 बजे प्रार्थना की गयी उसके बाद सन्तों ने भजन व प्रवचन किये। तत्पश्चात पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन के माध्यम से बताया कि हमेशा सत्मार्ग पर चलना चाहिये। उसके बाद श्रीमद् भगवत गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों का भोग पारायण हुआ। तत्पश्चात प्रेम प्रकाश ध्वजा की पूजा अर्चना करके 'ध्वजारोहण' किया गया। समस्त सन्तगण व प्रेमी हम गीत सनातन गायेंगे भजन को गाते हुए हर्षित हो रहे थे। ध्वजारोहण के पश्चात पूज्य स्वामी जी ने पल्लव पाकर सत्संग समाप्त किया, तत्पश्चात भण्डारे का आयोजन रखा गया।

आगरा में सत्संग वर्खा

17 मार्च 2002 पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज अपनी सन्त मण्डली सहित डबरा निवासियों से भावभीनी विदाई लेते हुए दोपहर आगरा पहुंचने पर सन्त भगतप्रकाश जी (आगरा) व कु. भगवन्ती जी के नेतृत्व में कई प्रेम प्रकाशी प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी एवं संत मण्डली का भव्य स्वागत किया, स्वागत समारोह के पश्चात कुमारी भगवन्ती जी के निवास स्थान पर पूज्य स्वामी जी व सभी सन्तों के ठहरने की व्यवस्था की गयी थी।

सांय सत्संग का कार्यक्रम 5 बजे से 7 बजे तक का रखा गया था। सबसे पहले सभी सन्तों व गुणीजनों ने उपस्थित भगवत प्रेमियों को भगवत नाम का रसपान कराया। तत्पश्चात पूज्य स्वामी जी ने अपनी अमृतमय वाणी में बताया कि–

दोहा– कहे टेऊँ तुम चेतले, अब कछु बिगड़ी नाहिं।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि सुमरो मन माहिं।।

भजन–जिस काज लिये यह जन्म धरा।
सो कारज अब तक नाहिं किया।।

1. भोगों पीछे निशदिन धाया, साध संगति में ना कब आया। प्रेम सुधारस नाहिं पिया

2. पापों में मन कीन मलीना, जप तप संयम कर्म न कीना हाथों से ना दान दिया।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी अनुभव वाणी में लिखते हैं कि यह मनुष्य शरीर बहुत पुण्यों के प्रताप से मिलता है। जीव के जन्म–जन्म के जब पुण्य कर्म संचित होते हैं। तभी जाकर परमात्मा हमें आत्मउत्थान का एक बहुमूल्य अवसर प्रदान करते हैं।

दोहा– पूर्व पुण्य ते पाईयां, मानुष का अवतार।
कहे टेऊँ तिंहं सफल कर, सुमरो सिरजणहार।।

चौपाई–नर तन पाय विषय मन देही।
पलट सुधा ते षट विष लेही।।
मानुष तन मोक्षकर द्वारा।
पाय न जिंह परलोक संवारा।।

रामायण में भी गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं जो ऐसा दुर्लभ शरीर प्राप्त कर विषय वासनाओं के अंधेरे में खो जाते हैं। वे अज्ञानी जीव अमृत का त्यागकर समझो विषपान करते हैं।

गुरु महाराज जी अपनी अमृतवाणी में लिखते हैं कि

उपदेश सुनो प्यारे, क्यों आये हो जग में
तुम देखो वीचारे
यहाँ अमृत था पीना, सो तुमने नाहिं पिया।
विष विषयों मन दीना।।

अगर हम इस अवसर का लाभ उठाकर परमात्मा की भक्ति में लग जाते हैं। तो हमारा लोक–परलोक दोनों संवर जायेगा।

जय जय टेऊँराम स्वामी कृपा करो प्रभु अर्न्तयामी

18 मार्च 2002 निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सत्संग का कार्यक्रम हुआ। जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

19 मार्च 2002 प्रातः 10 बजे प्रेम प्रकाश मण्डली आगरा के सौजन्य से **सामूहिक जनेऊ संस्कार** का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें लगभग 60 छोटे बड़े बालकों को एक साथ आगरा के विद्वत ब्रह्मसमाज द्वारा यज्ञोपवीत धारण कराकर हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया।

आज ही सांयकालीन प्रवचनों में उपस्थित हजारों प्रेमियों को पूज्य स्वामी जी ने बतलाया कि–

दोहा– सद्गुरु बुद्धि के नैन में, डारे अंजन ज्ञान।
कहे टेऊँ तम भ्रम हर, दिखलावे भगवान।।

जब शिष्य समर्पण भाव से गुरु की शरण में जाता है तो गुरुदेव भी शिष्य की उसी तरह पालना करते हैं। जैसे एक बालक की माता–पिता देखभाल करते हैं, जब भगवान कृष्ण ने कुरुक्षेत्र में अर्जुन को अपना विराट स्वरूप दिखलाया तो अर्जुन ने भगवान से कहा भगवान मुझे कुछ भी नजर नहीं आ रहा तब भगवान ने अर्जुन से कहा मेरा यह दुर्लभ स्वरूप तुम्हें इन बाहरी नेत्रों से नहीं नजर आयेगा इतना कहकर भगवान ने अर्जुन को दिव्य चक्षु दिये जिनके द्वारा अर्जुन ने दुर्लभ विराट स्वरूप के दर्शन किये, जिस प्रकार अर्जुन को दिव्य चक्षु मिलने पर ही भगवान के दर्शन हुये। उसी प्रकार हमें भी वह दिव्य चक्षु पूरण गुरु के द्वारा प्राप्त हो सकते है। लेकिन इसके लिये हमें हर तरह से गुरु के शरणागत होना पड़ेगा, शरणागत होने का तात्पर्य है कि जिस राह पर गुरु ले जाये उस राह पर हम अपने कदम बढ़ायें।

चौपाई–मात पिता प्रभु गुरु की बानी।
बिनहिं विचार करिअ शुभ जानी।।

इतना कहकर पूज्य स्वामी जी ने अपनी वाणी को विराम दिया।

मुरैना में दिव्य सत्संग समारोह

20 मार्च 2002 पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज संत मण्डली सहित प्रातः 7 बजे आगरा यात्रा को विराम देते हुए सड़क मार्ग द्वारा मुरैना के लिये रवाना हुए प्रातः 10 बजे सिन्धी कॉलोनी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पहुंचे यहां पहुंचने पर प्रेमियों द्वारा स्वामी जी के आगमन की खुशी में बैण्ड बाजे बजाये गये तथा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।

सांयकालीन 5 से 7 बजे तक सत्संग का कार्यक्रम हुआ।

21 मार्च 2002 प्रातःकालीन प्रवचनों में पूज्य

स्वामी जी ने बतलाया कि–

दोहा– दलपत एके श्वास का, तीन लोक नहीं मोल।
विरथा कांहि गंवाइये, ऐसा श्वास अमोल।।

भजन–मनड़ा तोखे आऊं समुझायां

1. **हिक–हिक दम जो मुल लख लख थई।**
नाम बिना मुल तहिंजो कख थई।
सुन्दर सिख्यां सेखांया

गुरु महाराज जी ने कहा कि ये श्वास सारे शरीर के आधारभूत हैं। शरीर में अथवा सारे संसार में जो कार्य हो रहा है। वह सब प्राणों की सहायता से हो रहा है। प्राणों के होने से ही जीव को प्राणी (प्राणधारी) कहा जाता है।

ये प्राण शरीर में पांच स्थानों में रहकर पांच प्रकार के कर्मो को करते हैं। शरीर का जीवन प्राणों पर है। प्राणों के निकलने पर शरीर गिर जाता है। और प्राणहीन देह को शमशान में जला दिया जाता है। पांच कर्मेन्द्रिय व पांच ज्ञानेन्द्रिय और अन्तःकरण का जो कुछ कार्य है वह सब प्राणों के सहारे ही चलता है, और हम इन श्वासों को कंकर पत्थर की तरह खत्म कर रहे हैं। तुलसीदास जी ने बताया है कि–

दोहा– तीन लोक दस मोल को, एक श्वास जो होय।
तुलसी ऐसे श्वास को, कंकर कर मत खोय।।

इस एक श्वास का मूल्य दस बारी लोक अर्थात् तीस लोक के मूल्य वाला है। ऐसे उत्तम श्वास को नाम भजन में सफल करो। ऐसे अमूल्य श्वास को अमूल्य कार्य में ही लगाना चाहिये। सबसे श्रेष्ठ कार्य है हरि का भजन करना और अपने आत्म–स्वरूप को जानना।

इतना बताकर गुरु महाराज जी ने पल्लव पाकर सत्संग समाप्त किया।

22 मार्च 2002 निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सुबह शाम सत्संग का कार्यक्रम हुआ।

अलीगढ़ में हवन, ध्वजारोहण

दिनांक 23–3–02 अपनी यात्रा को विराम देते हुए पूज्य स्वामी जी व संत मण्डल दोपहर 1 बजे मुरैना से अलीगढ़ पहुंचे। यहाँ पहुंचने पर प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी का भव्य स्वागत किया।

सायंकालीन सत्संग का आयोजन प्रेम प्रकाश आश्रम में हुआ।

दिनांक 24–3–2002 को प्रातः 8 बजे से 9 बजे तक हवन हुआ। जिसमें सब सन्तों ने पूज्य स्वामी जी के साथ वैदिक मन्त्रोच्चारण कर हवन कुण्ड में आहुतियाँ दीं। हवन समाप्ति के बाद प्रेम प्रकाश ध्वजा की पूजा अर्चना की गयी। उसके बाद ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात दोपहर 11 बजे आम भण्डारे का आयोजन किया गया जिसमें अलीगढ़ शहर के निवासियों ने प्रसाद ग्रहण किया और पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली ने प्रसाद ग्रहण करके और सब प्रेमियों को आशीर्वाद देकर हरिद्वार के लिये प्रस्थान किया।

–प्रेमप्रकाशी, परसराम (जयपुर), यात्रा से

पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का दिल्ली व खैरथल में सत्संग गंगा

29 मार्च 2002 को दोपहर 1 बजे हरिद्वार की यात्रा को विराम देते हुए पूज्य स्वामी जी ने दिल्ली के लिये प्रस्थान किया।

30–3–2002 को प्रातः सत्संग का कार्यक्रम रखा गया जिसमें दिल्ली के कई प्रेमियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन कर और भण्डारा करके खैरथल के लिये प्रस्थान किया दोपहर 3:30 बजे खैरथल पहुंचे।

सायंकालीन सत्संग का कार्यक्रम हुआ इसमें सन्तों ने भजन गाये व प्रवचन किये उसके बाद पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने प्रवचन कर पल्लव पाकर सत्संग का समापन किया। प्रातः 7 बजे खैरथल से पुनः दिल्ली के लिये प्रस्थान किया। दिल्ली पहुंचने पर निजामुद्दीन स्टेशन से जबलपुर के लिये गोंडवाना एक्सप्रेस से रवाना हुये।

जबलपुर में प्रथम आगमन पर सत्संग की अदभुत मौज

2 अप्रैल 2002 पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का जबलपुर स्टेशन आगमन पर वहाँ के प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली को

माल्यार्पण कर व बैण्ड बाजों के साथ हार्दिक स्वागत किया। पूज्य स्वामी जी व संत मण्डली को कारों के काफिले में श्री तुलसीदास केसवानी के निवास स्थान पर लाया गया जहाँ पर सबकी रहने की व्यवस्था की गयी थी।

उसके बाद पूज्य स्वामी जी जबलपुर के प्रेमियों के साथ गुरुधाम में गये जहाँ पर सन्त मोहनदास के साथ मिले। सन्त के आग्रह करने पर पूज्य स्वामी जी ने भजन सुनाया और फिर नर्मदानदी के दर्शन कर पूज्य स्वामी जी पुनः निवास स्थान पर आये।

दोपहर को सब सन्तों ने भोजन कर विश्राम किया।

सांयकालीन को पूज्य स्वामी जी स्वामी दयाल साहब आश्रम में गये जहाँ पर स्वामी रामदास जी महाराज ने पूज्य स्वामी जी को दुशाला पहनाकर स्वागत किया तत्पश्चात सत्संग का कार्यक्रम झूलेलाल मन्दिर में रखा गया। शोभायात्रा निकाल कर पूज्य स्वामी जी को झूलेलाल मंदिर में लाया गया। वहाँ पर स्वामी जी ने झूलेलाल भगवान की प्रतिमा को माल्यार्पण कर नमन किया। तदोपरान्त सत्संग की शुरूआत की गयी जिसमें पहले स्वामी झामनदास (सिवनी) ने भजन सुनाया। उसके बाद भगत श्री मुक्त ने सत्संग में आनंद की लहर दौड़ाई। बाद में सन्त मनोहरलाल जी ने प्रवचनों के माध्यम से बताया कि हमें उस प्रभु परमात्मा के नाम को नहीं भूलना चाहिए।

तत्पश्चात पूज्य सद्‌गुरु महाराज जी ने अपनी अमृतमय वाणी के द्वारा सब प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि

दोहा : कहे टेऊँ हरि प्रेम की महिमा है अधिकाय।
प्रेम भरे प्रवाह में–ज्ञान ध्यान बह जाये।।

जिन सन्तों महात्माओं ने भगवान को पाया है, उन्होंने प्रेम से ही उन्हें पाया है। प्रेम की बड़ी भारी महिमा है। प्रेम की महिमा कही नहीं जा सकती, प्रेम बाजार में किसी दुकान पर नहीं मिलता। यह तो सन्तों के पास सिर की बाजी (दान) लगाने से मिलता है।

चौपाई: प्रेम की महिमा कही न जावे, प्रेम न कोई हाट बिकावे।
आगे मर, पीछे फिर जावे, प्रेम प्याला भर–भर पावे।।

सद्‌गुरु महाराज जी ने बताया कि प्रेम सन्तों की सत्संग रूपी दुकान पर मिलता है। अगर तुम्हें प्रेम का सौदा करना है। तो अपने 'सिर' की भेंट ले आओ।

थलुः असां हटड़ो कढियो आहि हक जो,
उते सौदो रख्यो से पक जो।
अन्तराः राम नाम जी तोरियूं तकड़ी, गाल्हि कयूं था हक जी हिकिड़ी, नको खाऊँ खटियो तोर तक जो।।
जो हिति सिर खे अचे संभाए, हिन सौदे खे सोई पाए।
हीउ सौदो न आ बकबक जो।।

यह भजन अर्थ सहित समझाकर जय–जय टेऊँराम स्वामी की धुनि लगाकर व पल्लव पाकर सद्‌गुरु महाराज जी ने सत्संग समाप्त किया।

–हरीश प्रेमप्रकाशी (जयपुर), यात्रा से

शहडोल में भव्य स्वागत

3 अप्रैल 2002 को जबलपुर के प्रेमियों को आशीर्वाद देकर पूज्य सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश महाराज जी इन्दौर बिलासपुर गाड़ी द्वारा शहडोल नगर पहुंचे। जहाँ पर डॉ. श्री जी. एस. मोटवानी, श्री दिलीप कुमार, मुखी श्री लालचंद कुन्दनानी, व अन्य प्रेमियों ने स्टेशन पर आकर पूज्य स्वामी जी व संत मण्डली का भव्य स्वागत किया। स्टेशन से लेकर निवास स्थान तक शोभायात्रा निकाली गयी। सन्तों के रहने की व्यवस्था श्री गुरुमुखदास जैसिंघानी के यहाँ पर की गयी थी।

सांयकालीन सत्संग का आयोजन सिन्धी धर्मशाला में रखा गया यहाँ पर सब सन्तों ने भजन गाये व प्रवचन के माध्यम से सबको ओतप्रोत किया।

तत्पश्चात पूज्य सद्‌गुरु महाराज जी ने अत्यन्त मधुर आवाज में भजन सुनाये व प्रवचन कर सब प्रेमियों को शुभमार्ग की ओर चलने को प्रेरित किया।

अन्त में जय–जय टेऊँराम स्वामी की धुनि लगाकर पल्लव पाकर शहडोल में सत्संग समारोह का समापन किया गया।

–सांवल प्रेमप्रकाशी (मुरैना), यात्रा से

उमरिया में सत्संगानन्द

4 अप्रैल 2002 शहडोल से कटनी जाते समय उमरिया में स्वामी टेऊंराम मंदिर में सन्त गुरुमुखदास जी द्वारा प्रेमियों के साथ पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली का हार्दिक स्वागत किया गया। तत्पश्चात सत्संग सभा में उमरिया के प्रेमियों का प्रेम देखकर गुरुदेव भगवान ने भक्ति व प्रेम विषय पर सत्संग करके सर्वप्रेमियों को लाभान्वित किया।

कटनी में मूर्तिप्राण प्रतिष्ठा समारोह

4–5 अप्रैल 2002 कटनी में नई बस्ती स्थित स्वामी शान्तिप्रकाश आश्रम में पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली के पहुंचने पर नगर सीमा पर भव्य स्वागत किया गया, सन्त रमेश प्रकाश जी के नेतृत्व में सैकड़ों प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी को पुष्पमाला अर्पण कर आत्मीय स्वागत किया। यहाँ आश्रम में सन्त रमेश प्रकाश के संयोजन में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा उत्सव आयोजित था। आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज के श्रीविग्रहों की प्राण–प्रतिष्ठा पूर्ण वैदिक विधि से मन्त्रोच्चारण के मध्य पूज्य स्वामी जी के कर कमलों द्वारा सद्गुरु महाराज के गगनभेदी जयघोष के साथ सम्पन्न हुई।

4 अप्रैल को आश्रम में व 5 अप्रैल को सिन्धू भवन में पूज्य स्वामी जी के सत्संगामृत से कटनी वासियों ने लाभ प्राप्त किया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में सदुपदेश देते हुए कहा, कि

सच ही देवे सच ही लेवे सच ही बोले सच ही सेवे
सम दम आदिक षट गुणधारी
देखा जग में सन्त उदारी सारग्राही परम विचारी

सन्त महात्माओं के विचार सुनकर फिर एकान्त में बैठकर उनपर मनन करके, उनका आचरण करने से मानव जीवन सार्थक बनता है।

महियर में सत्संग

6 अप्रैल 2002 पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज अपनी मण्डली सहित सड़क मार्ग द्वारा कटनी होते हुए प्रातः 10.30 बजे महियर पहुंचे यहां पर कई प्रेमियों द्वारा नगर आगमन पर सन्त मण्डली का भावपूर्ण स्वागत किया गया। यहां पर रहने की व्यवस्था श्री मंशाराम जी के निवास स्थल पर की गयी थी। सब सन्तगण भोजन पश्चात् विश्रामी हुए। सांय सत्संग का कार्यक्रम सिन्धु गुरुद्वारा में हुआ जिसमें कई प्रेमियों ने भाग लिया यहां पर सिन्धु गुरुद्वारा के महन्त श्री सन्त रामदास ज़ी ने सिन्धु गुरुद्वारा आगमन पर पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सभी सन्तों का हार्दिक आभार प्रकट किया यहां की व्यवस्था सफल बनाने हेतु सन्त भावनदास जी (फैजाबाद) वाले का अहम योगदानरहा।

रीवा में सत्संगानन्द

7 अप्रैल 2002 अपनी महियर यात्रा को विराम देते हुए दोपहर 12 बजे पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज रीवा पहुंचे यहां पर पूज्य स्वामी जी के दर्शन कर सभी प्रेमीगण प्रफुल्लित हो रहे थे क्योंकि पूज्य स्वामी जी का मण्डली सहित रीवा नगर में प्रथम नगरागमन था। यहां रहने की व्यवस्था श्री कर्मचन्द सुन्दरानी जी के निवास स्थान पर रखी गयी थी। सत्संग का कार्यक्रम जवाहर नगर में रखा गया था जहां पर सभी सन्तों ने अपने मधुर प्रवचनों द्वारा उपस्थित सभी श्रोताओं का मन मोह लिया। यहां पर पूज्य महाराज जी ने अपने प्रवचन में बतलाया कि शारीरिक रोगों का उपचार डॉक्टर (वैद्य) द्वारा सम्भव है। लेकिन मानसिक रोगों के लिये डॉक्टर या वैद्य की दवाई काम नहीं आती। मानसिक रोगों का एक ही उपचार है मन की शान्ति और मन की शान्ति तभी सम्भव है जब परमात्मा के नाम का जाप किया जाये। इसलिए हर जीव का कर्तव्य है कि वो परमात्मा के नाम का सुमिरन करे। सत्संग पश्चात पूज्य स्वामी जी अपने निवास स्थान पर लौट आये।

सीधी में सत्संग समारोह

8 अप्रैल 2002 पूज्य महाराज श्री एवं समस्त संतगण प्रातः 10 बजे सड़क मार्ग द्वारा सीधी पहुंचे। यहाँ पर कई प्रेमियों द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया। तत्पश्चात, सभी सन्तों को ठहराने हेतु उचित स्थान

दिया गया। सांय सत्संग का कार्यक्रम सांई चाण्डूराम दरबार में रात्रि 9 से 10 बजे तक रखा गया था। दरबार पहुंचने पर वहां ट्रस्टियों व प्रेमियों द्वारा पूज्य महाराज श्री का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। यहां पर सभी प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए पूज्य महाराज श्री ने अपने प्रवचनों में बतलाया कि–

सत्गुरु का ज्ञान बादल के समान होता है। जैसे सूखी भूमि पर बादल बरसते हैं तो उस सूखी भूमि पर भी बहार छा जाती है। जब बादलों का पानी बरसता है तो चारों तरफ रंग बिरंगे पुष्पों की महक सी छा जाती है। उसी प्रकार जब सतगुरु हमारे मन रूपी मरूस्थल में ज्ञान रूपी वर्षा करते हैं तो हमारा मन सदगुण रूपी पुष्पों से खिल जाता है और हमारा जीवन धन्य–धन्य हो जाता है।

सत्संग उपरान्त पल्लव पाकर पूज्य महाराज श्री ने इस सत्संग रूपी महायज्ञ का समापन किया।

सतना में दिव्य सत्संगज्ञान

9 अप्रैल 2002 अपनी यात्रा को विराम देते हुए पूज्य महाराज श्री ने सन्त मण्डली सहित सतना की और प्रस्थान किया। यहां पर दोपहर 2 बजे पहुंचने पर दयालदास मोहनानी के नेतृत्व में श्री गोविन्दराम, श्री द्वारकादास एवं कई गणमान्य प्रेमियों ने सन्तमण्डली का स्वागत किया। सभी सन्तों के ठहरने की व्यवस्था श्री दयालदास मोहनानी जी के निवास स्थान पर की गयी थी। सांय सत्संग का कार्यक्रम 6 से 7.30 बजे तक स्वामी मोतीराम दरबार में रखा गया था। यहाँ पहुंचने पर महन्त खिम्यादासजी ने सभी सन्तों का मोतीराम दरबार आगमन पर भावपूर्ण स्वागत किया। तत्पश्चात सत्संग का कार्यक्रम हुआ। पूज्य स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में बतलाया कि मनुष्य जन्म बड़े भाग्यों से प्राप्त होता है। इस योनि में हम परमात्मा के बहुत निकटतम हैं और शास्त्रों में तो मनुष्य को ही परमात्मा को पाने का सबसे बड़ा अधिकारी बताया गया है। किन्तु यह तभी सम्भव है जब हम अपने मन के दोषों का त्याग करें। मन के दोषों का तात्पर्य है कि किसी के साथ झूठ नहीं बोलना, किसी के साथ ठगी नहीं करना, विश्वासघात नहीं करना....इत्यादि। अगर हम मन के दोषों का त्याग कर सच्चाई की राह पर चले तो परमात्मा की सदैव हमारे ऊपर कृपा रहेगी। सत्संग पश्चात सभी प्रेमियों से विदाई लेते हुए आज रात्रि ही रेलमार्ग द्वारा पूज्य महाराज श्री अपनी मण्डली सहित भोपाल की ओर प्रस्थान कर गये।

भोपाल में विशाल शोभायात्रा

10 अप्रैल 2002 पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं सन्त मण्डली प्रातः 8 बजे रेलमार्ग द्वारा सतना होते हुए भोपाल बैरागढ़ पहुंचे रेलवे स्टेशन पर पहले से उपस्थित श्री मिर्चूमल जी के नेतृत्व में कई प्रेमियों ने पूज्य महाराज श्री एवं सन्तों का माल्यार्पण कर भावभीना स्वागत किया। सारा प्लेटफार्म सत्गुरु महाराज जी के जयघोष से गुंजायमान होने लगा तत्पश्चात् कारों का काफिला रेल्वे स्टेशन से रवाना हुआ व शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए सन्त हिरदाराम महाराज की कुटिया पर पहुंचा, यहां पर पूज्य महाराज श्री व सन्तों का सन्त हिरदाराम जी महाराज के साथ मिलन हुआ। पूज्य महाराज श्री ने कुटिया पर सन्त हिरदाराम जी का कुशल क्षेम पूछा तत्पश्चात सन्त हिरदाराम जी ने संग आये प्रेमियों को सुन्दर–सुन्दर उपदेश दिये उन्होंने कहा कि जीवमात्र की सेवा करना परमात्मा की सेवा करने के बराबर है। जितना हो सके तन–मन–धन द्वारा दीन दुखियों की सेवा करनी चाहिए क्योंकि परमात्मा हर एक जीव के हृदय में निवास करते हैं। सन्त मिलन पश्चात् सन्त हिरदाराम कुटिया से ही पूज्य महाराज श्री के आगमन की खुशी में शोभा यात्रा आरम्भ हुई सबसे पहले बैण्ड बाजे वाले सुन्दर भजनों की धुन बिखेरते हुए आगे चलने लगे तत्पश्चात् पूज्य महाराज श्री खुली हुई जीप में शोभायमान हो रहे थे। सभी नगरवासी पूज्य महाराज श्री के दर्शन कर खुशी से झूम रहे थे आज कोई भी अपने पैरों को रोक नहीं पा रहा था सभी प्रेमी भावविभोर होकर शोभायात्रा में जगह–जगह नृत्य कर रहे थे यहां पर श्वेत ध्वज धारण किये हुए लगभग बीस कारों का काफिला एक दूसरे के पीछे चल रहा था एवं कई प्रेमी पैदल चलकर भी इस शोभायात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे शोभायात्रा के बीच–बीच में कई जगहों पर

प्रसाद व शर्बत वितरण किया जा रहा था। यह शोभायात्रा बैरागढ़ स्थित मुख्य मार्गो व कॉलोनियों से होते हुए दोपहर 11.30 बजे बैरागढ़ स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर समाप्त हुई।

प्रेम प्रकाश आश्रम पहुंचने पर सभी को ठहरने हेतु उचित व्यवस्था दी गयी। दोपहर भोजन पश्चात् सभी सन्तों ने विश्राम किया। यहां पर तीन दिवसीय सत्संग कार्यक्रम रखा गया था सुबह प्रातः 7.00 बजे से 8.30 बजे तक एवं सांय 5 से 8.30 बजे तक सत्संग वर्खा हुई सभी सन्तों ने अपनी अमूल्य वाणी द्वारा सभी प्रेमियों को भगवत नाम जपने की और प्ररित किया पूज्य स्वामी जी ने अपने त्रिदिवसीय प्रवचनों में बतलाया कि

श्लोकः एक घड़ी आधी घड़ी, आधी की पुनि आध।
तुलसी संगत साध की कटे कोटि अपराध।।

सन्तों के संग में यह जीवन अपने खोटे कर्म छोड़कर स्वयं ही भगवान का रूप बन जाता है। वास्तव में यह जीव है ही ब्रह्म का रूप परन्तु अविद्या की उपाधि के कारण स्वयं को जीव समझ कर दुःखी हो रहा है। उस ब्रह्म रूप सागर से यह जीव कैसे अलग होकर दुःखी हो रहा है।

उदाहरण : सागर अपनी ही मौज में गर्जन करता है। गर्मी के कारण उसमें से पानी भाप बनकर बादल का रूप धारण कर आकाश में विचरने लगा यह बादल घूमते–घूमते वृन्दावन के ऊपर मंडराने लगा। भगवान की सुन्दर रामलीला वाली भूमि को देखकर उसके मन में उमंग उत्पन्न हुआ और वहां वर्षा के रूप में बरसकर 'ब्रज' में एक तालाब का रूप धारण कर लिया प्रत्येक यात्री उस तालाब में से पानी पीता था सब यात्रियों और जीव जन्तुओं के लिए यह बड़ा ही सुखकर बन गया दूसरों को प्रसन्न देखकर वह तालाब का पानी जो प्रारम्भ में सागर था स्वयं भी प्रसन्न रहने लगा क्योंकि पानी एक जगह स्थिर था अतः उसमें कुछ कीड़े भी पड़ गये और वह पानी खराब हो गया।

बहता पानी निर्मल, खड़ा गन्दला होय

जो पानी बहता ही रहता है वह निर्मल होता है। और खड़ा पानी खराब हो जायेगा। धीरे–धीरे वह तालाब का पानी इतना गन्दा हो गया उसमें से सड़न और बदबू आने लगी तब वह पानी दुःखी होकर पुकारने लगा।

दोहा : ऐसा कोई जगत में, पर उपकारी आहिं
बहुत जन्म का बीछुड़ा, मुझ सागर संग मिलाय।।

उसकी यह पुकार एक धर्मात्मा सेठ ने सुनी उसने इधर–उधर देखा परन्तु उसे कोई मनुष्य दिखायी नहीं दिया तब वह आवाज सुनकर उस ओर जाकर वह तालाब के निकट पहुंचा उसने समझा यह आवाज तो तालाब में से आ रही है सेठ ने उससे कहा प्यारे! तुम कौन हो अपना पूरा वृतान्त सुनाओ। इस पर उस तालाब के पानी ने अपना पूरा विवरण सेठ को कह सुनाया सेठ ने उससे कहा :

सागर से मिलना चहो, कर सरिता का संग

अगर तुम्हें सागर से मिलना है तो मेरी ओर जो यमुना नदी बह रही है उससे जा मिलो। वह यमुना तुम्हें गंगा नदी से मिलवायेगी और फिर गंगा से मिलकर तुम अपने घर सागर जा पहुंचोगे तब वह तालाब का पानी सेठ से पूछने लगा मैं किस प्रकार से जाकर यमुना से मिल सकूंगा मुझे तो कुछ पता नहीं है सेठ ने उसे आश्वासन दिया मैं तुम्हें यमुना से मिलवाता हूँ। इतना कहने के उपरान्त सेठ ने दो–तीन मजदूर अपने साथ लेकर उनसे नाला खुदवाकर तालाब के पानी को यमुना से जा मिलवाया तब वह जल यमुना से मिलकर प्रसन्न होकर सेठ जी को आशीर्वाद देता हुआ सागर से जा मिला इस प्रकार यह जीव भी उस ब्रह्मरूप सागर से निकलकर संसार की सैर करने यहां आया है संसार को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होता है परन्तु अपने पाप कर्मों के कारण बहुत दुःखी होकर पुकारता है कि कोई ऐसा परोपकारी, जो मुझे इस दुःख से छुड़ाए उसकी पुकार सुनकर कोई पूर्ण सन्त, महात्मा तत्ववेत्ता आकर इस जीव को अविद्या रूपी निद्रा से जगाकर उससे कहता है कि प्यारे। तुम अपने ब्रह्म स्वरूप से मिलकर ही खुश हो पाओगे। तुम्हारे दुःख मिटाने का अन्य कोई उपाय नहीं है यह जीव कहता है मैं ब्रह्म परमात्मा से

कैसे मिलूं , तब महात्मा उसे बताते हैं।

दोहा : सागर से मिलना चहो कर सरिता का संग।
तैसे प्रभु के मिलने का, मार्ग है सत्संग।।

भगवान से मिलने के लिये महात्माओं का सत्संग ही उत्तम मार्ग है। इसलिए इस जीव को सत्संग करना चाहिए सत्संग करने से ही ज्ञान, ध्यान और कर्म का पता पड़ता है। इस यात्रा के दौरान पूज्य महाराज श्री कई प्रेमियों के हार्दिक निमन्त्रण पर उनके निवास स्थलों पर गये एवं सब जगह पल्लव पाकर सभी प्रेमियों की लोक परलोक यात्रा सुखद हो इस हेतु प्रार्थना की इस यात्रा के दौरान ही पूज्य महाराज श्री दीपमाला स्कूल व स्वामी शान्ति प्रकाश स्कूल में गए जहां पर उन्होंने सरस्वती माता की प्रतिमा के आगे पुष्प अर्पित किये व ज्योतियां प्रज्वलित कीं।

यहां पर पूज्य महाराज श्री ने स्कूल के बच्चों को सम्बोधित करते हुए बतलाया कि विद्या (शिक्षा) हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है विद्याध्यन करने से हमारे जीवन में विनम्रता आती है और जिसमें विनम्रता आती है उसका चारों तरफ संसार में यश होता है आप सब बच्चों का फर्ज है कि आपको जो स्कूल में अध्यापकों द्वारा पढ़ाया जाता है। उसको ध्यानपूर्वक सुनें व घर जाकर अपनी कक्षा की पुस्तकों का गहनता से अध्ययन करें व परीक्षा में उत्तीर्ण होकर अपना माता–पिता अध्यापक, स्कूल का नाम रोशन करें। इस दौरान पूज्य महाराज श्री का सांई हरचूराम दरबार में सत्संग हुआ यहां पर कई प्रेमियों ने स्वामी जी के मधुर सत्संग का श्रवण किया अन्त में दिनांक 12 अप्रैल को पूज्य स्वामी जी भोपाल वासियों से विदाई लेकर रेल मार्ग द्वारा आगरा की ओर प्रस्थान कर गये।

वृन्दावन

13 अप्रैल 2002 पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली सहित प्रातः 4.30 बजे रेल मार्ग द्वारा आगरा पहुंचे। रेल्वे स्टेशन पर कई प्रेमियों द्वारा पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। स्वागत पश्चात् पूज्य स्वामी जी कुमारी भगवन्ती जी के निवास स्थान पर आये। यहां पर प्रातः दैनिक कर्मों से निवृत होकर प्रातः 8 बजे ही सड़क मार्ग द्वारा वृन्दावन प्रस्थान कर गये व प्रातः 10 बजे स्वामी शान्ति प्रकाश सेवा धाम की ओर से लगाये गये भागवत महायज्ञ शिविर में पहुंचे। यहां भागवत कथा वृन्दावन स्थित फोगला आश्रम में चल रही थी यहां पहुंचने पर सन्त देवप्रकाश जी ने स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का आत्मिक स्वागत किया। तत्पश्चात सभी सन्तों ने दोपहर 11.30 बजे तक भागवत प्रवचन का श्रवण किया। तदोपरान्त पूज्य स्वामी जी स्वामी शान्तिप्रकाश सेवाधाम में पहुंचे यहां पर गुरुदेव की प्रतिमाओं के दर्शन कर एक घण्टे का अल्पप्रवास किया, तत्पश्चात् पूज्य स्वामी जी मण्डली सहित बांके बिहारी मन्दिर दर्शन करने हेतु गये जहां पर सबने भगवान बांके बिहारी के दर्शन किये, दर्शन उपरांत पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज दोपहर 1.30 बजे सड़क मार्ग द्वारा जयपुर के लिये प्रस्थान कर गये व सांय 5.30 बजे सभी सन्तगण श्री अमरापुर दरबार जयपुर पहुंचे।

प्रेम प्रकाश धाम दिल्ली का
वार्षिकोत्सव
स्वामी जयप्रकाश जी महाराज का
जन्म शताब्दी समापन समारोह
12 से 17 मई 2002 तक

पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता एवं प्रेम प्रकाश मण्डल के सर्व सन्तमण्डल की उपस्थिति में सम्पन्न होगा।

कार्यक्रम

12 से 17 मई तक प्रतिदिन सांय 4 से 9 बजे तक सत्संग
12 मई को सांय 4 बजे विशाल चल समारोह
13 मई को प्रातः हवन, ध्वजावन्दन।
14 मई को सांय स्वामी जयप्रकाश जन्मशताब्दी समापन समारोह
17 मई रात्रि 9 बजे महोत्सव समापन (पल्लव)

आयोजन स्थल : श्री प्रेम प्रकाश धाम, सिन्धी मंदिर टैक्सी स्टेण्ड के पास, मलिकागंज, दिल्ली
फोन : 011–3969774, 2942126

पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का पुणे, कराड़, नवसारी में दिव्य सत्संग

बड़ौदा 31–3–2002–पूज्य स्वामी श्री अशोक प्रकाश जी महाराज विगत माह अपनी संत मण्डली के साथ महाराष्ट्र एवं गुजरात के विभिन्न नगरों में प्रभु प्रेम का प्रचार प्रसार कर अनेक प्रेमियों को सत्संग–दर्शन का लाभ प्रदान किया, प्रस्तुत है संक्षिप्त विवरणः–

पूज्य स्वामी जी का पुणे में आगमन

पूज्य स्वामी चंदनप्रकाश जी महाराज के वार्षिकोत्सव के संबंध में, एवं स्वामी अनंतप्रकाश जी के हार्दिक निमंत्रण पर पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज संत मण्डली समेत जलगांव से सीधे पुणे नगर पधारे। रेल्वे स्टेशन पर पूज्य स्वामी जी की प्रेम पूर्वक अगवानी की गयी। स्टेशन से सीधे संत मण्डली प्रेम प्रकाश आश्रम अग्रवाल कॉलोनी में पधारी। जहाँ स्वामी अनंत प्रकाश जी के नेतृत्व में पूज्य स्वामी जी का आदरपूर्वक स्वागत किया गया। यहाँ पर पूज्य स्वामी चंदनप्रकाश जी के वार्षिकोत्सव के संबंध में पूज्य स्वामी जी के सानिध्य में तीन दिवसीय सत्संग ज्ञान यज्ञ का आयोजन भी रखा गया। अपने सत्संग प्रवचनों में पूज्य स्वामी जी ने प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के निम्न पद से प्रवचन प्रारम्भ किया।

भजनः करि मन देर न हरि सुमिरण में।
मौत मथे ते बीठो आहे वक्त विञाइ न कमनि में।

1. भोग दुनियां जा झूठा आहिनि–नेभहु कहिंसा हरगिज नाहिनि। अचनि वञनि छिन छिन में।
2. अनभै अखिड़ियूं दिसु तूं खोले–आतम लाल खे लहु तूं गोले। दीद लगाइ दमनि में।
3. **कहे टेऊँ गुर शब्दु कमाये–अर्न्तमुखु थी झाती पांये। भिनलु रहिजि भजन में।**

इस प्रकार अपनी ओजस्वी व गगनभेदी वाणी में पूज्य स्वामी जी संसार की असारता का बड़े मार्मिक ढंग से वर्णन किया। पूज्य स्वामी जी की वाणी का श्रवण कर समस्त प्रेमियो ने अपने को कृतार्थ किया। लगातार तीन दिन तक, स्वामी जी के अलावा, स्वामी अनंत प्रकाश जी, सन्त राजूराम जी, संत चरणदास, पूज्य स्वामी देवप्रकाश जी महाराज व अन्य सन्तों ने ज्ञान–भक्ति व अन्य विषयों पर विशद रूप से प्रवचन दिये। इस अवसर पर प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों का भी परायण कर भोग साहेब डाला गया। पुनः भंडारे का भी आयोजन किया गया जिसमें सभी सन्तों व सदगृहस्थों ने भण्डारे में प्रेम पूर्वक प्रसाद ग्रहण किया। अपनी तीन दिवसीय पुणे यात्रा को विराम देकर पूज्य स्वामी जी कराड़ नगर के लिये प्रस्थान किया।

कराड़ में सत्संग वर्खा

पुणे की यात्रा को विराम देकर, स्वामी जी कराड़ नगर पधारे। यहाँ पहुंचने पर नगर के समस्त प्रेमियों द्वारा संतमण्डल का भव्य स्वागत किया गया। स्वांगतोपरांत, स्वामी जी सीधे सत्संग स्थल पर पधारे। यहां पर भी पूज्य स्वामी जी के पावन सानिध्य में दिव्य सत्संग समारोह का आयोजन रखा गया। सर्वप्रथम संत चरणदास व दीपक कुमार ने भजन प्रस्तुत किये तत्पश्चात सन्त राजूराम जी ने सत्संग प्रवचन कर आनंद कराया और अंत में पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज ने प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के निम्नपद से अपना उद्‌बोधन प्रारम्भ किया।

भजनः साध संगत में आना आना।
आयके हरिगुण गाना मैं वारी जावां।। टेक।।

1. **साध संगत में आने वाले–बन जाते है भागां वाले। अपने भाग बनाना, मैं वारी जावां।**
2. **साध संगत में मोती हीरे–मिलते हैं पर धीरे धीरे। मन में धीरज लाना, मैं वारी जावां।**
3. **साध संगत में जे नित आते–मनांछित फल सेई पाते। नेमी नेम निभाना, मैं वारी जावां**
4. **साध संगत अमृत वर्षे, कहे टेऊं पी गुरुमुख हर्षे। पीकर शोक हटाना, मैं वारी जावां**

इस प्रकार पूज्य महाराज श्री ने साध–संगत व सत्संग के विभिन्न पहलुओं पर अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा प्रकाश डाला। स्वामी जी ने बताया कि हमारे सत्गुरु महाराज ने इस कलियुग में दो साधनों पर विशेष बल दिया है वो कौन से हैं–

कलियुग में प्रधान है–सेवा पुनि सत्संग
कहे टेऊँ जिसके किये–होवे भव दुख भंग।।

एक सेवा व दूसरा सत्संग इन दोनों साधनों को करने से जीव की मुक्ति का और कोई सरल तरीका नहीं। विशेष कर इस कलियुग में। अतः हमें कैसे भी प्रयत्न करके भी नित्य कोई न कोई सेवा व सत्संग का कार्य करना चाहिये, इससे हमें भी आनंद आयेगा, लोक भी प्रसन्न रहेंगे और तीसरा भगवान भी राज़ी रहेंगे।

कराड़ के सत्संग की विशेषता यह थी कि यहाँ सत्संग का लाभ लेने के लिये मुस्लिम बन्धू भी आये हुये थे उन्होंने भी सत्संग श्रवण कर अपने को कृतार्थ किया। कराड़ सत्संग को विराम देकर स्वामी जी ने बम्बई के लिये प्रस्थान किया। बम्बई पहुंचकर यहां से पुनः बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया। बड़ौदा आश्रम पर कुछ दिन सत्संग वर्खा कर पुनः सन्त मण्डली के साथ गोधरा सूरत एवं नवसारी की यात्रा के लिये रवाना हुये।

स्वामी जी गोधरा में

पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डल के साथ अपने संक्षेप प्रवास पर गोधरा पधारे। यहाँ पर एक विशेष कार्य हेतु पूज्य स्वामी जी का आगमन हुआ। अपने संक्षेप प्रवास के दौरान, सभी प्रेमियों को आशीर्वाद व दर्शन का लाभ प्रदान कर सीधे नवसारी के लिये गमन किया।

नवसारी में सत्संग दर्शन

सांई वसणशाह सेवा समिति के सविनंय निवेदन पर पूज्य स्वामी जी सन्तमण्डल के साथ दो दिवसीय यात्रा पर नवसारी पधारे। सन्तों के आगमन का समाचार पाकर सारे प्रेमी सांई वसणशाह दरबार में पहुंचने लगे। यहां पर पूज्य सन्तों के स्वागत एवं सत्संग का भव्य कार्यक्रम हुआ। अपने नवसारी यात्रा के अंतर्गत स्वामी जी ने 4 सत्संग सत्रों में प्रवचन दिये। इससे पूर्व संत राजूराम जी ने भी अपनी सरल व मीठी वाणी द्वारा सत्संग भजन का आनंद कराया। प्रथम दिन पूज्य स्वामी जी ने निम्नपद से प्रवचन प्रारम्भ करते हुये कहा–

1. जो प्रीत गुरुन सां लाये थो–सो सर्व सुखनि खे पाये थो।
गुरु अगियां अरदास करे–गुरु कारिज तिन जा रास करे।

पूज्य स्वामी जी ने गुरु महिमा एवं सन्तों के दर्शन लाभ पर सारगर्भित एवं विशद चर्चा की। स्वामी जी की अंमृतमय वाणी का रसास्वादन कर सारे प्रेमी झूमने लगे। यहां पर दो दिन तक गुरु महाराज के उपदेशों व शिक्षाओं का प्रचार प्रसार कर सभी को आशीर्वाद प्रदान कर पुनः सूरत के लिये रवाना हुये। सूरत में पूज्य स्वामी जी का संक्षेप प्रवास रहा। यहां पहुंचने पर सभी प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी का हार्दिक स्वागत किया प्रेमियों को दर्शन लाभ प्रदान कर पुनः प्रातः 4 बजे बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया। प्रातः 6 बजे पूज्य स्वामी जी व संत मण्डली का बड़ौदा आगमन हुआ। फिर कुछ दिन बड़ौदा की संगत को सतसंग का रसास्वादन कराया।

सूरत लेसूढ़ी आश्रम में सत्संग समारोह

प्रतिवंर्ष की भांति इस वर्ष भी लेसूढ़ी आश्रम का वार्षिकोत्सव पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में संपन्न होना था परन्तु किसी कारण वश स्वामी जी ने स्वयं न जाकर, संत श्री राजूराम को आज्ञा दी कि आप जाकर कार्यक्रम में सम्मिलित हों। संत राजूराम जी ने आज्ञा पाकर संत मण्डली समेत दिनांक 25 व 26 मार्च को दो दिन लेसूढ़ी आश्रम के वार्षिकोत्सव में सत्संग का आनन्द कराया। प्रेम प्रकाशी दिलीप, संत मोहनलाल व स्वामी टेऊँराम भजन मण्डली के नवयुवकों ने सत्संग व भजनों का संगत को आनन्द कराया। तत्पश्चात संत जी ने प्रेम प्रकाश ग्रन्थ से निम्न पद से प्रवचन प्रारम्भ किया–

करि तूं करितूं मन मुहिंजा हरिदमु संतनि जो सतसंगु ।।टेक।।
1. संतनि जो संगु आ सुखदाई, मन खे दिए उमंगु।
संतनि जे सत्संग मां हरिदमु चढ़े राम जो रंगु।।

इस प्रकार दो दिन तक संत दर्शन, संत संग व अन्य विषयों पर मार्मिक प्रवचन कर वार्षिकोत्सव का पल्लव पाकर दूसरे दिन रात्रि 10 बजे ट्रेन द्वारा बड़ौदा के लिये प्रस्थान किया।

आगामी कार्यक्रम

प्रेम प्रकाश आश्रम, वारशा कॉलोनी, बड़ौदा से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। संपर्क फोनः 0265–572424, 560676, मो. : 098242–55884

संक्षिप्त समाचार

खैरथल में दादा आसूराम जी का वर्सी उत्सव सम्पन्न

खैरथल (अलवर)–स्थानीय प्रेम प्रकाश आश्रम (टीले के ऊपर) डिब में आचार्य सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम गुरु पूज्यपाद दादा आसूराम जी का वर्सी उत्सव 3–4 मार्च 2002 को खैरथल आश्रम पर सन्त मुरलीधर जी के संयोजकत्व में मनाया गया। इस अवसर पर श्री अमरापुर स्थान जयपुर से सन्त मोनूराम जी भी प्रेमियों सहित उत्सव में सम्मिलित हुए। 3–4 मार्च को प्रातः व सांय विशेष सत्संग सभाओं में सन्त राममुक्त, प्रेम प्रकाशी तीर्थदासजी, भगत मूलचन्द जी, सन्त मोनूराम जी, सन्त मुरलीधर जी ने दादा आसूराम जी महाराज के जीवन पर भजनों व प्रवचनों द्वारा प्रकाश डाला। 31 मार्च को सांय 5 बजे से 7 बजे तक शोभायात्रा (झांकी) द्वारा सन्त मण्डल व प्रेमियों ने हरिनाम संकीर्तन करते हुए नगर परिक्रमा लगायी। 4 मार्च को पाठों के भोग व आमभण्डारे के आयोजन में हजारों नगर वासियों ने भाग लिया। सांय सत्संगोपरान्त पल्लव पाकर उत्सव का समापन हुआ।

–प्रेम प्रकाशी जयप्रकाश,
खैरथल से

महाशिवरात्रि समाचार दर्शन

''पुण्य धरा धाम पर'' बम–बम भोले'' की गूंज अमरापुर स्थान में गूंजा जय भोले भण्डारी।

पावन धरा धाम श्री अमरापुर रथान जयपुर में 12 मार्च मंगलवार को महाशिवरात्रि का पावन दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया। प्रातःकाल की पावन वेला में श्रद्धालु, प्रेमी श्री गुरुदरबार में आने लगे। चारों और सौम्य, मनमोहक भक्तिमय वातावरण सभी को बरबस अपनी और आकर्षित कर रहा था। आज श्री दरबार अनोखी छटा बिखेर रहा था।

प्रातःकालीन सौम्य व मधुर वातावरण में प्रार्थना के स्वर श्री दरबार में गुंजायमान होने लगे। तत्पश्चात पुजारी प्रतापराय व सन्त हीरानन्द जी द्वारा ''बम–बम भोले'' की महिमा का गुणगान किया गया प्रातः 7:45 से 8:15 तक ''सन्त श्री मोनूराम जी'' द्वारा ''शिवगाथा'' के अमृत वचनों का पान कराया गया।

8:30 बजे से पूज्य श्री सर्वानन्द जी महाराज की अमरकथा नामक कैसेट चलाई गयी। जिसमें भगवान शंकर ने पार्वती जी को अमरकथा सुनाई थी। इसके पश्चात सभी प्रेमीगण श्री दरबार के परिसर में बने हवनकुण्ड पर एकत्रित हुये। जहाँ लगभग एक घण्टे तक सन्तों द्वारा मंत्रो का उच्चारण करके यज्ञ में आहूति डाली गयी। अन्तिम आहूति के पश्चात सन्त व श्रद्धालुगण श्री दरबार में बने अमरापुरेश्वर महादेव मन्दिर पर एकत्रित हुये। जहाँ पहले से मनमोहक सजावट की गयी थी। विशाल काष्ठ की प्रतिमा जिसमें शिवलिंग के अन्दर आचार्य स्वामी टेऊँराम जी की मूर्ति बनाई गयी थी। नीचे कपास व थर्माकोल के द्वारा शिवलिंग बनाया गया। सन्तों द्वारा ध्वजागीत गाते हुए झण्डारोहण किया गया तत्पश्चात् आरती–पूजा अर्चना व पल्लव पाकर उत्सव को संपन्न किया गया। हरि ऊँ नमः शिवाय'' संकीर्तन, ''शिवपञ्चाक्षर'' की अमरधुनि लगायी गयी। लगभग जयपुर के सभी प्रेमीगण इस महान दिवस के दिन श्री दरबार में आए। 11 बजे से आम भण्डारा शुरू हुआ। जिसमें हजारों की संख्या में प्रेमियों ने प्रसाद ग्रहण किया।

–गुड़िया,
मालवीय नगर, जयपुर

होली महोत्सव

पलवल–23 मार्च 2002 प्रेम प्रकाश धाम–मलिकागंज दिल्ली के महन्त पूज्य स्वामी जयदेव जी महाराज के पावन सानिध्य में इस वर्ष पलवल में होली महोत्सव बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर आयोजित विशेष सत्संग सभा में स्वामी जयदेव जी महाराज ने बताया कि होली पर्व बहुत ही प्राचीनकाल से मनाया जा रहा है।

भजनः आज बृज में होली रे रसिया।

जब ये भजन सुनाया तो सारी संगत उठकर नाचने लगी और स्वामी जयदेव जी को रंग बिरंगे रंगों से पूरा ढक दिया गया ऊपर से फूलों की बर्खा की गयी और अन्त में पूज्य स्वामी जयदेव जी ने सब प्रेमियों को आशीर्वाद देकर और पल्लव पाकर गुरु महाराज जी से सबकी शुभकामनाओं के लिये आशीर्वाद मांगा।

तत्पश्चात भण्डारे का आयोजन रखा गया और पूज्य स्वामी जयदेव जी ने भण्डारे का प्रसाद ग्रहण कर पुनः दिल्ली के लिये प्रस्थान किया।

दिल्ली में होली पर्व

दिनांक 24–3–2002 को स्वामी जयदेव जी के सानिध्य में सत्संग का आयोजन रखा गया। इसमें पहले भक्त संतराम, श्री मुरलीधर राजाणी श्री केवलराम एवं महिलाओं ने अत्यधिक मधुर आवाज में होली के गीत गाकर इस सत्संग समारोह में चार चांद लगा दिये। प्रेम प्रकाश आश्रम मल्कागंज दिल्ली पूरा बरसाने की तरह लग रहा था जिस प्रकार बरसाने और मथुरा में होली पर्व मनाया जाता है। उसी प्रकार सारा आश्रम खुशियों से झूम उठा। अन्त में स्वामी जयदेव महाराज जी ने सत्संग कर और पल्लव पाकर सत्संग की समाप्ति की।

तत्पश्चात भण्डारे का आयोजन रखा गया। इसमें बड़ी संख्या में प्रेमियों ने प्रसाद ग्रहण किया।

–लालचंद प्रेम प्रकाशी

दिल्ली से

टौंक में प्रेम प्रकाश महिला मंडली गठित

टौंक में प्रेम प्रकाश मंडली द्वारा हर महीने के अन्तिम शनिवार को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक भजन संध्या का आयोजन किया जाता है जिसमे सत्‌गुरु टेऊँराम चालीसा, गुरु प्रार्थनाष्टक, सोलह शिक्षाओं का पाठ एवं सतनाम साक्षी का संकीर्तन किया जाता है। ये भजन संध्या प्रेम प्रकाशी भक्तों के घरों पर की जाती हैं जिसमें काफी संख्या में प्रेमी श्रद्धालु भाग लेते हैं। इसी के अन्तर्गत 23 फरवरी शनिवार को सत्संग प्रेम प्रकाश मंडली टोंक की और से टोंक के सिन्धी मन्दिर (स्वामी मेंघूराम साहब बेरानी वालों की दरबार) में रखा गया जिसमें कंई प्रेमियों ने भाग लेकर सत्‌गुरु महाराज जी के भजन प्रस्तुत किये। भजन संध्या का संचालन मंडली के अध्यक्ष डॉ. कैलाश बदलानी द्वारा किया गया एवं मंडली के अन्य सदस्य श्री हीरालाल जी चन्दलाई, मूलचन्द जी चेलानी, खेमचन्द जी गिदवानी, अशोक जी, दीपक प्रेम प्रकाशी, लक्ष्मण जी हीरानी, प्रकाश जी दत्तवानी, लक्ष्मण हीरोनी, कमल कुमार, प्रकाश रघुवानी, लक्ष्मणदास गिदवानी सहित कई सदस्य उपस्थित थे।

इस शुभ अवसर पर प्रेम प्रकाश मंडली टोंक के अध्यक्ष डॉ. कैलाश बदलानी ने टोंक में प्रेम प्रकाश महिला मंडली के गठन की घोषणा की जिसका उपस्थित प्रेमियों माताओं बहनों ने तालियों की गड़गड़ाहट से एवं गुरु महाराज जी के जयकारे से स्वागत किया।

प्रेम प्रकाश महिला मंडली की अध्यक्ष बहिन ईश्वरी देवी (कारे मां) को बनाया गया और उनसे अपनी महिला मंडली गठित करने को कहा गया जिस पर उन्होंने अपनी सहमति व्यक्त की और गुरु महाराज जी की सेवा करते रहना स्वीकार किया।

अन्त में सत्‌गुरु टेऊँराम चालीसा, गुरुप्रार्थनाष्टक, सोलह शिक्षाओं का पाठ व सत्‌नाम साक्षी का संकीर्तन किया गया तत्पश्चात् आरती व पल्लव पाकर भजन संध्या का समापन किया गया। इसी समय दीपक प्रेम प्रकाशी ने सत्‌गुरु महाराज जी की धुनी "मुंहिंजो स्वामी टेऊँराम आ खण्डूअ वारो" लगाई तो सभी प्रेमी माताऐं बहिनें अपने–अपने स्थान पर नृत्य करने लगीं और किसी को भी समय की सुध नहीं रही मानों भजन संध्या ने छोटे मेले का रूप ले लिया।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 60 वां वार्षिकोत्सव एवं स्वामी माधवदास जी महाराज का 18 वां वार्षिकोत्सव

दिनांक **10–6–2002** से दिनांक **17–6–2002** तक **प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्श नगर, अजमेर** में मनाया जायेगा। इस शुभ अवसर पर **प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्त महात्मा तथा अन्य सुप्रसिद्ध विद्वान पधारेंगे।**

कार्यक्रम

स्वामी माधवदास जी महाराज का वार्षिकोत्सव

सोमवार, 10–6–2002 — प्रातः 5 बजे **"प्रभात फेरी"** सांय 4 बजे से 6 बजे तक रामध्वनि व सत्सग साय 7 बजे श्री रामचरित मानस का अखण्ड पाठ प्रारम्भ।

मंगलवार, 11–6–2002 — प्रातः 7 से 1 बजे सत्संग।
रात्रि 9 बजे श्री रामचरित मानस का अखण्ड पाठ संपन्न।

बुधवार 12–6–2002 (चन्द्र दर्शन) — प्रातः 5 से 8 बजे तक सत्संग कीर्तन, 8 से 9 बजे तक हवन, श्री झूलेलाल मन्दिर उद्घाटन, 9 से 1 बजे तक सत्संग। श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ एवं श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पाठ का प्रारंभ। सांय 4 से 8 बजे सत्संग एवं **समाधि पर ज्योति प्रज्जवलन उत्सव।**

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का वार्षिकोत्सव

गुरुवार 13–6–2002 — प्रातः 5 से 12 बजे तक सत्संग कीर्तन।
सांय 5 से 7 बजे तक **जुलूस आदर्श नगर में**
सांय 7 से रात्रि 9 बजे तक **सत्संग कीर्तन।**

शुक्रवार 14–6–2002 — प्रातः 5 से 12 बजे तक सत्संग व गुरुग्रन्थ साहिब का अखण्ड पाठ प्रारंभ।
सांय 4 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग कीर्तन।

शनिवार 15–6–2002 — प्रातः 5 से 12 बजे तक सत्संग कीर्तन तथा
सांय 4 से रात्रि 9 बजे सत्संग कीर्तन।

रविवार 16–6–2002 — प्रातः 5 से 7 बजे तक **"सत्संग"** 8 से 9 बजे तक हवन।
9 से 10 बजे तक **"ध्वजा वन्दन"** 10 से 11 बजे तक बैण्ड व शहनाई वादन तथा 11 से 1 बजे तक सत्संग, संत समागम श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ, गुरु ग्रंथ साहिब के **पाठों का समापन और भण्डारा।** सांय 4 से 7 बजे तक **"सदगुरु महाराज का पूजन"** सांय 7 से रात्रि 9 बजे तक सत्संग, **पल्लव एवं उत्सव की समाप्ति।**

सोमवार 17–6–2002 — श्री प्रेम प्रकाश आश्रम **पुष्करराज** में प्रातः 8 से 1 बजे तक **सत्संग व भण्डारा।**

1 जून 2002 "स्वामी माधवदास जी महाराज का 88 वाँ जन्मोत्सव" व स्वामी माधवदास सर्किल का उद्घाटन

सभी सत्संगीं प्रेमी पधारकर सत्संग का लाभ उठावें।

सेवा में :

स्वामी मुरलीधर महाराज
प्रेम प्रकाश आश्रम (ट्रस्ट), आदर्शनगर, अजमेर
श्री पुष्कर राज एवं हरिद्वार
फोन : 0145–441850 फैक्स : 0145–440279

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के शिष्य

पूज्य स्वामी मुरलीधर जी महाराज, पूज्य स्वामी गंगाराम जी महाराज एवं पूज्य स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज का

वर्सी महोत्सव

6 मई 2002 से 10 मई 2002 तक

इन्दौर में आ देखिये
आश्रम प्रेम प्रकाश।
सन्तों का सत् शब्द सुन
करो द्वन्द दुख नाश।।

कलयुग में प्रधान है,
सेवा पुनि सत्संग।
कहे टेऊँ जिसके किये,
होवे भव दुख भंग।।

समस्त प्रेमियों को सूचित करते हुये हर्ष होता है कि सनातन धर्मी श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य योगीराज ब्रह्मनिष्ठ श्री 1008 सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के शिष्य स्वामी मुरलीधर जी महाराज, स्वामी गंगाराम जी महाराज एवं स्वामी चेतनप्रकाश जी महाराज का वार्षिक स्मृति उत्सव (वर्सी) दिनांक 22 चैत्र से 26 चैत्र सम्वत 2059 तदनुसार 6 मई सोमवार से 10 मई शुक्रवार 2002 तक प्रेम व श्रद्धा से मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर प्रेम प्रकाश मण्डल के वर्तमान अध्यक्ष श्री सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज पूज्य सन्त मण्डली सहित पधारेंगे। अन्य सन्त भक्त कवि भी अपने वचनामृतों द्वारा जीवों का कल्याण करेंगे। अतः सविनय प्रार्थना है कि समस्त भगवत प्रेमी, सद्गृहस्थ अपने परिवार तथा मित्रों सहित पधारकर अपने मानव जीवन को सफल करें।

कार्यक्रम

6 मई सोमवार 2002	प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग, हवन झण्डा वन्दन और प्रेम प्रकाश ग्रन्थ पाठ साहब का आरम्भ होगा एवं शाम 4 से 7 बजे तक सत्संग।
7 मई मंगलवार 2002	प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग एवं सांय 4 से 7 बजे तक सत्संग।
8 मई बुधवार 2002	एकादशी प्रातः 5 बजे प्रभात फेरी प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग एवं दोपहर 11 बजे सन्तों का भोजन, सांय 4 से 7 बजे तक सत्संग।
9 मई गुरुवार 2002	प्रातः 6 बजे मूर्ति पूजा पोशाक पहरान, प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग एवं दोपहर 12 बजे पूज्य (बेख मंडल) सिन्धी साधु समाज का भोजन।
10 मई शुक्रवार 2002	प्रातः 8 से 11 बजे तक सत्संग प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ साहब का भोग एवं 11बजे आम भंडारा। सांय 4 से 7 बजे तक सत्संग एवं पल्लव पाकर उत्सव का समापन।

सेवा में : **दास शम्भूलाल**
प्रेम प्रकाश आश्रम, 4, काटजू कॉलोनी, इन्दौर
फोन : 0731–468140

वाराणसी में

सतगुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का

७२ वां जन्म महोत्सव एवं

प्रेम प्रकाश मन्दिर वाराणसी (काशी) की रजत जयन्ती

22 मई से 26 मई 2002 तक

शिव नगरी वाराणसी, गंगा तट गुरुधाम।
सत्गुरु हरिदासराम का, जन्मोत्सव अभिराम।।

आश्रम प्रेम प्रकाश का, रजत जयन्ती पर्व।।
मना रहे हैं भक्तगण, आओ प्रेमी सर्व।।

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य योगीराज ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री 1008 आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश मन्दिर, वाराणसी (काशी) का रजत जयन्ती महोत्सव एवं सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 72 वाँ जन्मोत्सव दिनांक 22 मई से 26 मई 2002 तक वर्तमान श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में हर्षोल्लास से मनाया जायेगा। इस ब्रह्मयज्ञ में प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्त एवं विद्वान कविगण सत्गुरु महाराज के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालेंगे। आप सबसे निवेदन है कि इस महोत्सव में सपरिवार आकर अपने जीवन को सफल बनावें।

कार्यक्रम

दिनांक 22 मई	श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ एवं श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ साहब आरम्भ
दिनांक 22 से 26 मई	प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक सत्संग सांय 5 से 8 बजे तक सत्संग
दिनांक 26 मई	प्रातः पाठ साहब का भोग सांय 5 से 8 सत्संग
दिनांक 26 मई	सांय 5 से 8 सत्संग–सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के जन्मोत्सव के उपलक्ष में दीप प्रज्जवलन व केक काटा जाएगा। तत्पश्चात पल्लव पाकर उत्सव की समाप्ति होगी।

पता
सदगुरु टेऊँराम जी महाराज
श्री प्रेम प्रकाश मन्दिर, सिन्धु नगर, सिगरा,
वाराणसी (यू.पी.) फोन : 0542–225585

लघुकथाऐं विपत्ति ही मनूष्य की सबसे बड़ी शिक्षक है

एक बार बादशाह अकबर ने पूछा–बीरबल तुम जो कहते हो कि ईश्वर को याद करो, तो बताओ कि ईश्वर रहता कहाँ है ? उसके दर्शन कैसे हो सकते हैं ? और वह क्या करता है ? बादशाह ने एक साथ तीन प्रश्न पूछ लिये। तीनों ही प्रश्न सुनकर बीरबल चिंता में पड़ गया। बीरबल ने सात दिन का समय मांगा, बीरबल घर गये उनके पुत्र ने चिंतित देख पिता से पूछा बीरबल ने सब कह सुनाया। वह भी बुद्धिमान था उसने पिता से कहा कि इन सवालों का जवाब मैं दूंगा। बीरबल ने उसे राजा के समक्ष उपस्थित कर दिया। बीरबल ने कहा–हुजूर आपके सवालों का जवाब ये देगा। बादशाह ने हंसकर कहा ये क्या जवाब देगा पहले इसे कुछ खिलाओ पिलाओ। फिर प्रश्न पूछेंगे। उसने बालक से पूछा। क्या खाओगे बालक ने उत्तर दिया–मैं दूध पिऊंगा। तत्काल दूध मंगवाया गया। बालक ने दूध के कटोरे में इधर उधर झांका और उसमें उंगली डालकर कुछ ढूंढने लगा। बादशाह ने पूछा! यह क्या कर रहे हो ? बालक ने कहा महाराज मक्खन ढूंढ रहा हूँ मैनें सुना है दूध में मक्खन होता है। बादशाह ने हंसकर कहा बच्चे मक्खन दूध में ही है। पर दूध को बिलोकर दही और फिर मक्खन मिलता है। बालक बोला हुजूर इसी तरह ईश्वर भी कण–कण में विद्यमान है, पर उसे देखने के लिए–(**स्वामी चेतनप्रकाश जी इन्दौर के कथनानुसार : उत्तम बुद्धि के नैन हो दिपक सत्गुरु नाव। सत्य ग्रंथ दर्पण में देखो आत्मराम।**) उसे देखने के लिए मन को नियंत्रित और चित्त को शुद्ध करना पड़ता है। आपके दो प्रश्नों का उत्तर तो हो गया। बादशाह बोले ठीक है। पर ईश्वर करता क्या है ? बालक बोला–हुजूर पूछने वाले को हमेशा नीचे बैठना पड़ता है ? और उत्तर देने वाले को ऊपर। तभी ज्ञान उतरता है। बादशाह लज्जित हुए और नीचे उतर आये। बालक बोला–हुजूर बस ईश्वर यही करता है। उसकी जब मर्जी हो तब जिसे चाहे ऊपर जिसे चाहे नीचे उसके कर्मो अनुसार करता रहता है। जीव असहाय होकर न चाहकर भी उसके इशारों पर नाचता है। उस परमपिता परमात्मा को कुछ करने की जरूरत नहीं पर वह कर्म करने के बहाने हमें भी शिक्षा देता है। (**स्वामी टेऊँराम जी महाराज के कहे अनुसार। पुरुषार्थ पुनि प्रार्थना दोनों साधन सार कहे टेऊँ इनके किए भव निधि उतरहिं पार।**) जब सब छोड जाते हैं,, सभी आशाऐं समाप्त हो जाती हैं, तब वह असहाय की सहायता करता है। वह सृष्टि का नियामक है, यही उसका काम है।

–राजू के. ठाकुरेल
इन्दौर

सच्चा मित्र

धर्मराज युधिष्ठिर ने पितामह भीष्म से पूछा "पितामह! जिस की मृत्यु निकट आने वाली हो, उस का परम हितैषी मित्र कौन है ? क्या यश उस का मित्र है ? क्या विद्या उसकी मित्र है ? धन–दौलत उसके मित्र हैं ? अथवा कुटुंबी उसके मित्र हैं ?"

भीष्म पितामहः "नहीं राजन्! जिसकी मृत्यु निकट हो उसके लिए दान ही उस का परम हितैषी मित्र है। कलियुग में वह जितना दान–पुण्य करेगा उतना ही उसका भविष्य उज्जवल होगा।"

युधिष्ठिरः "महाराज! धनवान तो दान कर लेगा, अपनी धन–संपदा और बुद्धि का परोपकार में सदुपयोग करके बुद्धियोग पायेगा लेकिन निर्धन क्या करे ?"

भीष्म पितामहः "निर्धन धनवान को देख कर ईर्ष्या न करे, निर्धन धनवान की सुख–सुविधाऐं देखकर अपनी लालच न बढ़ाये बल्कि निर्धन अपनी वासना मिटाये और भगवान से प्रेम करे। धनवान अपनी वस्तुओं का भगवान के नाते सदुपयोग करे तो भगवत्प्रेम को प्राप्त होगा। निर्धन हो चाहे धनवान हो, पठित हो चाहे अनपढ़ हो, अपनी बुद्धि को योग में सब लगा सकते हैं अर्थात् भगवानसे एकाकार कर सकते हैं और यही मनुष्य जीवन का फल है।"

श्रद्धा के साथ श्रम भी चाहिए

एक ग्रामीण बैलगाडी लिये कहीं जा रहा था। एक नाले के कीचड़ में उसकी गाड़ी के पहिये धंस गये। ग्रामीण बैलगाड़ी से उतर पड़ा और पास की भूमि पर बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करने लगा वह एक पाठ करता और फिर प्रार्थना करता–हनुमान जी! मेरी गाड़ी कीचड से निकाल दीजिए। फिर पाठ करता और फिर प्रार्थना करता। ग्रामीण की श्रद्धा सच्ची थी। उसका पाठ–प्रार्थना का क्रम पर्याप्त समय तक चलता रहा। अन्त में हनुमान जी ने दर्शन दिया उसे, वे बोले–भले आदमी। देवता आलसी और निरूद्योगी की सहायता नही किया करते। मैं इस प्रकार लोगों के छकड़े निकाला करूं तो संसार के लोग उद्योगहीन हो जायें। दैवी सहायता पाने के लिए श्रद्धा के साथ श्रम भी चाहिए, तू बैलों को ललकार और कीचड़ में उतर कर पूरी शक्ति से पहियों को ठेल। तब मेरा बल तुझ में प्रवेश करके तेरी सहायता करेगा।

–इन्द्रचन्द लाला
प्रेम प्रकाशी, जयपुर

प्रतियोगिता

श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा आयोजित
सभी शहरों के भक्तजनों के लिये प्रतियोगिता

सद्‌गुरु टेऊँराम जीवन दर्शन निबन्ध प्रतियोगिता

सभी शहरों के भक्तजनों के लिये "सद्‌गुरु टेऊँराम जीवन दर्शन निबन्ध प्रतियोगिता" आयोजित की जा रही है। इस प्रतियोगिता में आपको पूज्य आचार्य श्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज" का जीवन चरितामृत (सम्पूर्ण चारों भाग) पढ़कर उसे संक्षिप्त रूप से उत्कर्ष भाषा शैली व सुन्दर लिखावट में 25 जून 2002 तक श्री अमरापुर स्थान जयपुर में पूर्ण पते के साथ डाक द्वारा भेजना है।

प्रतियोगिता परिणाम "आचार्य श्री" के पावन जन्मोत्सव पर 15 जुलाई को श्री अमरापुर स्थान जयपुर में घोषित किया जायेगा, एवम् जुलाई के प्रेम प्रकाश संदेश के अंक में विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।

नियम

1. इस प्रतियोगिता में किसी भी शहर, जातिवर्ग अथवा आयुवर्ग के भक्तजन भाग ले सकते हैं।
2. निबन्ध में कम से कम 1000 शब्दों का होना अनिवार्य है।
3. भाषा शैली व लिखावट का विशेष ध्यान दें।
4. सभी निबन्ध हमें 15 जून 2002 से पूर्व तक श्री अमरापुर स्थान जयपुर में भिजवा देवें।
5. प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय–तृतीय व 101 सांत्वना पुरस्कार दिये जायें।

नोट : आचार्य श्री का जीवन चरितामृत (संपूर्ण चारों भाग) श्री अमरापुर स्थान जयपुर के अतिरिक्त सभी आश्रमो पर उपलब्ध हैं।

श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर
प्रेम प्रकाश आश्रम, स्वामी टेऊँराम चौक, वारशा, बड़ौदा
प्रेम प्रकाश आश्रम, काटजू कॉलोनी, इन्दौर।
प्रेम प्रकाश आश्रम श्रीपुरा, कोटा।
प्रेम प्रकाश धाम, मल्कागंज, दिल्ली।
प्रेम प्रकाश आश्रम, उल्हासनगर–5

निबन्ध भेजने का पता

सद्‌गुरु टेऊँराम जीवन दर्शन, निबन्ध प्रतियोगिता
श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड, जयपुर–1 (राज.)

भजन (कीर्तन)

सानूं चढी है मिलण दी चाह, चलो गुरु कोल चलिये,
दसी गुरु ने है सानूं सच्ची राह, चलो गुरु कोल चलिये।

1. भक्तां दे कष्टा नूं, गुरु आप हरदे, गुरु आप हरदे,
कंडा लगे दुःख दा जे, अखां नीर भर दे, अखां नीर भर दे।
दे दे भक्तां ते जान लुटा, चलो गुरु पास चलिये,
सानूं चढ़ी है मिलण दी चाह.....................

2. होवे जे उदास भक्त, चैन नहीं पावंदे, चैन नहीं पावंदे,
करे जे पुकार भक्त, दौड़े दौड़े आवंदे, दौड़े दौड़े आवंदे।
लैंदे भक्तां नूं आप रिझा, चलो गुरु पास चलिये।
सानूं चढ़ी है मिलण दी चाह, चलो गुरु

3. नर तन पाके वी जो, भुले राह रब दी, भुले राह रब दी,
जो दगा करे मितरां नाल, गल नहीं फबदी, गल नहीं फबदी,
गुरु प्रेम दी देंदा है, दवा, चलो गुरु कोल चलिये,
सानूं चढ़ी है मिलण दीं चाह, चलो गुरु.......

4. गुगलानी तूं बी कर सेवा गुरु, शाम दी, सेवा गुरु, शाम दी।
भक्ति दी राह चल कृपा टेऊँराम दी, कृपा टेऊँराम दी।
गुरु करदे ने कृपा अथाह, चलो गुरु पस चलिये।
सानू चढ़ी है मिलण दी चाह, चलो गुरु पास चलिये
दसी गुरु ने है सानूं सच्ची राह, चलो गुरु कोल चहिये।

–मास्टर सुभाष चन्द्र गुगलानी
रेवाड़ी (हरियाणा)

भजन

तर्ज: बच्चे मन के सच्चे

थलु: आयो ऊहो दीन्हु आयो, चैत्र मेले जो शुभ दीन्हु आयो।
चैत्र जो मेलो गुरनि याद में, अमरापुर में मलाहियो...आयो

1. पहिंरियो, पहिरियो चैत्र मेलो–संतनि सिन्ध में लगायो हो
ठाहे, अमरापुर दरबार टेऊँराम फरमायो हो
वसंदो वघन्दो हीउ मेलो, हर साल लगदो मचन्दो ईहो–2
वचन कढियो टेऊँराम ईहो, वरदान देई वरसायो....आयो
2. हर साल वांगुर जयपुर में, अमरापुर स्थान ते
चैत्र जो मेलो मलाहिनि था, संत अची निशान ते
प्रार्थना अें प्यार सां वठनि घुरनि आसिस सां 2
संत सभेई मिली करे आहे, धर्म जो झंडो झुलायो.....आयो
3. प्रेम प्रकाशी मंडल जा धर्म संस्थापक संत अचनि
नाम जपाअे हर जीव खे, आत्म कल्याण जो बोध दियनि
गुरनि जो आदेश आ, संतनि जो उपदेश आ
सतनाम साक्षी जपियो जपायो, मंगल सभ जो चाहियो..आयो
4. अमरापुर स्थान खे, गुलनि फुलनि सां सजायो आ
पहिन्जे गुरनि भगवान जे मुरितियुन खे सिन्गारियो आ
सुवर्ग सचो अजु आहे हिते, सतनाम साक्षी धुनी लगे 2
लक्ष्मी नारायण अमरापुर में वैकुण्ठधाम बणायो.....आयो
5. सेवादारी सेवा लाय, अमरापुर में आया हिनि
पाये बुहारियूं जुतियूं सफा कनि, खुशीअं सां फर्श साफ कनि
लगर हितिड़े लगायो आ, बुखियो न कंहि खे मोटायो आ2
प्रेम प्यार सां सेवा दारनि सेवा जो मान वधायो....आयो
6. अमरापुर दरबार, श्रीचन्द, हिन्द सिन्ध प्रेमयुनि हाक बुधी
संत वैरागी अुदासी जन, संत समागम साख वधी
टेऊँराम जो हुयो लगो, राम नाम जो छण्डो हयो 2
जंहि बि लगो ईहो छण्डो ईहो जीवन में, ब्रह्म संबंध जुड़ायो..आयो

गीत : तुम दिल की धड़कन में (धड़कन)

तर्ज : स्वामी टेऊँराम......प्यारो हो 2
मेरे जीवन का सहारा हो
आ जाओ 2 मेरे मन में समा जाओ

1. देर न कर दुनिया का है डर
माया मुझे फंसायेगी।
प्रीत जो तुमसे पानी है
प्रीत वो मुझे सताऐगी।
तुम हो मेरे हितकारी
तुम हो मेरे मंगलकारी
आ जाओ 2 मेरे मन में समा जाओ

2. जूठी है दुनियादारी
जूठे हैं सभ संसारी।
एक प्रीत तेरी सारी
तेरा बनूं मैं आभारी।

3. तुम हो आज के अवतारी
तेरी महिमा है न्यारी
आ जाओ 2 मेरे मन में समा जाओ

3. अब ना जगत मुझे भाये
तुम ही बस मुझे भाये।
काल के हैं ऊपर साये
गीत तुम्हारे हम गायें।
तुम हो जगत के ऊपकारी
प्रेम प्रकाशी है पुजारी
आ जाओ 2 मेरे मन में समा जाओ।

जागृति संदेश

सेवाधारियों के लिये विशेष

सन्तनि जा कणा रूक चा चणा

कितनी न अजीब सी पहेली है, पहेली छोटी पर अर्थ गहरा। इसे समझना कुछ कठिन सा महसूस होता है क्योंकि कुछ पहेलियां अजीब सी होती हैं जिनका अर्थ गूढ़ होता है जिसे समझने के लिये बहुत प्रयत्न करना पडता है। जिस प्रकार किसी भी विषय वस्तु का ज्ञान करने के लिये उसकी गहराईयों में घुसना पड़ता है तभी सफलता हासिल होती है। वैसे तो पहेली का अर्थ हम सब अपनी दृष्टि से निकाल लेते हैं परन्तु सही मायने में उसका अर्थ कुछ अलग होता है उसे समझने का प्रयास करना चाहिए। जैसा कि ''सन्तन जा कणा रूक जा चणा'' इसका अर्थ कितना न ज्ञानवर्धक, समझने योग्य विचारणीय है।

सन्तनि जा कणा–सन्तों के यहां का भोजन। रूक जा चणा–लोहे के चने। अर्थात् सन्तों का भोजन लोहे के चने चबाना। फिर तो सन्तों का भोजन (प्रसाद) कोई खायेगा ही नहीं, अर्थात् प्रसाद ग्रहण करना किन्तु सत्यनारायण कथानुसार प्रसाद ग्रहण न करने पर अनिष्ट हो जाता है एवं प्रसाद ग्रहण करना भी जरूरी सिद्ध होगा। इस पहेली का अर्थ रहस्यमय हो गया, इस पहेली का अर्थ आप और हम अच्छी तरह स्पष्ट नहीं कर सकते हैं। अर्थात् इस पहेली का अर्थ परम पूज्य सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज मेले से पूर्व सभी सेवाधारियों को अच्छी तरह समझाकर इसका अर्थ बतलाते थे। भण्डारे में किसी भी वस्तु का सौंपा गया कार्य, उसे अच्छी तरह से चलायें, न कि अपने परिजनों के लिये निकालकर अथवा छुपाकर रखें। अन्य लोगों को भण्डारे भोजन (प्रसाद) न देकर अपने लोगों को देना इसे कहते हैं पद का दुरुपयोग। तभी सन्तों का भोजन लोहे के चने चबाने के समान बन जाता है। अर्थात निष्पक्ष रहते हुए पद का सदुपयोग करें। सभी को एक दृष्टि से देखकर प्रेम पूर्वक भोजन करावें किसी को भी अपना–पराया न समझें, सबमें समदृष्टि रखें, जिसको जो काम सौंपा गया हो, उसे अपना कर्तव्य समझकर पूरा करें। सभी मिल–जुलकर मेले में सेवा करें। जिससे आपका भी कल्याण हमारा भी कल्याण होगा ऐसी सद्गुरु महाराज से प्रार्थना करनी चाहिये कि हमें सद्बुद्धि प्रदान करें जिससे हम अपना कर्तव्य निभा सकें और अपना जीवन सफल करें।

प्रस्तुति–शंकर, अमरापुर स्थान, जयपुर

भजन

तर्जः दुश्मन न करे..........

तेरे दरस को प्यासा हूं दिन रात सुबहो शाम–2
अब तो दरस दे दो मेरे स्वामी टेऊँराम
तेरे दरस को हो.........
तेरे नाम के सिवा, दिल में कोई नाम नहीं है हा....2
नाम नहीं है
सिर्फ तेरे, नाम का, सुमरन ही मेरा काम
अब तो दरस दे दो मेरे स्वामी टेऊँराम
तेरे दरस को हो........
नैनो में ज्योत ज्ञान की तुमने जगाई है हा.......2
तुमने जगाई है
इस ज्ञान से ही, मिलता है जीवन को इक मुकाम
अब तो दरस दे दो मेरे स्वामी टेऊँराम
तेरे दरस को हो ....
तेरे चरण कमलों में बीते सातों जन्म मेरे हो....2
सातों जन्म मेरे
हो जाएं सभी हो जाएं सभी जन्मों के पूरे मेरे अरमान
अब तो दरस दे दो मेरे स्वामी टेऊँराम
तेरे दरस का प्यासा हूँ दिन रात सुबुहो शाम
अब तो दरस दे दो मेरे स्वामी टेऊँराम।

–दीपक मनवानी, जयपुर

पद स्मरण प्रतियोगिता
(ब्रह्मदर्शनी)

इस प्रतियोगिता का परिणाम व पुरुस्कृत प्रतियोगियों के नाम जून के प्रेम प्रकाश संदेश अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

सभी भाग्यशाली विजेताओं को पुरस्कार चैत्र मेले के अन्तर्गत 28 अप्रैल रविवार सांय 7 बजे दिये जायेंगे।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

14 अप्रेल से 02 मई	2002	जयपुर	☎	0141-372424-372423
03 मई से 04 मई	2002 तक	मंदसौर	☎	07422-45431, 53122
05 मई	2002 तक	देवास	☎	
06 मई से 10 मई	2002 तक	इन्दौर	☎	0731-468140
11 मई	2002 तक	रतलाम	☎	07412-40229
12 मई से 17 मई	2002 तक	दिल्ली	☎	011-3969774, 2942126
19 मई से 21 मई	2002 तक	इलाहाबाद	☎	0532-655214
22 मई से 26 मई	2002 तक	बनारस	☎	0542-225585
27 मई से 28 मई	2002 तक	फैजाबाद	☎	05278-46159
29 मई से 30 मई	2002 तक	लखनऊ	☎	
31 मई से 02 जून	2002 तक	कानपुर	☎	0512-215747
05 जून से 10 जून	2002 तक	मद्रास	☎	044-8413664, 6412703
12 जून	2002 तक	जयपुर	☎	372424, 372423
13 जून से 16 जून	2002 तक	अजमेर	☎	0145-441850, 440279
17 जून से 19 जून	2002 तक	जयपुर	☎	372424, 372423
20 जून से 23 जून	2002 तक	खैरथल		01460-22737

तीज-त्यौहार

26	अप्रैल	2002	शुक्रवार	चैत्रमेला शुरू (जयपुर मे)
27	अप्रैल	2002	शनिवार	श्री हनुमान जयन्ती, श्री सत्यनारायण व्रत
30	अप्रैल	2002	मंगलवार	श्री गणेश चौथ व्रत, चैत्र मेला समापन
07	मई	2002	मंगलवार	श्री वरूथिनी एकादशी व्रत
12	मई	2002	रविवार	अमावस्या
13	मई	2002	सोमवार	चन्द्रदर्शन
15	मई	2002	बुधवार	अक्षय तृतीया (अखण ट्रीज)
17	मई	2002	शुक्रवार	चौथ, सद्‌गुरु टेऊँराम जन्मदिन (मासिक)
23	मई	2002	गुरुवार	श्री मोहिनी एकादशी
26	मई	2002	रविवार	श्री सत्यनारायण व्रत
29	मई	2002	बुधवार	श्री गणेशचौथ व्रत
06	जून	2002	गुरुवार	श्री अपरा एकादशी
10	जून	2002	सोमवार	अमावस्या, स्वामी माधवदास वर्सी (अजमेर)
12	जून	2002	बुधवार	चन्द्रदर्शन, आचार्य सदगुरु टेऊंराम वर्सी सभी स्थानों पर शुरु
15	जून	2002	शनिवार	संक्रान्ति
16	जून	2002	रविवार	चौथ सद्‌गुरु टेऊँराम जन्मदिन (मासिक), आचार्य सद्‌गुरु टेऊँराम पुण्यतिथि (वर्सी समापन दिवस)
20	जून	2002	गुरुवार	श्री गंगा दशहरा
21	जून	2002	शुक्रवार	श्री निर्जला एकादशी व्रत
24	जून	2002	सोमवार	श्री सत्यनारायण व्रत


जलगाँव
सिवनी
10 वां वार्षिक महोत्सव के उपलक्ष में
भाटापारा
सीकर
भन्डारा
नागपुर
बरगढ़
उल्लासनगर
राजनांदगाँव
उल्लासनगर
बुरहानपुर
प्रेम प्रकाश मंडल

श्री प्रेम प्रकाश मंडल द्वारा रिलीज कैसेट्स



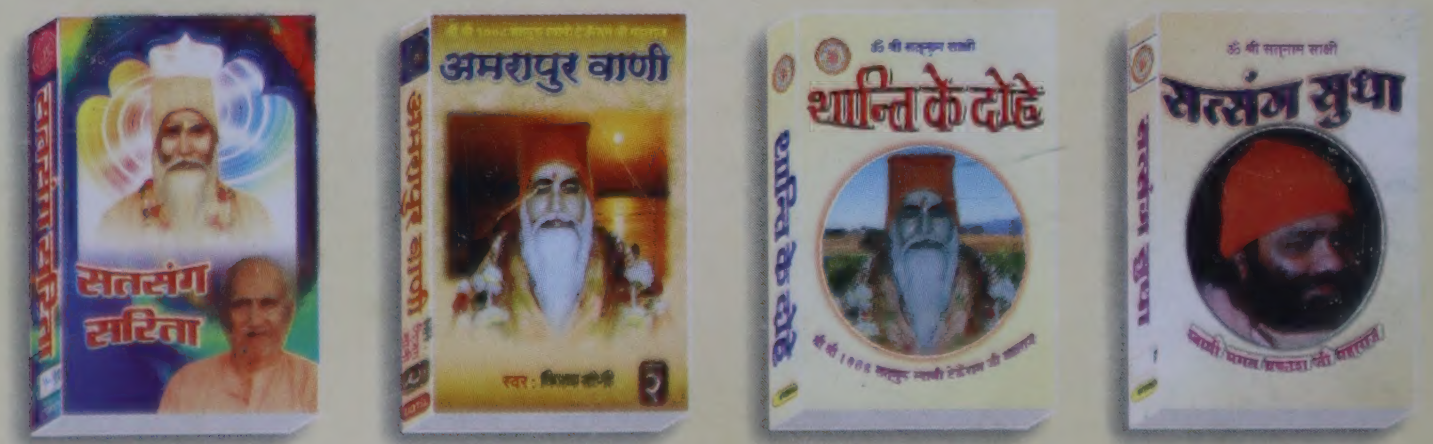
Rs. 20/- | Rs. 20/- | Rs. 20/- | Rs. 100/- (5 Cassettes)



Rs. 50/-(2 Cassettes) | Rs. 20/- | Rs. 20/- | Rs. 20/-



Rs. 20/- | Rs. 20/- | Rs. 20/- | Rs. 20/-



Rs. 20/- | Rs. 50/- (3Cassettes) | Rs. 20/- | Rs. 20/-

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक, रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहिले ही, अपनी सदस्यता का नवीनकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए

व्यवस्थापक

RH_4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,

सम्पादक : शंकरलाल सवनानी (फोन-327427) श्रीचंद पंजवानी (फोन-454183) फैक्स 481269 श्री प्रेमप्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी कम्प्यूटर्स लाला का बाजार, फोन- 427502 से सज्जा व चन्देल ऑफसेट, दौलतगंज से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया। आवरण सज्जा व मुद्रण गणपति,जयपुर फोन : 0141-207612

सदस्यता क्रमांक